नैतिक शिक्षा

(भाग-१)

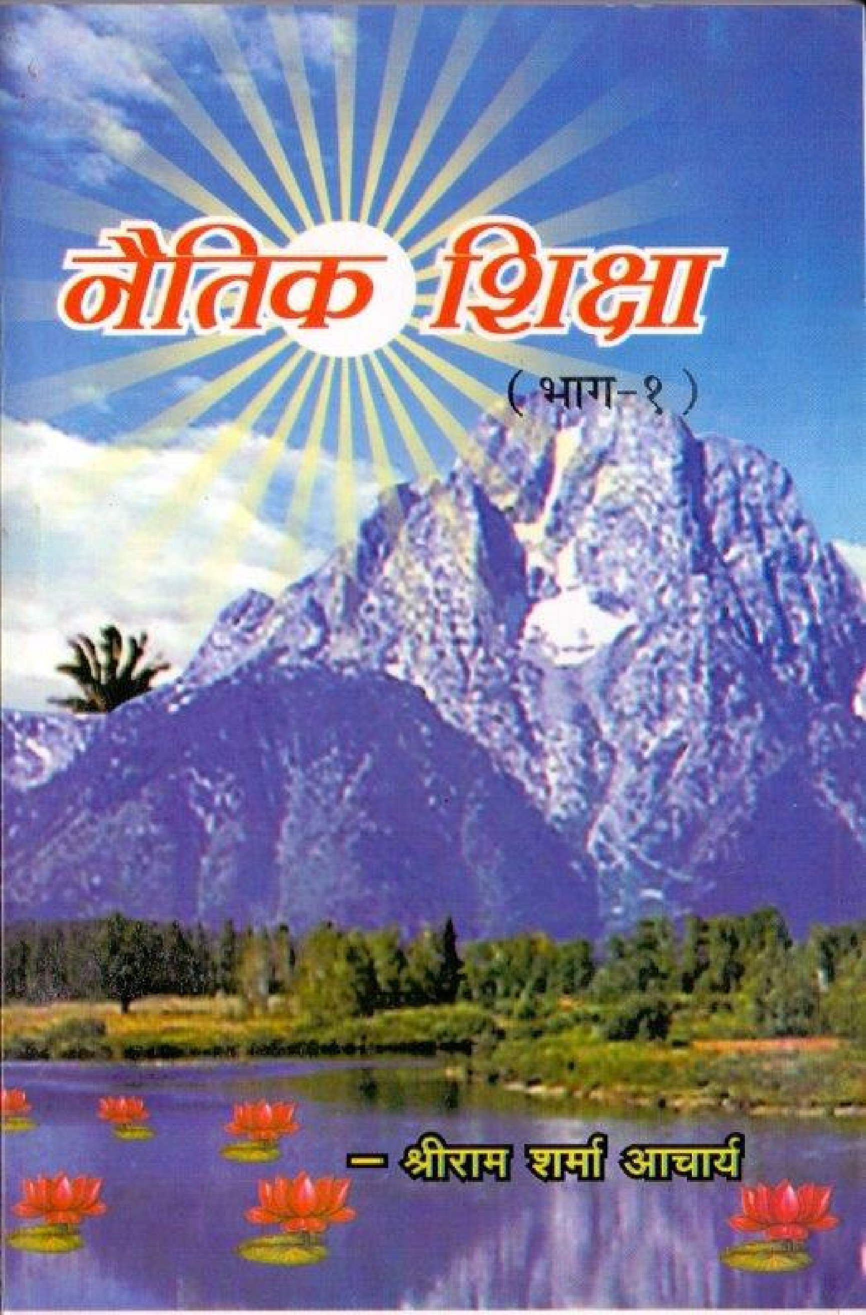

— श्रीराम शर्मा आचार्य

नैतिक शिक्षा

प्रथम भाग

लेखक
पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

प्रकाशक :
युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट
गायत्री तपोभूमि, मथुरा
फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९
मो. ०९९२७०८६२८७, ०९९२७०८६२८९
फैक्स नं०– २५३०२००

पुनरावृत्ति सन् २०११ मूल्य : ४२.०० रुपये

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संदर्भ साहित्य—पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

१.	ईश्वर कौन है ? कहाँ है ? कैसा है ?	६.००
२.	क्या धर्म क्या अधर्म ?	३.००
३.	हमारी वसीयत और विरासत	१४.००
४.	ज्ञानयोग, कर्मयोग, भक्तियोग	३.५०
५.	सफलता के सात सूत्र साधन	५.००
६.	सफल जीवन के स्वर्णिम सूत्र	४.००
७.	तुम महान हो	३.५०
८.	जिंदगी कैसे जिएं ?	४.५०
९.	जीवनलक्ष्य और उसकी प्राप्ति	३.००
१०.	घर के वातावरण में स्वर्ग का अवतरण	४.५०
११.	मूढ़ मान्यता की भूल भुलैया में अटकें नहीं	४.००
१२.	सभ्यता, सज्जनता और सुसंस्कारिता का अभिवर्धन है	४.००
१३.	बड़े आदमी नहीं महामानव बनें	५.००
१४.	नया संसार बसाएंगे नया इंसान बनाएंगे	४.००
१५.	सद्विचार ही मानवी प्रगति के प्रधान कारण	४.००
१६.	नारी उत्थान समय की सबसे बड़ी आवश्यकता	३.००
१७.	इक्कीसवीं सदी के लिए हमें क्या करना होगा ?	६.००
१८.	सार्थक एवं समग्र शिक्षा का स्वरूप	४.००
१९.	समग्र स्वास्थ्य संवर्धन कैसे	३.००
२०.	क्या खाएं ? क्यों खाएं ? कैसे खाएं ?	४.५०

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विषय-सूची

खण्ड-१
सामाजिक कर्त्तव्य और व्यवहार

१. कर्त्तव्य परायणता अपनाएँ ... ६
२. असत्य व्यवहार से बचें ... १५
३. ईमानदारी का मार्ग अपनाएँ ... २१
४. हँसती और हँसाती जिंदगी ... २७
५. समाज का हित करें ... ३३
६. सज्जनता और मधुर व्यवहार ... ३६
७. नागरिक कर्त्तव्य पालन ... ४५
८. व्यक्तिगत स्वार्थ और सामाजिक सुव्यवस्था ... ५१
९. नवयुवकों में सज्जनता और शालीनता ... ५७

खण्ड-२
उत्कृष्ट जीवन के आधार

१०. जीवन लक्ष्य समझें ... ६२
११. कामनाग्रस्त न हों प्रगतिशील बनें ... ६८
१२. स्वर्ग और मुक्ति का आनंद इसी जीवन में ... ७४
१३. स्वाध्याय की अनिवार्यता ... ८०
१४. स्वास्थ्य रक्षा ... ८६
१५. स्वच्छता ... ९४
१६. संयम से सुखी जीवन ... ९९
१७. अनुचित से सहमत न हों ... १०८
१८. औचित्य की सराहना करें ... ११४
१९. धन का अपव्यय नहीं सदुपयोग करें ... १२०
२०. फैशन परस्ती एक ओछापन ... १२७
२१. माँस का त्याग करें ... १३५
२२. तम्बाकू का दुर्व्यसन छोड़ें ... १४०

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

खण्ड-३

सफलता के सोपान

२३. भाग्यवाद हमें नपुंसक और निर्जीव बनाता है १४५
२४. बौद्धिक परावलंबन का परित्याग १५१
२५. विचार शक्ति और अपना महत्त्व समझे १५६
२६. आलस्य त्यागें और समय का सदुपयोग करें १६४
२७. अवरोध से अधीर न हों १७३
२८. आवेशग्रस्त न हों १७६
२६. छात्र अपना भविष्य निर्माण आप करें १८४

खण्ड-४

परिवार व्यवस्था और संस्कार

३०. सुविकसित परिवार के लिए सुव्यवस्था १८६
३१. संयुक्त परिवार प्रणाली श्रेयस्कर १६४
३२. दांपत्य जीवन १६६
३३. नियोजित परिवार और सुसंस्कृत संतान २०७
३४. बालकों का भविष्य निर्माण और उन्हें स्वावलंबी बनाना २१३
३५. त्यौहार और संस्कार की प्रेरणाप्रद पद्धति २१६
३६. जन्मदिवस और विवाह दिवस मनाएँ २२४

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्राक्कथन

अपना देश हजार वर्ष की गुलामी से अभी-अभी छूटा है। इस लंबी अवधि में उसे दयनीय उत्पीड़न में से गुजरना पड़ा है। यह दुर्दिन उसे अपनी हजार वर्ष से आरंभ हुई बौद्धिक भ्रांतियों, अनैतिक आकांक्षाओं और सामाजिक ढाँचे की अस्त व्यस्तताओं के कारण सहना पड़ा। अन्यथा इतने बड़े- इतने बहादुर- इतने साधन-संपन्न देश को मुट्ठी भर आक्रमणकारियों का इतने लंबे समय तक उत्पीड़न न सहना पड़ता।

सौभाग्य से राजनैतिक स्वतंत्रता मिल गई। इससे अपने भाग्य को बनाने-बिगाड़ने का अधिकार हमें मिल गया। उपलब्धि तो यह भी बड़ी है, पर काम इतने भर से चलने वाला नहीं है। जिन कारणें से हमें वे दुर्दिन देखने पड़े, वे अभी भी ज्यों के त्यों मौजूद हैं। इन्हें हटाने के लिए प्रबल प्रयत्न करने की आवश्यकता है। अन्यथा फिर कोई संकट बाहर या भीतर से खड़ा हो जाएगा और अपनी नई स्वाधीनता खतरे में पड़ जाएगी। व्यक्ति और समाज को दुर्बल करने वाली विकृतियों की ओर ध्यान देना ही पड़ेगा और जो अवांछनीय अनुपयुक्त है, उसमें बहुत कुछ ऐसा है जिसको बदले बिना काम नहीं चल सकता। साथ ही उन तत्वों का अपनी रीति-नीति में समावेश करना पड़ेगा, जो प्रगति, शांति और समृद्धि के लिए अनिवार्य रूप से आवश्यक हैं।

व्यक्ति के निर्माण और समाज के उत्थान में शिक्षा का अत्यधिक महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। प्राचीन काल की भारतीय गरिमा ऋषियों द्वारा संचालित गुरुकुल पद्धति के कारण ही ऊँची उठ सकी थी। पिछले दिनों भी जिन देशों ने अपना भला-बुरा निर्माण किया है, उसमें शिक्षा को ही प्रधान साधन बनाया है। जर्मनी, इटली का नाजीवाद, रूस और चीन का साम्यवाद, जापान का उद्योगवाद, यूगोस्लाविया, स्विटजरलैंड, क्यूबा आदि ने अपना विशेष निर्माण इसी शताब्दी में किया है। यह सब वहाँ की शिक्षा प्रणाली में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने से ही संभव हुआ। व्यक्ति का बौद्धिक और चारित्रिक निर्माण बहुत करके उपलब्ध शिक्षा प्रणाली पर निर्भर करता है। व्यक्तियों का समूह ही समाज है। जैसे व्यक्ति होंगे वैसा ही समाज बनेगा। किसी देश का उत्थान या पतन इस बात पर निर्भर करता है कि इसके नागरिक किस स्तर के हैं और यह स्तर बहुत करके वहाँ की शिक्षा-पद्धति पर निर्भर रहता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपने देश की शिक्षा पद्धति कुछ अजीब है। यहाँ नौकरी भर कर सकने में समर्थ बाबू लोग ढाले जाते हैं। हर साल निकलने वाले इन लाखों छात्रों को नौकरी कहाँ मिले। वे बेकार घूमते हैं और लंबी-चौड़ी जो महत्त्वकाँक्षाएँ सँजोकर रखी गई थीं, उनकी पूर्ति न होने पर संतुलन खो बैठते हैं और तरह-तरह के उपद्रव करते हैं। अपना शिक्षित वर्ग, अशिक्षितों की अपेक्षा देश के लिए अधिक सिर दर्द बनता जा रहा है। इसमें बहुत बड़ा दोष शिक्षा पद्धति का है, जिसमें चरित्र गठन, भावनात्मक उत्कर्ष, विवेक का तीखापन तथा आर्थिक स्वावलंबन की दृष्टि से केवल खोखलापन ही दीखता है।

सरकार का काम है कि वह राष्ट्र की आवश्यकता और परिस्थिति के अनुसार शिक्षा पद्धति में आमूल-चूल परिवर्तन करे, पर इन दिनों जो स्थिति है उसे देखते हुए निकट भविष्य में ऐसी आशा कम ही की जा सकती है, फिर क्या हाथ पर हाथ धरे बैठा रहा जाए ? और जो कुछ चल रहा है उसे ही चलते रहने दिया जाए ? ऐसा उचित न होगा। हमें जनता के स्तर पर जन-सहयोग से ऐसी शिक्षा प्रणाली विकसित करनी चाहिए जो उपयुक्त प्रयोजन को पूरा करने में कुछ महत्त्वपूर्ण योगदान कर सके। युग निर्माण योजना ने यही कदम उठाया है।

गायत्री तपोभूमि मथुरा में अवस्थित युग निर्माण योजना के अंतर्गत पिछले कई वर्ष से एक युग निर्माण विद्यालय चल रहा है। इसका प्रधान विषय जीवन जीने की कला, चरित्र गठन, मनोबल, विवेक-जागरण, समाज निर्माण जैसे तथ्यों का साँगोपाँग शिक्षण और अभ्यास कराना है। साथ ही गृह उद्योगों का एक शिक्षण भी जुड़ा रखा गया है, जिसमें कोई सुशिक्षित व्यक्ति अपने निर्वाह के उपयुक्त समुचित आजीविका उपार्जन कर सके। मजदूरों को कड़ा परिश्रम करके थोड़े पैसे कमाकर भी चलने की आदत रहती है, पर जिनका रहन-सहन सभ्य-समाज के उपयुक्त बन गया, उन प्रशिक्षितों से न तो उनका-सा कठिन शारीरिक श्रम हो पाता है और न कम पैसों में गुजर होती है। बेकारी का हल सार्वजनिक रीति से जापान ने निकाला है। वहाँ घर-घर में कुटीर-उद्योगों की विद्युत्-संचालित छोटी मशीनें लगी हैं। अब बिजली बहुत सस्ती है, उसकी उपलब्धि सुलभ हो जाती है। उसका उपयोग करके शारीरिक श्रम बचाया जा सकता है और उत्पादन भी अधिक होता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

युग निर्माण विद्यालय में ऐसे ही उद्योगों के प्रशिक्षण की व्यवस्था की गई है। बिजली की विभिन्न मशीनों की मरम्मत, रेडियो, ट्रांजिस्टरों का निर्माण, सुगंधित तेल बनाना। प्रेस व्यवसाय के अंतर्गत कंपोज, छपाई, बाइंडिंग, रबड़ के मुहरें, व्यवस्था आदि प्रशिक्षणों का क्रम बहुत दिन से चल रहा था। यह शिक्षितों को स्वावलंबन देने की दिशा में एक अति महत्त्वपूर्ण कदम है। इसके अतिरिक्त मुख्य विषय वही है, जिसके आधार पर जीवन जीने की कला, व्यक्तित्व का विकास, प्रतिभा, दूरदर्शिता, विवेकशीलता, चरित्र गठन, मनोबल, देशभक्ति, लोक मंगल के लिए उमंग आदि सद्‌गुणों को सुविकसित किया जा सकता है। जो उत्साह वर्धक परिणाम इस प्रशिक्षण से निकले उनने इस बात के लिए प्रेरणा दी, कि इस शिक्षा प्रणाली को अधिक परिष्कृत और व्यवस्थित ढंग से चलाया जाये, तथा इसे मथुरा के छोटे विद्यालय तक सीमित न रखकर देश व्यापी बनाया जाये।

विचार यह किया है कि व्यक्ति निर्माण तथा समाज निर्माण के लिए आज की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए एक प्रशिक्षण व्यवस्था की जाये जो प्रस्तुत समस्याओं का समाधान कर सकने में समर्थ हो। आज का व्यक्तित्व अगणित कुत्साओं और कुंठाओं से घिरा हुआ हेय से हेयतर स्तर तक गिरता चला जा रहा है। लोगों की शिक्षा और संपदा बढ़ रही है, पर वे व्यक्तित्व की दृष्टि से उल्टे अधः पतित होते चले जा रहे हैं। समाज में सहयोग नहीं शोषण पनप रहा है। दिन-दिन अनैतिकता, अवाँछनीयता, उच्छृंखलता, अदूरदर्शिता एवं असामाजिकता की विघटनकारी प्रवृत्तियाँ बढ़ती जा रही हैं और भीतर ही भीतर अपनी संघ शक्ति खोखली होती चली जा रही है। न इस सामाजिक स्थिति में व्यक्ति को उत्साह मिल रहा है और न व्यक्ति मिल-जुल कर समाज का स्तर उठा रहे हैं। विनाश और विघटन बढ़ रहा है और भविष्य का क्षितिज अंधकार से घिरता चला जाता है। इसको रोकने के लिए ऐसी तीव्र विचार-पद्धति का विकास आवश्यक है जो जन-मानस को झकझोर कर रख दे और विनाश की ओर बढ़ते कदमों को रोक कर उन्हें निर्माण की दिशा में अग्रसर करे।

ऐसा शिक्षण, शिक्षण-संस्थाओं में भी चलना चाहिए। सरकार को ऐसे कदम उठाने चाहिए। पर वर्तमान स्थिति में सरकार जिस दल-दल में फँसी है, उससे उबरना ही उसे कठिन पड़ रहा है। ऐसे मौलिक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सूझ-बूझ के साहस भरे कदम उठाने की फिलहाल तो उससे आशा नहीं करनी चाहिए। यह कार्य जन स्तर पर आरंभ किया जाए तो भी उसमें कुछ प्रगति हो सकती है। आरंभ यदि सही दिशा में किया जाए और उसका स्वरूप छोटा हो, तो भी अपनी उपयोगिता के कारण उसके आगे बढ़ने की बहुत संभावना रहेगी। युग निर्माण-योजना ने ऐसा ही साहस किया है।

यह विचार किया गया है कि युग निर्माण विद्यालय मथुरा का प्रयोग देश के सभी समान स्तर के विद्यालयों में लागू करने का प्रयास किया जाए। अतः यह प्रस्तावित है कि सभी माध्यमिक और उच्च माध्यमिक विद्यालय अपने नियमित पाठ्यक्रम के अतिरिक्त युग निर्माण योजना द्वारा प्रस्तुत नैतिक शिक्षा पाठ्यक्रम स्वैच्छिक आधार पर लागू करें। इसी प्रयोजन हेतु "युग निर्माण के आदर्श और सिद्धान्त "पुस्तक की सहायता से यह पुस्तक पाठ्यक्रम के रूप में तैयार की गई है। इस पुस्तक के आधार पर नैतिक शिक्षा पर वार्षिक परीक्षा आयोजित की जाएगी जिसमें माध्यमिक और उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्यनरत छात्र स्वेच्छा से बैठ सकेंगे। परीक्षा के दो पेपर होंगे और दोनों पेपर उत्तीर्ण करने पर विद्यार्थी को "नैतिक शिक्षा निष्णात" का प्रमाण पत्र दिया जाएगा। जो शिक्षा अधिकारी इस योजना को अपने क्षेत्र में लागू करना चाहते हैं वे विस्तृत जानकारी के लिये व्यवस्थापक, युग निर्माण योजना, गायत्री तपोभूमि, मथुरा से पत्र व्यवहार करें।

नैतिकता व्यक्ति के आचरण में परिलक्षित होनी चाहिए। यह तभी संभव है जब नैतिक मूल्यों की जानकारी के साथ साथ उसकी मानसिक और वैचारिक पृष्ठभूमि भी उच्च स्तर की हो। इस प्रकार के विकास में वातावरण का बहुत महत्त्व होता है। अतः नैतिक शिक्षा का पाठ्यक्रम चलाए जाने के साथ-साथ यह भी आवश्यक होगा कि विद्यालय में एक ऐसे वातावरण का निर्माण हो जो विद्यार्थी के लिये प्रेरणापद हो, और इसे उत्कृष्टता और आदर्शवादिता की तरफ आकर्षित करे।

व्यवस्थापक

गायत्री तपोभूमि, मथुरा-३

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कर्त्तव्य परायणता अपनाएँ

मनुष्य जीवन की स्थिरता एवं प्रगति की आधार शिला है, उसकी कर्त्तव्य परायणता। यदि हम अपनी जिम्मेदारियों को छोड़ दें और निर्धारित कर्त्तव्यों की उपेक्षा करें तो फिर ऐसा गतिरोध उत्पन्न हो जाए कि प्रगति एवं उपलब्धियों की बात तो दूर मनुष्य की तरह जीवनयापन कर सकना भी संभव न रहे।

उदयसिंह तब छोटे थे इसलिए उनके बड़े न होने तक के लिए बनवीर को राज्य का उत्तराधिकार सौंप दिया गया, पर उसके मन में लोभ आ गया। उसने उदयसिंह और विक्रमसिंह को मार डालने का निश्चय किया

उदयसिंह की माँ का देहांत हो चुका था। उनका पालन-पोषण पन्ना धाय ने किया था। पन्ना का अपना पुत्र भी था जो उदयसिंह के साथ ही रहता था। एक दिन बनवीर ने विक्रमसिंह की हत्या कर दी। पन्ना को इसका पता चला तो उसने उदयसिंह को वहाँ से सुरक्षित स्थान पर पहुँचा दिया। क्रोध से भरा बनवीर उसके पास पहुँचा, तो उसने अपने बच्चे को ही उदयसिंह बताकर उसका शीश कटवा दिया, पर कर्त्तव्य पर आँच नहीं आने दी।

जीवन की हर विभूति कर्त्तव्य परायणता पर निर्भर है। हर उपलब्धि की स्थिरता एवं सुरक्षा, कर्त्तव्यनिष्ठा पर ही निर्भर है। हमें बहुमूल्य शरीर मिला है। उसे निरोग, परिपुष्ट एवं दीर्घजीवी तभी बनाया जा सकता है जब शौच, स्नान, स्वच्छता, कठोर श्रम, समय का पालन, आहार की सुव्यवस्था, इन्द्रिय संयम, विश्वास आदि की जिम्मेदारियों को ठीक तरह निबाहा जाए। मन की प्रखरता एवं समर्थता इस बात पर निर्भर है कि चिंता, शोक, निराशा, भय, क्रोध, आवेश आदि से उसे बचाए रखें और उत्साह, उल्लास, धैर्य, साहस, संतोष, विश्वास, संतुलन,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्थिरता, एकाग्रता, जैसे सद्गुणों से सुसज्जित रखा जाए। यदि मन को वैसे ही जंगली घास फूस और झाड़-झकांड़ की तरह चाहे जिस दिशा में बढ़ने दिया जाएं, तो वह आप ही आप अपने लिए सबसे बड़ा शत्रु सिद्ध होगा। मन को साधने और सुसंस्कृत बनाने की जिम्मेदारी उस प्रत्येक व्यक्ति की है, जिसे मानसिक क्षमता का वरदान मिला है।

परिवार से जीवन में बहुत सुविधा और सुव्यवस्था रहती है, पर वे उपलब्धियाँ केवल उन्हीं को प्राप्त होती हैं, जो परिवार के हर सदस्य के साथ अपनी जिम्मेदारियों को पूरी तत्परता, सावधानी और ईमानदारी के साथ निबाहते हैं। स्त्री केवल सेवा के लिए नहीं मिली है। उसके विकास, सुविधा, सन्तोष एवं स्वास्थ्य की हर आवश्यकता को पूरा करना भी कर्त्तव्य है। गाय उसी को दूध देगी, जो भरपेट चारा खिलाएगा। दांपत्य जीवन का आनंद उसे मिलेगा जो अपना परिपूर्ण कर्त्तव्य पालन करते हुए उसका हृदय जीत लेगा। बच्चे उसी के सुसंस्कृत और सुविकसित होंगे, जो उन्हें प्यार, समय और सहयोग देकर विकासोन्मुख एवं सुसंस्कृत बनाने को निरंतर तत्पर रहेगा। माता-पिता एवं गुरुजनों का वात्सल्य एवं आशीर्वाद उसे मिलेगा, जो उनकी सुविधा तथा इज्जत में कमी न आने देने का शक्ति भर प्रयत्न करेगा। भाई और बहिनों का अनंत प्रेम और सहकार पाने की आशा उन्हें ही करनी चाहिए जो उनके लिए जान देता और भरपूर प्यार करता है। परिवार का आनंद केवल कर्त्तव्यपरायण ही लेते हैं। इसके विपरीत जिन्होंने सुविधाएँ पाने का अधिकार तो जाना, पर कर्त्तव्य पालन की शर्त भूल गए, उनके लिए घर और नरक में कोई अंतर नहीं रहेगा। मनोमालिन्य और कलह से घर का वातावरण विषाक्त बना रहेगा। न पत्नी जीवन संगिनी बनकर रहेगी, न बच्चे आज्ञानुवर्ती होंगे। माता-पिता का असंतोष और भाई-बहिनों का द्वेष घर को मरघट बनाए रहेंगे। परिवार स्वर्ग उनके लिए है, जो पग-पग पर अपनी जिम्मेदारियाँ निबाहने में साथियों की कमियों को सहन करने में तत्पर हों। नरक उनके लिए है, जो घर वालों से बड़ी-बड़ी आशाएँ रखते हैं, पर अपनी जिम्मदारियों की ओर से आँखे मूँद बैठे हैं।

पांडव तब अज्ञातवास में थे। एक दिन एक ब्राह्मणी के घर रुके उसे दुःखी देखकर भीम ने दुःख का कारण पूछा। ब्राह्मणी ने बताया इस नगर में एक भयंकर दैत्य रहता है। प्रति दिन नगर का एक व्यक्ति उसके आहार के लिए भेजा जाता है। आज तो मेरे पुत्र की बारी है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यह सोच कर दुःखी हो रही हूँ कि आज वह मेरे इकलौते बेटे को ही खा जाएगा।

भीम जानते थे कि दैत्य को मारने से कौरवों को पता चल जाएगा कि यह कृत्य केवल भीम का है, उसके फलस्वरूप फिर से चौदह वर्ष वन में रहना पड़ सकता है, तो भी वे डरे नहीं और न कर्त्तव्य विमुख हुए। अपने को खतरे में डालकर भी उन्होंने उस दैत्य का वध कर डाला।

धन सबको अच्छा लगता है, उसे पाना और बढ़ाना सभी चाहते हैं, पर कठोर श्रम, सतर्क जागरुकता, क्रमबद्ध सुव्यवस्था, हिसाब की स्वच्छता और मिलनसारी, ईमानदारी के गुण जिनमें हैं, उचित रीति से स्थिर संपदा वे ही कमा सकते हैं। उपार्जन, पुरुषार्थ और प्रतिभा पर निर्भर है। इन दोनों गुणों को बढ़ाते रहने की जिम्मेदारी जिसने समझी और उसके लिए सतत् प्रयत्न किया, वह संपन्नता का अधिकारी बना। जिसने मितव्ययता, बजट, हिसाब, धूर्तों से सतर्कता, सुरक्षा की सामर्थ्य, सदुपयोग की योजना बनाकर पैसा खर्च किया, वह यशस्वी हुआ और कमाने की तरह खर्च का आनंद लेने का सौभाग्य भी प्राप्त किया। धन आकाश से नहीं बरसता और न जमीन में से निकलता है। चोरी चाँडाली से जो धन आता है, वह हाथ-पाँव चलाकर बारूद की तरह 'भक्क' से उड़ जाता है। उससे किसी को न शांति मिलती है, न आनंद आता है। संपदा और संपत्ति के उपार्जन एवं उपयोग के साथ अनेक उत्तरदायित्व जुड़े हुए हैं, जो उन्हें निबाहना जानता है, उसी को सार्थक संपन्नता का लाभ मिलता है।

गैर जिम्मेदार, लापरवाह और अपने कर्त्तव्यों की उपेक्षा करने वाले अपना और संबंधित व्यक्तियों का केवल अहित ही करते हैं। कर्मचारी जो निरंतर अपनी जिम्मेदारियों की उपक्षा किया करता है, मालिक के लिए केवल घाटा ही दे सकता है और दुत्कार का भाजन ही बन सकता है। चोर और चालाक होते हुए भी तत्पर व्यक्ति लाभदायक रहता है, किंतु ईमानदार और भला व्यक्ति होते हुए भी लापरवाही और गैर जिम्मेदारी का व्यवहार करने वाला अधिक हानिकारक सिद्ध होता है। बेईमान नौकर भी मालिक की हानि करते हैं, पर गैर जिम्मेदार तो जहाँ रहेंगे वहाँ का बंटाढार करके रहेंगे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

महत्त्वपूर्ण कार्य सदा उन्हीं के द्वारा संम्पन्न होते हैं, जो कर्त्तव्य पालन को प्राणों से भी अधिक प्यार करते हैं। सैनिक का सबसे बड़ा गुण अनुशासन और अपने महान उत्तरदायित्व को शानदान ढंग से निर्वाह कर देना ही तो है। संत, ब्राह्मण पुरोहित, नेता और प्रवचनकर्त्ता अपनी जिम्मेदारियों के प्रति निष्ठावान रहें, तो मानव जाति का हित साधन कर सकते हैं।

पृथ्वीराज युद्ध क्षेत्र में मूर्छित पड़े थे। उनके समीप ही उनके प्रधान सेनापति संयमराय भी घायल अवस्था में पड़े थे। रात हो चली थी। संयमराय ने देखा कुछ भेड़िये और सियार सम्राट पृथ्वीराज की ओर लपक रहे हैं। वे सम्राट को शिकार बनाए इससे पूर्व ही संयमराय ने अपने शरीर का माँस काटकर गीदड़ों की ओर फेंका। गीदड़ उसी माँस को खाने लगे। जब तक एक टुकड़ा समाप्त होता, तब तक संयमराय शरीर काट कर दूसरा टुकड़ा फेंक देते। इस तरह उन्होंने गीदड़ों को महाराज के शरीर से तब तक दूर ही रखा, जब तक सैनिक वहाँ आकर मूर्छित पड़े महाराज को उठा नहीं ले गए। आज पृथ्वीराज अमर हैं, पर उनके नाम के साथ अपने अद्वितीय त्याग के कारण संयमराय का यश भी जुड़ा हुआ है और युगों तक जुड़ा रहेगा।

शासन तंत्र की गैर जिम्मेदारी ने इस देश को कितनी क्षति पहुँचाई है, उसका लेखा-जोखा लिया जाए तो वह अकाल, बाढ़, भूकंप एवं दैवी प्रकोप से उत्पन्न होने वाली समस्त क्षति की अपेक्षा कई गुना संकट उत्पन्न करने वाली सिद्ध होगी। लाल फीताशाही, रिश्वत, कामचोरी, बेगार भुगतने टालने की वृत्ति आदि दोषों ने शासनतंत्र को लुंज-पुंज करके रख दिया है। इस गैर जिम्मेदारी ने अराजकता से भी बढ़कर क्षति पहुँचाई है। यदि हमारे शासकीय कार्यकर्त्ता अपने-अपने कर्त्तव्यों का पूरी ईमानदारी और जिम्मेदारी से पालन करें तो देश का कायाकल्प होने में देर न लगे।

इधर सरदार चूड़ावत विवाह करके लौटा उधर औरंगजेब ने मेवाड़ पर चढ़ाई कर दी। जब सारे राजपूत युद्ध के लिए चल पड़े, तब चूड़ावत इस मोह में पड़ा था कि वह अपनी नव-विवाहिता को छोड़कर युद्ध में जाए या न जाए। हाड़ा रानी को पता चला कि मेरे आकर्षण के कारण सरदार कर्तव्यच्युत हो रहे हैं, तो उसने अपना सिर काटकर एक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सिपाही के हाथ सरदार के पास भेज दिया। सरदार ने रानी का कटा सिर देखा तो उसके शरीर में बिजली-सी कड़क उठी। सारी द्विविधा मिट गई और ऐसा घोर युद्ध किया कि मुगलों को लेने के देने पड़ गए।

समाज के सदस्य, राष्ट्र का नागरिक होना भी मानवीय उत्तरदायित्वों से लदा हुआ है। अपनी सुविधा भी उसी सीमा तक चाहें जिससे दूसरों की सुविधा में व्यवधान उत्पन्न न हो यह हर किसी की नैतिक जिम्मेदारी है। सड़कों पर केले और नारंगी के छिलके फेंक कर हम दूसरों को फिसल कर गिरने की कठिनाई उत्पन्न करते हैं। बाईं ओर रहने की अपेक्षा सारी सड़क को घेरकर चलना, सड़क और गलियों में यों ही घर का कूड़ा फेंक देना, बच्चों का नालियों पर टट्टी करना, बहुत रात गये तक लाउडस्पीकर चलाना, सार्वजनिक स्थानों को घेर कर बैठ जाना या गंदा करना, नियत समय पर वचन का पालन न करना आदि ऐसी बातें हैं, जो देखने में छोटी लगती हैं, पर इन्हीं से पारस्परिक सद्व्यवहारों में भारी क्षति पहुँचती है। सभ्य समाज का हर नागरिक अपनी जिम्मेदारी को समझता है और नैतिक सामाजिक एवं राष्ट्रीय जिम्मेदारियों के प्रति सजग रहकर अपनी और अपने देश की प्रतिष्ठा बढ़ाता है।

अपने समाज के प्रति हर व्यक्ति की जिम्मेदारी है। हम समाज के एक सदस्य हैं। समाज का वातावरण हमें अतिशय प्रभावित करता है। वैयक्तिक और सामूहिक प्रगति का द्वार तब खुलता है, जब लोग अपने शरीर और परिवार की तरह सामाजिक सुव्यवस्था और उत्कर्ष का समुचित ध्यान रखें और उसके लिए कष्ट सहने और त्याग करने को तैयार रहें। सामूहिक उत्कर्ष में जो जितनी रुचि लेता है और लोक मंगल के लिए जो जितना त्याग प्रस्तुत करता है, वह उतना ही बड़ा महामानव गिना जाता है।

आत्मा के प्रति हमारी जिम्मेदारी है, ईश्वर के प्रति भी। उन्हीं के कारण हमारा अस्तित्व है। आवश्यक है कि हम आत्मा की आवाज सुनें और परमात्मा द्वारा निर्धारित कर्त्तव्यों का पालन करते हुए मानव जीवन को सार्थक बनाने के लिए प्रयत्नशील रहें।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रश्न

१. मनुष्य जीवन की स्थिरता एवं प्रगति का आधार क्या है तथा उसको भुला देने से क्या हानियाँ हो सकती हैं ?
२. अपने ही शरीर के प्रति हमारी कर्त्तव्य परायणता को हमें किस प्रकार निबाहना चाहिए ?
३. परिवार के प्रत्येक सदस्य की क्या-क्या जिम्मेदारियाँ परिवार के प्रमुख पर होती हैं ?
४. परिवार के आनंद को कौन ले सकता है ?
५. धन का उपार्जन किन गुणों के होने पर मनुष्य कर सकता है ?
६. सार्थक संपन्नता का लाभ किस व्यक्ति को प्राप्त होता है ?
७. गैर जिम्मेदार व्यक्ति किस प्रकार हानिकारक है ?
८. शासन की गैर जिम्मेदारी ने भारत देश को किस प्रकार हानि पहुँचाई है ?
९. समाज के सदस्य किस प्रकार समाज के लिए हानि पहुँचाते हैं ?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

असत्य व्यवहार से बचें

भीतर और बाहर की एकता जिसे सत्य के नाम से पुकारा जाता है—मनुष्यता का सर्वप्रथम गुण है। हम जैसे हैं वैसा ही दूसरों के सामने अपने को प्रकट करें, जो मन में है वही वाणी से प्रकट करें। इस सच्चाई से अन्तरात्मा की निर्मलता बनी रहती है और चित्त प्रफुल्ल रहता है। इस प्रकार के शुद्ध अंतःकरण में शांति रहती है और ईश्वरीय प्रकाश की किरणों का उद्भव होता है।

हम वस्तुतः जैसे हैं उससे भिन्न प्रकार का घोषित करें तो यह लोगों के साथ धोखा करना है। हम एक दूसरे पर सहज विश्वास करें तो ही पारस्परिक सद्भावना से रह सकते हैं। समाज की सारी व्यवस्था एक दूसरे के विश्वास पर चल रही है। यह विश्वास नष्ट हो जाए तो न तो एक दूसरे पर भरोसा करेंगे और न समाज व्यवहार स्थिर रखा जा सकेगा। प्रेम, मित्रता, सहयोग, सहायता का आधार सज्जनता है। जिसे हम भला समझते हैं उसी से स्थिर संबंध बनाते हैं और उसी से कोई भरोसे का व्यवहार करते हैं। सज्जनता की परख यह है कि व्यक्ति अपनी असलियत यथावत् प्रकट करता रहता है या नहीं। भले ही किसी ने अपनी शेखी जताने के लिए, रौब जमाने के लिए, बड़प्पन दिखाने के लिए बात बढ़ा-चढ़ा कर कही हो, लोग उसके बारे में झूठा होने की मान्यता बना लेंगे और फिर कभी महत्त्वपूर्ण प्रसंग में भी उसका भरोसा न करेंगे। असलियत छिपती नहीं वह आज नहीं तो कल प्रकट होकर रहती है। झूठ में एक बड़ी कमजोरी है कि वह थोड़े समय तक प्रभावित किए रह सकता है वस्तुस्थिति देर सबेर में प्रकट होकर रहती है। तब उस असत्यभाषी को अप्रामाणिक और अविश्वस्त जान लिया जाता है। और उसकी सही बातें भी आशंका की दृष्टि से देखी और संदिग्ध मानी जाती हैं।

एक अंग्रेज युवती ने इटली में घड़ी खरीदी। इंग्लैंड आने पर मालूम हुआ कि उसे ठग लिया गया है। इस बात का उल्लेख करते हुए उसने इटली के अधिनायक मुसोलिनी को एक पत्र लिखा। मुसोलिनी ने अपने देशवासी द्वारा धोखा देही की क्षमा याचना की, क्षतिपूर्ति के पैसे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भी भेज दिए। कुछ दिन पीछे दूसरा पत्र दुकानदार ने लिखा, जिसमें लिखा था—मुझे अपने कृत्य पर बड़ी लज्जा है। मेरी दुकान सील बंद कर दी गई है। जब तक आप सिफारिश नहीं करेंगी, दुकान नहीं खुल पाएगी। युवती ने अनुभव किया कि राष्ट्रों के चरित्र इसी प्रकार सुरक्षित रखे जा सकते हैं। उसने सिफारिशी पत्र लिख दिया।

विश्वास खो बैठना संदिग्ध एवं अप्रामाणिक रहना मनुष्य का अशोभनीय पतन है। प्रतिष्ठा उसी की है जिसका विश्वास किया जाता है। जिसका विश्वास उठ गया जिसे अप्रामाणिक गिन लिया गया और जिसे दूसरों को भ्रम में डालने वाला मान लिया गया उसकी सामाजिक इज्जत चली गई ही मानी जाएगी। छल चाहे पैसा कमाने के लिए किया गया हो या भ्रम में डालकर किसी गलत निष्कर्ष पर पहुँचाने के लिए दोनों ही समान रूप से निन्दनीय हैं। ठगी निकृष्ट स्तर का अनाचार है। चोर, उठाईगीर भी आकस्मिक लाभ दाव लगाने में दूसरे की लापरवाही और अपनी चतुरता से प्राप्त करते हैं। किसी को विश्वास दिलाकर झूठे सिद्ध नहीं होते। दूसरे प्रकार के जुआरी, लुटेरे, आक्रमणकारी झगड़ालू को जो करना होता है अपना समझ और जता कर करते हैं। जो भरोसा कुछ दिलाता है और करता कुछ है, बताता कुछ है और होता कुछ है, उसे तो ऐसा कायर कहा जाएगा जिसने दूसरे की भलमनसाहत का अनुचित लाभ उठाया। यदि वह पहले ही झूठ मान बैठता या बात को संदेह की दृष्टि से देखता और भरोसा न करता तो संभवतः वह ठगी में न आता, पर उसकी सज्जनता ही कहिए कि आदमी को आदमी मानकर उसकी इन्सानियत पर भरोसा किया। इस प्रकार ठगा जाने वाला जितना नुंकसान उठाता है ठगने वाला उससे अधिक घाटे में रहता है क्योंकि ठगे जाने वाले ने पैसे की या दूसरी तरह से हानि उठाई होगी तो सहज ही कुछ दिनों में पूरी की जा सकती है, पर जिसने असत्य व्यवहार से अपना विश्वास खो दिया वह उस व्यक्ति की दृष्टि में तथा दूसरे जानकारों की दृष्टि में आजन्म अविश्वस्त रहेगा और कभी किसी की सच्ची घनिष्टता, आत्मीयता, मैत्री न प्राप्त कर सकेगा। असत्य व्यवहार से व्यक्ति की धूर्तता सिद्ध होती है और धूर्त से कोई मतलब के लिए ऊपरी मन से चापलूसी भले ही करे, पर अंतःकरण से कोई उसकी प्रामाणिकता स्वीकार न करेगा और न उसे गहरा मित्र बनाएगा। यह क्षति इतनी बड़ी है जिसकी पूर्ति आसानी से नहीं हो सकती।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

औरंगजेब ने उदयपुर के महाराज यशवंत सिंह की हत्या करा दी और इस प्रयत्न में रहने लगा कि उनके पुत्र अजीत सिंह को पकड़ कर मार दिया जाए, पर अजीतसिंह स्वामिभक्त सरदार दुर्गादास को सौंपे जा चुके थे। दुर्गादास उनकी रक्षा करते रहे और शासन सूत्र भी संभाले रहे।

औरंगजेब ने दुर्गादास को अपने पक्ष में लेने और उदयपुर का शासक बना देने का प्रलोभन दिया जिसे ठुकराते हुए दुर्गादास ने कहा—विश्वास की रक्षा ही मेरे लिए सबसे बड़ी संपत्ति और राज्य है।

दूसरों को धोखा देना एक प्रकार से अपने आप को धोखा देना है, अंतरात्मा इस गिरावट को स्वीकार करती है और निरंतर धिक्कारती है। जिसे अपनी वस्तुस्थिति तक प्रकट करने का साहस नहीं होता उस कायर का आत्मबल कहाँ टिकेगा। बहादुरी यहाँ से शुरू होती है कि व्यक्ति दूसरों से बिना डरे अपनी स्थिति ज्यों की त्यों प्रकट कर दे और फिर यथार्थता के कारण जो भी स्थिति सामने आए उसे सहन करे। वस्तुस्थिति में भिन्न बात बताकर यदि दूसरों को अंधेरे में रखा जाए और धोखेबाजी के फलस्वरूप कुछ लाभ उठा लिया तो यह प्रकारांतर से मित्र बनकर विश्वास अर्जित करने और दूसरे क्षण उसकी पीठ में छुरा मारने की तरह विश्वासघात करके यदि कुछ कमा लिया जाए तो इस असत्य भाषण को कोई कमाई करने की कला नहीं मान लेना चाहिए। यह तो लुटेरेपन की तरह एक लौकिक अपराध ही कहा जाएगा। ऐसी रीति-नीति अपनाने वालों को चतुरों की नहीं, अपराधियों की पंक्तियों में ही खड़ा किया जाएगा।

अलाउद्दीन खिलजी का एक सरदार भागकर रणथंभोर के राजा हम्मीर देव से मिल गया। अलाउद्दीन ने हम्मीर देव को भड़काते हुए पत्र लिखा—यह सरदार तो आपका शत्रु है आप उसे वापस कर दें। इस पर हम्मीर देव ने संदेश भेजा हम उस देश और जाति के नागरिक हैं जो मैत्री करके छल करना पाप समझते हैं, खेद है कि आपका प्रस्ताव स्वीकार नहीं कर सकते। खिलजी क्रुद्ध हो उठा और आक्रमण कर दिया, पर हम्मीर देव सरदार की आखिर तक रक्षा करते रहे।

असत्य व्यवहार एवं असत्य भाषण करना, असत्य विश्वास दिलाना, अपनी मान्यता के विपरीत कुछ का कुछ बता देना, अपनी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्थिति को छिपाकर दूसरी तरह की प्रकट करना, अपने इरादों को छिपाना, यह सब असत्य भाषण के अंतर्गत ही आता है। केवल झूठ बोलना ही असत्य नहीं है, अन्य प्रकार से अपने द्वारा किसी को भ्रम में डाल देना यह सारा क्रियाकलाप असत्य की परिधि में आता है। उसे चाहें तो दूसरे शब्दों में छल या ठगी भी कहते हैं। भले ही किसी का पैसा न ठगा गया हो, पर विश्वास को ठग लेना भी कुछ कम पाप या अपराध नहीं है।

असत्य को पातकों में मूर्धन्य माना गया है और हर कर्त्तव्य-निष्ठ नागरिक से आशा की गई है कि सत्य का ही अवलंबन करे। यह मानवीय कर्त्तव्य का शुभारंभ है कि हम परस्पर एक दूसरे को सही ही जानकारी दें और उचित ही विश्वास दिलाएँ। इसी आधार पर एक-दूसरे पर भरोसा कर सकेगा और पारस्परिक सहयोग की उस श्रृंखला को अग्रगामी बना सकेगा जिस पर मानवीय प्रगति तथा समाज व्यवस्था पूर्णतया अवलंबित है। यदि हम एक दूसरे को गलत जानकारी देने की रीति-नीति अपना लें, तो फिर कोई किसी पर क्या और क्यों विश्वास करेगा। परस्पर सन्देह, आशंका, अविश्वास और प्रवंचना की बात ही सोचते रहें तो न सहयोग देते बनेगा न लेते। इस स्थिति में प्रेम और मैत्री के नाम पर अंतरंग में पुलकन और उल्लास भरने वाले तत्वों का पनप सकना भी संभव न रहेगा। आशंका का आतंक हर बात में हर व्यक्ति के प्रति संदेह और अविश्वास करने के लिए प्रेरित करेगा। उन परिस्थितियों में श्रद्धा भावना कौन किसी पर आरोपित कर सकेगा। सज्जनता का व्यवहार करते हुए ठगे जाने का संदेह यदि मन में बना रहा तो सभी में घृणा और धूर्तता की गंध आएगी तब कोई किसी को अपना कैसे समझेगा और कैसे उसकी ओर से निश्चिंत रह सकेगा तब किसी को किसी से कुछ आशा भी न रहेगी। वचन का पालन और विश्वास जब मानवीय आचार का अंग नहीं रह गया तब फिर मनुष्य अपने को एकाकी ही अनुभव करेगा और यह समझेगा कि वह धोखे-बाज सियारों और भेड़ियों के बीच किसी प्रकार निर्वाह मात्र कर रहा है।

जाड़े के दिन थे एक लड़का आग जलाए बैठा पढ़ रहा था। उसके पास गर्म कपड़े बनवाने के लिए भी पैसे नहीं थे। तभी एक काबुली सरदार उधर से निकला, वह उस स्थान पर कुछ क्षण आराम

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

करके चला गया। बड़ी देर बाद लड़के का ध्यान पढ़ाई से हटा तो देखा बगल में एक पोटली पड़ी है। उसे उठाकर देखा तो चाँदी के पाँच हजार रुपए। उन्हें देखकर भी बालक के मन में बिलकुल लालच न आया, वह भागा-भागा गया और काफी दूर काबुली सौदागर को जा पकड़ा। सौदागर लड़के की ईमानदारी से प्रभावित होकर पोटली से सौ रुपए देने लगा तो उसने अस्वीकार करते हुए कहा—यह तो मेरा कर्त्तव्य था कि आपकी वस्तु आप तक पहुँचाता। किसी और के परिश्रम की कमाई लेने का मुझे क्या अधिकार। यही लड़का आगे चलकर वीरेश्वर मुखोपाध्याय के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

दांपत्य जीवन से लेकर लेन-देन के व्यवसाय तक हर व्यवस्था के पीछे कुछ सुनिश्चित आश्वासनों को आधार माना जाता है। यदि उनकी आधारशिला हिल जाए, एक दूसरे को झूठा, ठग, जालसाज और विश्वासघाती जान बैठें तो परस्पर निर्वाह कैसे होगा और सहयोग की गाड़ी के पहिए साथ-साथ कैसे लुढ़केंगे ? एक झूठा व्यक्ति अपने दुर्व्यवहार से अनेकों को आतंकित एवं आशंकित करता है इससे व्यापक क्षेत्र में अनिश्चितता फैलती है। झूठ को इसीलिए सबसे बड़ा पातक माना गया है कि इससे आत्मा अपनी दृष्टि में आप पतित होती है। असत्य से दूषित व्यक्तित्व बनता है और मनोविज्ञान की दृष्टि में दुराव के कारण अगणित शारीरिक मानसिक रोग उत्पन्न होते हैं, परस्पर अविश्वास उत्पन्न होते हैं, परस्पर अविश्वास उत्पन्न होने के अतिरिक्त समाज व्यवस्था की नींव हिलती है जिसकी चर्चा ऊपर की जा चुकी है। असत्य का अवलंबन हम हँसी मजाक में भी न करें यही उचित है।

प्रश्न

१. मनुष्य का सर्वप्रथम गुण कौन-सा है ?
२. सज्जनता की परख क्या है ?
३. मिथ्या बोलने से क्या हानि है ?
४. प्रतिष्ठा किस की स्थिर रहती है ?
५. धन क्यों निन्दनीय है ?
६. कायर किसे कहा जाना चाहिए ?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

७. ठगने वाला अधिक घाटे में कैसे रहता है ?

८. सिद्ध कीजिए "दूसरों को धोखा देना अपने आप को धोखा देना है।"

९. बहादुरी कहाँ से प्राप्त होती है ?

१०. झूठ को सबसे बड़ा पातक क्यों माना गया है ?

● ●

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ईमानदारी का मार्ग अपनाएँ

लगता ऐसा है कि जल्दी और अधिक कमाने के लिए बेईमानी का प्रयोग करना आवश्यक है क्योंकि धनवान् लोगों में से अधिकांश ऐसे दीखते हैं, जिनके क्रियाकलाप में बेईमानी का पुट रहता है। ईमानदार लोगों में से बहुत करके गरीब दीखते हैं, इसलिए सामान्य बुद्धि से यही प्रतीत होता है कि हम भी ईमानदार रहेंगे तो गरीब बन जायेंगे। चूँकि इन दिनों धन की प्रमुखता है। धन के आधार पर ही अधिक सुविधा साधन और सफलता, सम्मान की उपलब्धि होती है। इसलिए मोटी बुद्धि से स्थिति का अवलोकन करने वाले और बहुसंख्यक जिस रास्ते चलें, उसी पर चलने वाले लोग आमतौर से उसी ढर्रे को अपना लेते हैं, जो पास-पड़ौस के लोग अपनाते दीखते हैं। आज की व्यापक क्षेत्र में फैली हुई बेईमानी का यही प्रधान कारण है।

वस्तुस्थिति को बारीकी से तलाश करने पर बुद्धि-भ्रम हो जाना स्वाभाविक है। बेईमानी की गरिमा स्वीकार करके लोग बुद्धि-भ्रम से ही ग्रस्त हुए हैं। वास्तविकता वैसी है नहीं। बेईमानी से धन नहीं कमाया जा सकता। कमा लिया जाए तो स्थिर नहीं रखा जा सकता। लोग जिन गुणों से कमाते हैं, वे दूसरे ही हैं। बेईमानी की आड़ में कुछ अनुपयुक्त लाभ प्राप्त कर लिया जाये तो इसका अर्थ यह नहीं हो सकता कि उसका परिणाम लाभदायक होता है। साहस, परिश्रम, सूझ-बूझ, मधुर भाषण, व्यवस्था आदि वे गुण हैं, जो उपार्जन करते हैं। बेईमानी तो अपयश, अविश्वास, घृणा, असहयोग, राजदंड, आत्म-ग्लानि आदि दुष्परिणाम ही उत्पन्न करती है। वस्तुतः लोग सद्गुणों के आधार पर कमाते हैं। बेईमानी का तात्पर्य है दूसरों को धोखा देना, यह तभी संभव है जब उस पर ईमानदारी का आवरण चढ़ा हो। किसी को ठगा तभी जा सकता है, जब उसे अपनी ईमानदारी एवं विश्वसनीयता के बारे में आश्वस्त कर दिया जाए। यदि किसी को यह शक हो जाए कि हमारे साथ बेईमानी करने के लिए ताना-बाना बुना जा रहा है तो वह ठगाई में न आएगा और चालाकी से मिलने वाला लाभ न मिल सकेगा। बेईमानी तभी लाभदायक हो सकती है, जब वह ईमानदारी की आड़ में भली

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रकार छिपा ली जाए। असलियत जैसे ही प्रकट हुई, बेईमानी करने वाला न केवल उस समय के लिए वरन् सदा के लिए उन लोगों से अपना विश्वास खो बैठता है और लाभ कमाने के स्थान पर उल्टा घाटा उठाता है।

बंबई के एक डाक्टर ने एक मरीज को आम का अचार खाने की सलाह दी और कहा—जब अचार लाना तो मुझे दिखाकर जाना। मरीज थोड़ी देर में एक शीशी लेकर लौटा और डाक्टर को दिखाया। डाक्टर ने सारा अचार फिंकवा दिया और कहा—अच्छा होना है, तो विलायती अचार खाओ। हिन्दुस्तानी कंपनियाँ तो अचार में भी मिलावट करने से नहीं चूकतीं। पास ही खड़े एक अचार वाले ने यह सुना तो उसका दिल धक् से रह गया। हिन्दुस्तान में विदेशी माल की साख ? उसने उस दिन से शुद्ध और उम्दा अचार बनाकर बेचने का निर्णय किया। उस अब्दुल हुसेन की ईमानदारी ऐसी फली कि उसके आचार की धूम सारी दुनियाँ में है।

बेईमानी का प्रतिफल घृणा, अविश्वास, असहयोग, राजदंड और आत्मदंड हैं, उसमें उपार्जन की कोई क्षमता नहीं। उपार्जन तो सद्गुण करते हैं। उन्हीं में उत्पादक तत्वों का समावेश है। संसार में बड़े काम, बड़े व्यापार, बड़े आयोजन ईमानदारी के आधार पर जमे, बढ़े और सफल हुए हैं। जिसने अपनी विश्वस्तता का सिक्का दूसरों पर जमा दिया, अच्छी, सही, खरी चीजें उचित मूल्य पर दीं और व्यवहार में प्रामाणिकता सिद्ध कर दी, लोग उस पर मुग्ध हो गए और सदा-सर्वदा के लिए उसके ग्राहक, प्रशंसक एवं सहयोगी बन गए। उन्नति का रहस्य यही है। जिसकी प्रामाणिकता है, उसका भविष्य उज्ज्वल है। किंतु जो अपनी मूर्खता के कारण बदनाम हो गया उसका ईश्वर ही रक्षक है। आज के मित्र, कल के दुश्मन बनेंगे, कल के मित्र परसों घृणा करने लगेंगे और अंततः उसका कोई सच्चा सहयोगी न रह जाएगा। स्वार्थ के लिए चापलूसी करने वाले भी आड़े वक्त काम न आएँगे। विश्वास करके कोई जोखिम उठाने के लिए वे "चापलूस" मित्र भी समय पड़ने पर तैयार नहीं होते।

श्री चिमनलाल सीतलवाड़ बंबई की किसी फर्म में काम करते थे। एक मामले में बचने के लिए आदमी उनके पास आया और एक लाख रुपए की रिश्वत देने लगा, पर श्री सीतलवाड़ ने उसे अस्वीकार कर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दिया। उस व्यक्ति ने कहा—समझ लीजिए इतनी बड़ी रकम कोई देगा नही। श्रीसीतलवाड़ हँसे और बोले—देने वाले तो बहुत होंगे, पर इन्कार करने वाला मुझ जैसा ही मिलेगा। यही सीतलवाड़ एक दिन बंबई विश्वविद्यालय के कुलपति नियुक्त हुए।

हमें यह भ्रम निकाल ही देना चाहिए कि बेईमानी कुछ कमा सकती है। वह शराब की उत्तेजना मात्र है, जिससे ठगने वाला और ठगा जाने वाला दोनों बुद्धि भ्रम में ग्रस्त हो जाते हैं। नशा उतरने पर नशेबाज की जो खस्ता हालत होती है, वही पोल खुलने पर बेईमान की होती है। उसका न कारोबार रहता है, न कोई ग्राहक सहयोगी। दूध में पानी और घी में वेजीटेबिल मिलाने वाला तभी कमा सकता है जब वह कसम खा-खाकर अपनी ईमानदारी और चीज के असलीपन पर विश्वास दिलाता रहे। यह ईमानदारी और विश्वास की विजय है। जो कमाया गया उसका आधार यही था। यदि वे लोग अपनी दुकान पर पानी और अरारोट मिला दूध, मिलावटी घी का साइनबोर्ड लगाएँ और अपनी वस्तु के दोषों को प्रकट कर दें, तब पता चले कि क्या बेईमानी अपने विशुद्ध रूप में कुछ कमा सकने में समर्थ है।

दो भाई थे, बँटवारा हुआ तो एक ने सट्‌टेबाजी में अपार धन कमाया दूसरा खेती करके गुजारा करने लगा। एक दिन गरीब भाई की स्त्री ने कहा—देखो ! तुम्हारे भैया ने कितनी संपत्ति कमाई है और तुम कुछ न कर सके। उस दिन पासा कुछ ऐसा पलटा कि सट्‌टे में सब कुछ हारकर भिखारी बन गया जब कि पहले वाले के पास अब भी अपनी संपत्ति सुरक्षित थी। बेईमानी की कमाई देर तक नहीं टिकती।

वेस्ट एंड वाच कंपनी की घड़ियाँ, फोर्ड मोटरें, पार्कर के पैन लोग महँगे होने पर भी खुशी-खुशी से खरीदते हैं, क्योंकि वस्तु की प्रमाणिकता पर हर कोई भरोसा करता है। उसकी दिन प्रतिदिन उन्नति होती चली जा रही है। इसके विपरीत नकली, कमजोर, खराब चीजें बेचने वाले आए दिन दिवालिया होते रहते हैं। पूँजी गँवा बैठते हैं और फिर उस बदनामी के कारण नया काम कर सकने में भी सफल नहीं होते। बेईमानी देर तक छिपी नहीं रह सकती। पारे को पचाया नहीं जा सकता और पाप छिपाया नहीं जा सकता है। प्रकट होते समय दोनों ही भारी कष्ट देते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

व्यापार की ही भाँति जीवन के हर क्षेत्र की सफलता का स्थायित्व कठोर श्रम, सद्‌गुण, सद्व्यवहार, सच्चाई, ईमानदारी एवं प्रामाणिकता पर निर्भर रहता है। चालाकी से एक बार ही किन्हीं को चमत्कृत करके अपना उल्लू सीधा किया जा सकता है, पर उस लाभ को स्थिर नहीं रख सकता। चोर, डाकू, जुआरी, गिरहकट आए दिन बहुत पैसा कमाते रहते हैं, पर उस कमाई को स्थिर रखना या सदुपयोग करना उनके बस की बात नहीं होती। बादल की छाँह की तरह अनीति की कमाई भी अपव्यय और दुर्व्यसनों में देखते-देखते समाप्त हो जाती है।

तीन चोरों ने चोरी में बहुत सा धन प्राप्त किया। घर लौट रहे थे तब मार्ग में उन्हें भूख लगी। एक भोजन लेने गया, दूसरा पानी और तीसरा अकेला धन के पास रहा। तीनों के मन में पाप आ गया कि क्यों न दोनों को मारकर धन हड़प लिया जाए। फलतः जो खाना लेने गया था वह खाने में जहर मिला लाया और जो पानी लेने गया था वह पानी में जहर मिला लाया। इधर जो धन के पास बैठा था, उसने एक-एक करके दोनों को तलवार से काटकर फेंक दिया। अकेला रह गया तो सोचा पहले खाना खा लूँ, तब चलूँ यह सोच कर वह खाना खाने बैठा और उसके विषाक्त होने के कारण खुद भी वहीं ढेर हो गया।

संपत्ति से नहीं, सद्‌बुद्धि और सत्प्रवृत्तियों से उन्नति होती है। धनवान् नहीं, चरित्रवान सुख पाते हैं। ईमानदारी से यदि कम भी कमाया जाए तो वह अनीति से अधिक कमाने की अपेक्षा श्रेयष्कर है। पसीने की कमाई फलती-फूलती है और हराम का पैसा पानी के बबूले की तरह नष्ट हो जाता है। इतना ही नहीं, विदाई के बाद वह बहुत पश्चाताप, संताप और अपयश छोड़कर जाता है।

यदि बेईमानी से ही धन कमाया जाता तो आवश्यक नहीं कि धनवान ही बना जाए। संसार में अधिकांश गरीब ही रहते हैं। हम भी उन्हीं में से एक रहें तो क्या हर्ज है ? किंतु वास्तविकता यह है कि धन ही नहीं, स्वास्थ्य, संतोष और सम्मान के क्षेत्रों में भी समृद्ध और सफल चरित्रवान एवं ईमानदार लोग ही बनते हैं। सफलता प्राप्त कर लेना ही काफी नहीं, उससे आत्म-संतोष और जन-कल्याण एवं स्वस्थ परंपरा का अभिवर्धन होना चाहिए। सही तरीके से प्राप्त की हुई सफलता ही वास्तविक सफलता है। यदि किसी ने कोई उन्नति या उपलब्धि अनुपयुक्त

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रीति से प्राप्त की है तो उससे अनेकों को वैसा ही करने की इच्छा उत्पन्न होगी और समाज में ऐसी प्रथा चल पड़ेगी, जो हर किसी के अहितकर परिणाम ही उत्पन्न करती रहे।

प्रसिद्ध गुजराती कवि बालाशंकर कंथारिया की आर्थिक स्थिति खराब हो गई तो उन्होंने किसी से कर्ज लेने की अपेक्षा अपना मकान श्री माणिकलाल को बेच दिया। कुछ दिन बाद माणिकलाल ने मकान गिरवा कर उसे बनवाना शुरू कर दिया, तब उसमें बहुत-सा गढ़ा हुआ धन मिला। श्रीमाणिकलाल उसे लेकर बालाशंकर के पास पहुँचे और कहा—यह धन आपका है, मैंने मकान खरीदा है, धन नहीं। इस पर बालाशंकर जी बोले—मैंने मकान बेच दिया, उसमें जो कुछ निकले सब तुम्हारा, यह कहकर उन्होंने वह धन लेने से इन्कार कर दिया।

सद्‌गुणों की खाद और सच्चाई का पानी पाकर ही व्यक्तित्व का पौधा बढ़ता और फलता-फूलता है। जादू से हथेली पर सरसों जमाई तो जा सकती है, कौतुक तो देखा जा सकता है, पर उसका तेल निकालकर धन कमाया जा सके, ऐसा संभव नहीं होता। बेईमानी का चमत्कार तो देखा जा सकता है, पर उसके सहारे सच्ची प्रगति और स्थिर संपदा का लाभ नहीं उठाया जा सकता। यदि हम वस्तुतः कुछ कहने लायक और आनंद दे सकने लायक उपलब्धियाँ प्राप्त करना चाहते हैं तो एक ही रास्ता है कि हम ईमानदारी और भलमनसाहत को जीवन-नीति की तरह हृदयंगम करें, सद्‌गुणों की संपदा से अपने व्यक्तित्व को सुसज्जित करते चलें। जिस प्रकार रुपए के बदले दुकानों पर बिकने वाली चीजें आसानी से खरीदी जा सकती हैं, उसी प्रकार सद्‌गुणों के मूल्य पर प्रगति की किसी भी दिशा में द्रुतगति से अग्रसर हुआ जा सकता है।

बेईमानी की रीति-नीति स्वीकार करने का प्रतिफल अपने लिए विपत्ति और समाज के लिए दुर्गति के रूप में ही प्रस्तुत होगा। हमें इस कंटकाकीर्ण पगडंडी पर चलने की अपेक्षा यही अच्छा है कि इस मार्ग पर चलने वालों की दुर्गति देखें और उतने से ही सावधानी बरतने लग जाए। इतिहास के किसी भी पृष्ठ पर यह तथ्य देखा जा सकता है कि विभूतियों और संपत्तियों का लाभ केवल उनके लिए सुरक्षित रहता है जो सद्‌गुणी, चरित्रवान और ईमानदार हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रश्न

१. आज के समाज में बेईमानी फैलने के मुख्य कारण क्या हैं ?
२. धन उपार्जन के लिए ईमानदार व्यक्ति में क्या गुण होना चाहिए ?
३. बेईमानी से प्राप्त धन किस प्रकार हानि पहुँचाता है ?
४. बेईमानी किस प्रकार की जाती है ?
५. बेईमानी का प्रतिफल क्या होता है ?
६. ग्राहक किस प्रकार के व्यापारी के प्रशंसक व सहयोगी बन जाते हैं ?
७. बेईमानी से हमें क्या लाभ होता है ?
८. बेईमानी क्या केवल व्यापार में ही होती है, अन्य जगहों पर नहीं होती ?
९. ईमानदारी को छोड़कर बेईमानी को अपनाने वाले किस तरह हानि उठाते हैं ?
१०. हमें अगर ईमानदारी अपनानी हो तो किस आधार पर हम कह सकते हैं कि वह श्रेष्ठ है ?

● ●

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हँसती और हँसाती जिंदगी

अपने पास दूसरों को देने के लिए धन-दौलत न हो, किसी को कुछ देने की स्थिति न हो तो भी हम एक वस्तु सदा सबको देते रह सकने में समर्थ हो सकते हैं और निरंतर पुण्य और संतोष लाभ करते रह सकते हैं। उस वस्तु का नाम है—प्रसन्नता। यदि अपने स्वभाव में प्रसन्न रहने का समावेश कर लिया जाए, हँसने मुस्कराने की आदत डाल ली जाए तो आप जहाँ कहीं रहेंगे, वहीं प्रसन्नता बिखेरते रहेंगे और जो कोई भी संपर्क में आवेगा प्रसन्न और प्रभावित होता चला जाएगा। अपने आपकी संतुष्टि भी प्रसन्नता की मनोदशा पर निर्भर है।

एक बार गाँधी जी से एक लड़का मिलने आया। गाँधी जी नियमित रूप से प्रतिदिन घूमने जाया करते थे, बातचीत के लिए लड़के को साथ ले लिया। उन्होंने पूछा—तुम कौन लोग हो ? अग्रवाल—उत्तर मिला, तो वे हँस कर बोले—अग्रवाल तो मैं हूँ, आगे-आगे चल रहा हूँ, तुम तो पीछे चलने वाले ? "पिछवाल" हो। यह सुनते ही साथ में चलने वाले सभी लोग हँस पड़े।

यह अनुमान सही नहीं है कि जो सुखी एवं साधन संपन्न होता है वह प्रसन्न रहता है। वस्तुस्थिति इससे बिलकुल उल्टी है। जो प्रसन्न रहता है, वह सुखी और साधन संपन्न बनता है। प्रसन्न विशुद्ध रूप से एक ऐसी मनोदशा है, जो पूर्णतया आंतरिक सुसंस्कारों पर निर्भर रहती है। गरीबी में भी मुस्कराने और कठिनाइयों के बीच भी जी खोलकर हँसने वाले असंख्य व्यक्ति देखे जा सकते हैं। इसके विपरीत ऐसे भी अगणित लोग हैं, जिनके पास प्रचुर मात्रा में साधन संपन्नता भरी पड़ी है। पर उनकी आँखें, नसें तेवर तने और मुखाकृति इठी रहती है। क्रुद्ध, चिंतित, असंतुष्ट और उद्विग्न रहना एक मानसिक दुर्बलता मात्र है, जो अंतःकरण की दृष्टि से पिछड़े हुए लोगों में ही पाई जाती हैं। परिस्थितियाँ नहीं, मनोभूमि का पिछड़ापन ही इस क्षुब्धता का कारण है। उदात्त और संतुलित दृष्टिकोण वाले व्यक्ति हर परिस्थिति में हँसते-हँसाते रहते हैं। वे जानते हैं कि मानव जीवन सुविधाओं, असुविधाओं, अनुकूलताओं और प्रतिकूलताओं के ताने बाने से बुना गया है। संसार में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अब तक एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं जन्मा, जिसे केवल सुविधाएँ और अनुकूलताएँ ही मिली हों एवं कठिनाइयों का सामना न करना पड़ा हो।

हर किसी के जीवन में कुछ अनुकूलताएँ रहती हैं, कुछ प्रतिकूलताएँ। प्रश्न इतना भर है कि कौन किसको कितना महत्त्व देता है जो अपनी प्रतिकूलताओं पर ही विचार करता रहेगा, इन्हीं की बाबत सोचेगा, उन्हें ही महत्त्व देगा, उसे प्रतीत होगा कि वह मात्र कठिनाइयों से घिरा हुआ है। अस्तु, उसे दुःखी रहना पड़ेगा। इन कठिनाइयों के निमित्त कारण जो भी प्रतीत होंगे, उन पर क्रुद्ध रहेगा। अधिक संपन्न लोगों के साथ अपनी तुलना करेगा तो अपने दुर्भाग्य पर चिढ़ आएगी। इस स्तर पर अपनी मनोभूमि जमा देने वाला व्यक्ति सदा क्षुब्ध ही दिखाई पड़ेगा उसके स्वभाव में चिड़चिड़ापन जुड़ जाएगा और जब भी अवसर मिलेगा, वह अपनी व्यथा अथवा नाराजगी व्यक्त करते हुए अपनी मानसिक अस्त-व्यस्तता प्रकट कर रहा होगा।

संत सुकरात की पत्नी बड़े कर्कश स्वभाव की थीं। एक दिन सुकरात अपनी बैठक में सम्भ्रांत लोगों से आवश्यक मंत्रणा कर रहे थे। उधर उनकी स्त्री को उनका निठल्ला बैठना अखर रहा था। पहले तो वे सभी को गालियाँ देती रहीं, पर किसी ने उधर ध्यान नहीं दिया। इस पर वे क्रुद्ध हो उठीं और जिस से बर्तन धो रही थीं वही गंदा पानी उठाकर सभी लोगों पर पटक दिया। जब तक दूसरे लोग कुछ कहें, सुकरात ने अपनी पत्नी की ओर देखा—थोड़ा मुस्कराए और कहने लगे—भाइयों ! मैंने तो सुना था, जो बादल गरजते हैं वे बरसते नहीं, पर आज तो बादल गरज भी रहे हैं और बरस भी रहे हैं। यह सुनते ही ऐसे कहकहे छूटे कि लोग हँसी के मारे लोटपोट हो गए।

इसके प्रतिकूल जिसने अपनी अनुकूलताओं पर विचार करना आरंभ किया और अपनी तुलना पिछड़े हुए लोगों के साथ करना आरंभ की, उसे लगेगा कि हम करोड़ों से अच्छे हैं हमारे पास जो है उसके लिए भी लाखों करोड़ों तरसते हैं। इस तथ्य को जो समझ लेगा, वह अपने को सौभाग्यवान मानेगा और संतोष का बहुत बड़ा आधार प्राप्त कर लेगा। सभी सुविधाएँ किसे मिली हैं। जिसे हर सुविधा मिले तो उसे देवता या भगवान कहा जाएगा।

प्रसन्नता एक ईश्वरीय वरदान है और यह हर सुसंस्कृत मनोभूमि के व्यक्ति को प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हो सकती है। जिसे शुभ देखने की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आदत है वह प्रियदर्शी सर्वत्र आनंद मंगल देखेगा, ईश्वर की अनुकंपा और लोगों की सद्भावना पर विश्वास रखेगा। ऐसी दशा में हँसने और हँसाने के लिए उसके पास बहुत कुछ होगा। किंतु जिन्हें अशुभ चिंतन की आदत है, दूसरों के दोष गुण और अपने अभाव अवरोध ढूँढ़ने की आदत है, जो इसी शोध में लगे रहते हैं और जो प्रतिकूलताएँ दीखती हैं, उन्हें बढ़ा-चढ़ा कर सोचते हैं, अपने चारों ओर केवल दुष्टता और विपन्नता ही दिखाई देती हैं, ऐसे लोगों को क्षुब्ध ही रहना पड़ेगा। वे असमंजस, खिन्नता और उद्विग्नता ही अनुभव करते रहेंगे। रोष उनकी वाणी से और असंतोष उनकी आकृति से टपकता रहेगा, ऐसे व्यक्ति स्वयं दुखी रहते हैं और अपने संपर्क में आने वाले दूसरों को दुखी करते रहते हैं।

केरल के भूतपूर्व मुख्य मंत्री श्री नंबूदरीपाद से एक पत्रकार ने पूछा—आप हमेंशा हकलाते हैं। नंबूरीपाद बोले—जी नहीं, केवल बोलते समय हकलाता हूँ।

मनुष्य जीवन की एक भारी विडंबना है कि वह सृष्टि का मुकुटमणि और संसार के समस्त प्राणियों की तुलना में अधिक साधन संपन्न होते हुए भी अपने को दुर्भाग्यग्रस्त माने और दुःखी रहे। यह एकाकी मनोभूमि अर्धांग पक्षाघात के रोगी की तरह है, जिसका एक ओर का आधा शरीर तो काम करता है, पर दूसरी ओर निर्बलता, रुग्णता और पीड़ा की स्थिति बनी रहती है। हम जितनी देर जितनी बढ़ा-चढ़ाकर अपनी प्रतिकूलताएँ सोचेंगे, उसी अनुपात से अपने रोष और विक्षोभ को बढ़ा लेंगे।

हमें क्रुद्ध, रुष्ट, असन्तुंट और क्षुब्ध नहीं रहना चाहिए। इससे मस्तिष्क में नई विकृतियाँ उत्पन्न होती और बढ़ती चली जाती हैं। आग जहाँ रहेगी, वहीं जलाएँगी। असंतोष जहाँ रहेगा, वहीं विक्षोभ पैदा करेगा और उससे सारा मानसिक ढाँचा लड़खड़ाने लगेगा। चिड़चिड़ा मनुष्य एक प्रकार का पागल ही है। दुःखी, निराश और चिंतित रहने वाले को सनकी और मूर्खों की पंक्ति में बिठाया जाएगा। ऐसा व्यक्ति अपने ही दुर्गुणों से अपने आपको जलाता-गलाता रहता है और अनेक शारीरिक-मानसिक रोगों से ग्रस्त होकर घोर अशांति की उद्विग्न जिंदगी जीता है।

तुकाराम की पत्नी बड़ी कर्कश स्वभाव की थीं। एक दिन तुकाराम को किसी मित्र ने गन्ने दिए। तुकाराम गन्ने लेकर चले तो रास्ते

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भर लड़के गन्ने माँगते और वे गन्ने बाँटते रहे। रह गया एक गन्ना। संत तुकाराम उसे ही लेकर घर पहुँचे। उनकी पत्नी ने एक गन्ना देखा तो आग बबूला हो उठीं वह गन्ना उठा कर तुकराम पर दे मारा। गन्ने के बीच से दो टुकड़े हो गए। तुकाराम ने दोनों टुकड़े उठाए और हँस कर बोले—लो एक टुकड़ा तुम खाओ, एक मैं, इस गजब की सहिष्णुता और प्रेम भाव पर पत्नी पानी-पानी हो गईं और अपना कटु स्वभाव छोड़ दिया।

हँसते रहना एक दैवी गुण है, जिस पर अमीरों की सुविधाएँ निछावर की जा सकती हैं। हँसने की आदत चित्त को हल्का बनाती है और शरीर को निरोग, दीर्घजीवी एवं सुंदर बनने की सुविधा उत्पन्न करती है। अपना सबसे बड़ा उपहार यही हो सकता है कि प्रसन्न रहने, मुस्कराने और हँसने की आदत को अपने स्वभाव का अंग बना लें। यह व्यक्ति को आकर्षक बनाने का बहुमूल्य गुण है। खिले हुए फूल के आस-पास जिस तरह तितलियाँ और मधु मक्खियाँ घिरी रहती हैं, उसी प्रकार हँसते-हँसाते रहने वाले व्यक्ति से समीपवर्ती लोग अनायास ही आकर्षित और प्रभावित होते हैं। प्रसन्नता की आवश्यकता सभी को है, हँसी का आनंद हर कोई लेना चाहता है। मुस्कराहट के साथ बिखरने वाला सौंदर्य हर किसी को भाता है। इस प्रकार की आकृति और प्रकृति ज़िस किसी को भी दिखाई पड़ती है, लोग उसकी ओर खिंचते चले आते हैं। मिठाई खरीदने वाले हलवाई की दुकान पर पहुँचते हैं। हर्ष और उल्लास की—प्रसन्नता और मुस्कान की भूख हर किसी को प्रसन्न चित्त मनुष्य के पास खींच कर ले आती है। उसको मित्रों, समर्थकों, प्रशंसकों और सहयोगियों की कमी नहीं रहती।

प्रसिद्ध शायर शौकत थानवी एक मुशायरे में भाग ले रहे थे। भारी दाढ़ी वाले अनवार शाबरी जब शेर पढ़ने लगे तो फोटोग्राफर फोटो खींचने लगे। उन्होंने गजल पढ़ना रोककर पूछा—भाई ! मेरी फोटो खींचकर क्या करोगे ? फोटोग्राफर कुछ कहें इससे पहले ही थानवी बोले—बच्चों को डराया करेंगे। फिर क्या था खूब कह-कहे लगे।

दूसरों को हम सर्वथा निर्धन और अक्षम होते हुए भी जो बहुमूल्य उपहार निरंतर देते रह सकते हैं, वह प्रसन्नता की अभिव्यक्ति ही है। चंदन अपने चारों ओर सुगंध और पुष्प आस-पास शोभा सौंदर्य बिखेरता है। हँसमुख और प्रसन्नचित्त मनुष्य अपने समीपवर्ती वातावरण में, परिवार

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और परिचितों में हर्ष-उल्लास की लहरें उत्पन्न करता रहता है। संसार में दुःख बहुत हैं, दुःखियों की कमी नहीं। रोने और रुलाने वालों की भीड़ लगी है। चिढ़ने और चिढ़ाने वाले अगणित हैं। खोज उनकी है, जो हँसने और हँसाने की विभूतियाँ बिखेरते हुए अपनी आंतरिक समर्थता और मानसिक प्रौढ़ता का परिचय दे सकें। ऐसे ही लोग इस संसार में आनंद की अभिवृद्धि कर सकते हैं, उन्हीं का अनुदान समीपवर्ती लोगों की हृदय कालिका को खिला सकता है। कठिनाइयाँ अपने पुरुषार्थ से हल होती हैं, पर दूसरों को उल्लास एवं उत्साह प्रदान कर हम किसी का भी चित्त हल्का कर सकते हैं और निराश जीवन में आशा की नई किरण बिखेर सकते हैं।

आइन्सटीन के पास तीन चश्मे देखकर एक सज्जन ने पूछा—आप तीन चश्मे क्यों रखते हैं ? आइन्स्टीन बोले—एक दूर की वस्तुएँ देखने के लिए, दूसरा पास की और तीसरा इन दोनों को ढूँढ़ने के लिए।

हँसना एक दैवी गुण है, हँसाना एक उत्कृष्ट स्तर का उपकार है। मुस्कराता हुआ चेहरा भले ही काला-कुरूप क्यों न हो सदा अतिसुंदर लगेगा। प्रसन्नता एक आदत है, जो कुछ समय के निरन्तर अभ्यास से अपने अंदर उत्पन्न की जा सकती है। अपनी सुविधाओं को देखें और प्रसन्न रहें। शुभ और प्रिय देखें। उज्ज्वल भविष्य की कल्पना करें, सद्भावना और सत्प्रवृत्तियों का चिंतन करें, हमें हँसने के लिए, प्रसन्न रहने के लिए बहुत कुछ मिलेगा। यदि हम हँसने और हँसाने का जीवन जी सकें तो समझना चाहिए कि हमने एक सच्चे कलाकार जैसी मंगलमयी सफलता एवं उल्लास भरी उपलब्धि प्राप्त कर ली।

प्रश्न

१. वह क्या वस्तु है, जो हम धन-दौलत की जगह दूसरे को दे सकते हैं, जिससे संतोष व पुण्य दोनों ही प्राप्त हों ?
२. प्रसन्न रहने के क्या आधार हैं ?
३. क्या साधन संपन्न और अमीर ही केवल प्रसन्न रह सकते हैं ? यदि नहीं तो समझाएँ ?
४. व्यक्ति यदि अपने को अप्रसन्न समझता है, तो क्यों ?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

५. प्रसन्नता किस प्रकार प्राप्त की जा सकती है ?
६. किस प्रकार की मनःस्थिति वाला व्यक्ति प्रसन्न रह सकता है ?
७. किस प्रकार की मनःस्थिति वाला व्यक्ति अप्रसन्न रहता है ?
८. हमेशा हँसते-हँसाते रहने वाले व्यक्ति खुद को तथा परिवार को किस प्रकार लाभ पहुँचाते रहते हैं ?
९. हँसना किस प्रकार अमीरी की दौलत से भी बढ़कर है ?

● ●

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समाज का हित करें

अन्य जीव अपने आप में पूर्ण हैं। अपनी आवश्यकताएँ, अपने बलबूते स्वयं पूरी कर लेते हैं। आहार, निवास आदि के लिए वे किसी दूसरे पर निर्भर नहीं, पर मनुष्य की स्थिति ऐसी नहीं उसका निर्वाह, विकास एवं स्थायित्व दूसरों की आशा पर पूर्णतया आश्रित है। अन्य जीवों के बच्चे जन्म के कुछ समय बाद ही अपने पैरों पर खड़े हो जाते हैं, पर मनुष्य का बालक दूध पीने, करवट लेने तक में समर्थ नहीं होता। उसकी विभिन्न व्यवस्थाएँ माता न जुटाए तो जीवित रह सकना संभव नहीं। अपने पैरों पर खड़ा होने लायक तो वह बीस-पच्चीस वर्ष की आयु में बनता है, तब तक उसे अभिभावकों की कृपा पर अवलंबित रहना पड़ता है। भोजन, वस्त्र, चिकित्सा, शिक्षा विवाह आदि का प्रबंध वे ही करते हैं। बोलना, बात करना वह दूसरों का उच्चारण सुनकर करता है। शिक्षा दूसरों के संग्रहीत ज्ञान के आधार पर होती है। किसी की लड़की आकर अपना घर बसाती है। चिकित्सा के लिए दूसरों के ज्ञान पर अवलंबित रहना पड़ता है। कला कौशल दूसरे सिखाते हैं लाखों वर्षों से करोड़ों मनुष्यों द्वारा उपार्जित एवं संग्रहीत ज्ञान हमें मिलता है और तब कहीं कुछ सीख-समझकर किसी योग्य बन पाते हैं।

अमेरिकन विद्वान वैंजामिन फ्रैंकलिन को अखबार निकालने के लिए बीस डालर कम पड़ रहे थे। उन्होंने बीस डालर एक मित्र से उधार लिए। अखबार अच्छी तरह चल निकला तो वे बीस डालर वापस करने मित्र के पास पहुँचे। मित्र ने कहा—फ्रैंकलिन जरूरत मंदों की सहायता पर समाज टिका हुआ है। मैंने तुम्हें कर्ज नहीं दिया यदि देना ही है, तो आप यह बीस डालर किसी निर्धन को दे दीजिए। वैंजामिन ने ऐसा ही किया। कहते हैं यह बीस डालर अभी भी अमेरिका में एक से दूसरे जरूरतमंद के पास पहुँच कर सहायता करते रहते हैं। इस धन को कोई अपने पास नहीं रखता।

रेल, तार, डाक, प्रेस आदि आविष्कारों के आधार पर हमारी सुविधाएँ टिकी हुई हैं। व्यापार जिन साधनों से चलता है, वे अगणित मनुष्यों की सूझबूझ, मेहनत के परिणाम हैं। छोटी-सी दियासलाई बनाने में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जितने यंत्र, श्रम, साधन एवं ज्ञान की आवश्यकता पड़ती है, उनकी एक-एक प्रक्रिया का विकास लाखों-करोड़ों के सहयोग से ही संभव हुआ होता है। जंगलों, गुफाओं में रहने वाले साधु-महात्माओं को भी वस्त्र, माला, कमंडल, कुल्हाड़ी, दियासलाई, कंबल, खड़ाऊँ आदि की आवश्यकता पड़ती है। इसके बिना उनका निर्वाह नहीं होता। यह वस्तुएँ भी समाज के असंख्य व्यक्तियों के सहयोग, श्रम, ज्ञान से ही उपलब्ध होती हैं। कहने का तात्पर्य इतना भर है कि मनुष्य ने जो कुछ पाया, कमाया, बढ़ाया है वह सब कुछ दूसरों के सहयोग एवं अनुग्रह का फल है। मनुष्य पूर्णतया सामाजिक प्राणी है। उसकी स्थिति एवं प्रगति सब कुछ सामाजिक परिस्थिति पर निर्भर है, इसलिए उसका स्वार्थ इस बात में समाया हुआ है कि सामाजिक वातावरण उत्तम बना रहे। यदि समाज में किसी तरह विपन्नता उत्पन्न होगी तो उसका प्रभाव अपने ऊपर पड़े बिना भी न रहेगा। मुहल्ले में दुष्ट, दुराचारी भरे पड़े हों तो अपनी इज्जत-आबरू तथा सुरक्षा खतरे में हैं। गाँव में हैजा फैले तो उसका प्रभाव अपने घर में भी जान-जोखिम खड़ी करेगा। पड़ौसी के छप्पर में आग लगे तो अपना छप्पर भी सुरक्षित न रहेगा। इसलिए हमें अपने-अपने बच्चों के स्वार्थों की रक्षा के लिए सामाजिक जीवन के वातावरण को उत्कृष्ट बनाए रखने का प्रयत्न करते रहना चाहिए। ऐसे प्रयत्न इसलिए भी आवश्यक हैं, कि जिस समाज की सहायता से हमने अनेक सुविधाएँ प्राप्त की हैं, स्थिरता एवं प्रगति के उपहार पाए हैं, उसके प्रत्युपकार में प्रवृत्त होकर अपनी मानवोचित कृतज्ञता प्रकट करें। जिससे कुछ पाया है उसे देना भी चाहिए, तभी ऋण से मुक्ति मिलती है। समाज-सेवा के लिए कुछ निरंतर करते रहने का व्रत लेकर हमें समाज-ऋण से किसी कदर उऋण होने का प्रयत्न करते रहना चाहिए।

श्रावस्ती में भयंकर अकाल पड़ा। निर्धन लोग भूख से मरने लगे। भगवान बुद्ध ने संपन्न व्यक्तियों को बुलाकर कहा—भूख से पीड़ितों को बचाने के लिए कुछ उपाय करना चाहिए। सम्पन्न व्यक्तियों की कमी न थी, पर कोई कह रहा था मेरा तो सब खर्च हो गया, कोई कह रहा था मुझे तो घाटा हो गया, फसल पैदा ही नहीं हुई आदि। उस समय सुप्रिया नामक लड़की खड़ी हुई और बोली—मैं दूँगी, सबको अन्न। लोगों ने कहा—लड़की ! तू तो भीख माँगकर खाती है, दूसरों को क्या खिलावेगी। सुप्रिया ने कहा—हाँ ! मैं आज से इन पीड़ितों के लिए घर-घर जाकर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भीख माँगकर लाऊँगी पर किसी को मरने न दूँगी। उसकी बात सुनकर दर्शक स्तब्ध रह गए और सबने ही धन देना प्रारंभ कर दिया।

पेट पालने के प्रयत्नों में जीवन की बहुमूल्य विभूति समाप्त नहीं कर दी जानी चाहिए। स्त्री-बच्चों की आवश्यकताएँ पूरी करते रहने में हमारी सारी क्षमता खर्च नहीं हो जानी चाहिए। पेट और परिवार से बाहर भी अपनत्व का विस्तार होना चाहिए। आत्म-विकास का यही रास्ता है कि हम अपनी आत्मीयता को व्यापक क्षेत्र में विस्तृत करें। दूसरे के सुख को अपना सुख और दूसरों के दुःख को अपना दुःख मानकर कुछ ऐसा भी सोचें, कुछ ऐसा भी करें जिससे दूसरों का दुःख घटे और सुख बढ़े। निश्चय ही किसी की इतनी सामर्थ्य नहीं कि लोगों के अभाव अपनी सारी संपत्ति देकर भी पूरी कर सके। इसी प्रकार चौबीस घण्टे का समय लोगों की सेवा करने में लगा दिया जाए तो भी बहुत थोड़े लोगों की तनिक सी आवश्यकताएँ पूरी हो सकेंगी। इसलिए अन्न, वस्त्र, जल, दवा आदि बाँटकर समाज का पिछड़ापन कष्ट, अभाव और अवसाद दूर होने की कल्पना नहीं की जा सकती है।

वैज्ञानिकों का अनुमान था कि रेडियम से कैंसर का इलाज हो सकता है। इसके लिए प्रयोग की आवश्यकता थी, पर इस प्राणघातक प्रयोग के लिए कोई तैयार नहीं हुआ। एना राबर्ट्स ने सुना तो वे वैज्ञानिकों के पास गईं और बोलीं—एक मेरे मर जाने से यदि संसार का भला हो सकता है, तो मैं सहर्ष प्रस्तुत हूँ। उनके ही त्याग का फल है कि आज संसार में लाखों कैंसर रोगी इस इलाज से बच जाते हैं।

संसार में सारे कष्ट दुर्बुद्धि एवं दुष्प्रवृत्तियों के कारण हैं। इसलिए रोग के कारण को समझकर जड़ पर ही कुठाराघात करना चाहिए। समाज-सेवा का सर्वोत्तम तरीका यह है कि लोगों की विचारणा एवं प्रवृत्तियों को निकृष्टता की स्थिति से उबारकर उत्कृष्टता की दिशा में मोड़ा जाए। लोग अपना रवैया और ढर्रा बदल दें, तो अपने भीतर भरी हुई प्रचंड सामर्थ्य के आधार पर वे स्वयं ही अपने पिछड़ेपन एवं कष्टों का निवारण कर सकते हैं। हमें अपना सहयोग उनकी प्रवृत्तियों को इस ओर मोड़ने के लिए देना चाहिए। उनका ऐसा नेतृत्व करना चाहिए कि विघातक प्रवृत्तियों को छोड़कर वे रचनात्मक प्रवृत्तियों में रस लेने लगें और उनके अभ्यस्त बनकर अपना असंख्य दूसरों का भला कर सकें।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अणु वैज्ञानिक नील्स बोहर ने प्रतिज्ञा की कि वे अपनी बौद्धिक सामर्थ्य का उपयोग केवल मानव कल्याण में ही करेंगे। अभी प्रतिज्ञा किए कुछ ही दिन बीते थे कि उन्हें नाजी पकड़ ले गए और अणु अस्त्र बनाने का दवाब डालने लगे। उन्होंने पहले तो प्रलोभन दिए पर जब नील्स बोहर नहीं झुके तो उन्हें भूखा रखा, मारा-पीटा और मशीनों में बाँधकर खिंचवाया तक, पर वे प्रण से जरा भी विचलित न हुए। अंत में मछुओं ने उन्हें कोपेन्हेगेन से अमरीका पहुँचाया। वहाँ वे आजीवन मानव की भलाई के काम में लगे रहे।

आज संसार ने उत्कृष्टता के आभूषण उतार दिए हैं और निकृष्टता का चोला धारण कर लिया है। विचार-पद्धति और कार्य-प्रणाली में निकृष्टता घुस पड़ने के कारण प्रेत-पिशाचों जैसे जीवन बन गए हैं और मरघट जैसा वीभत्स वातावरण बन गया है। धीरे-धीरे हम अन्तर्द्वंद्वों में—गृह-कलह में—परस्पर उत्पीड़न में निरत होकर सामूहिक आत्म-हत्या की ओर बढ़ते चले जा रहे हैं। इन परिस्थितियों में मानव-जाति की एक ही सेवा हो सकती है कि उसे बुद्धि-भ्रम, अविवेक एवं अशुभ चिंतन से बचाकर नीर-क्षीर विवेचना, ऋतंभरा प्रज्ञा का आश्रय लेने के लिए तत्पर किया जाए। आज की स्थिति में समाज की यही सबसे बड़ी सेवा है। विचार क्रांति ही वर्तमान दुर्दशा को पलटकर धरती पर स्वर्ग का अवतरण संभव कर सकेगी।

विचार क्रांति के लिए आदर्शवादी विचार-धारा का प्रतिपादन करने वाले पुस्तकालयों की सबसे बड़ी आवश्यकता है। देव-मंदिरों की तरह आज ज्ञान-मंदिरों की—पुस्तकालयों की स्थापना नितांत आवश्यक है, जिनसे जीवन को आदर्शमय बनाने और सामयिक उलझनों को सुलझाने वाला प्रकाश मिल सके। ऐसी पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाएँ जहाँ आती हैं, लोगों के पास तक उस साहित्य को पहुँचाने और लाने देकर अपनी कमाई को धन्य बना सकते हैं। पूर्वजों की स्मृति किसी को बनानी हो तो उनके नाम पर पुस्तकालय ही स्थापित करना चाहिए। परस्पर मिल-जुलकर चंदे से भी ऐसी संस्था स्थापित की जा सकती है। कोई ऐसा प्रबंध न हो सके तो व्यक्तिगत रूप से भी "झोला पुस्तकालय" बनाकर घर-घर ऐसा प्रेरक साहित्य पहुँचाने का पुण्य परमार्थ किया जा सकता है।

ईश्वर चंद्र विद्यासागर को शिक्षा विभाग में ५००) रुपए मासिक की सर्विस मिल गई। पर पहले ही महीने ५०) रुपए खर्च करके जब

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उन्होंने ४५०) रुपए बचाकर उन्हें शिक्षा प्रसार कार्यों के लिए दान दे दिया तो अंग्रेज ने पूछा—वेतन आपकी सुख-सुविधा के लिए मिलता है, फिर अपने लिए इतना कम खर्च क्यों ? ईश्वरचंद्र विद्यासागर बोले—महाशय ! यह सारा समाज ही मेरा घर है। मुझे याद है कि मैंने कितने कष्ट उठाकर विद्या पाई है, अब मेरा कर्त्तव्य है कि मेरे जो भाई इस अभाव में पिछड़ रहे हैं उनके लिए कुछ करूँ। वे अपनी कमाई आगे भी शिक्षा प्रसार में खर्च करते रहे।

अपने देश में शिक्षा की बड़ी कमी है। लोग अभी भी शिक्षा की उपयोगिता समझ नहीं पाए हैं। देहातों में बहुत लोग अपने लड़कों को पढ़ने नहीं भेजते। लड़कियों को पढ़ाने का रिवाज तो बहुत कम है। हमें टोलियाँ बना कर घरों में जाना चाहिए और शिक्षा योग्य लड़के-लड़कियों को स्कूल भिजवाने की प्रेरणा देनी चाहिए। सरकारी और गैर सरकारी स्कूल खुलवाने चाहिए। वयस्क पुरुषों के लिए तथा महिलाओं के लिए तीसरे पहर अथवा रात्रि को चलने वाली प्रौढ़-पाठशालाएँ स्थापित करनी चाहिये, पैसा या श्रम देकर ऐसी शिक्षा-संस्थायें लोग हर जगह चला सकते हैं। इन कार्यों के लिए सार्वजनिक धन-संग्रह भी किया जा सकता है। काम से लगे हुए व्यक्ति आगे पढ़ने के लिए जिनमें सुविधा प्राप्त कर सकें, ऐसे रात्रि विद्यालय तथा छात्रों की सहायता करने वाले कोचिंग स्कूल हर जगह चलने चाहिए। छोटे बच्चों के लिए मुहल्ले-मुहल्ले में शिशु मंदिर होने चाहिए। शिक्षा का जितना विकास संभव हो सके सरकारी और गैर सरकारी दोनों स्तरों पर इसके लिए पूरा-पूरा प्रयत्न करना चाहिए। अपने ८० प्रतिशत अशिक्षित देशवासियों को साक्षर बनाकर ही हम उन्हें अविवेक, रूढ़िवादिता के चँगुल से निकाल सकते हैं।

आज की ज्वलंत समस्याओं का स्वरूप समझने और उनका हल प्राप्त करने के लिए समय-समय पर स्थान-स्थान पर विचार-गोष्ठियों के आयोजन होते रहने चाहिए, जिनमें प्रश्न और उत्तर के रूप में आज की वैयक्तिक और सामाजिक समस्याओं का निराकरण समझने की सुविधा सर्वसाधारण को मिल सके।

महर्षि दधीचि की पैनी दृष्टि से इंद्र छिप न सके, फिर भी उन्होंने कहा—ब्राह्मण ! यह देवत्व की रक्षा का सवाल है इसलिए मैं आत्मोसर्ग के लिए प्रस्तुत हूँ। यह कहकर उन्होंने देह से अपने प्राण निकाल लिए और अपनी हड्डियाँ वज्र बनाने हेतु दान कर दीं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समाज-सेवा का सबसे पहला कार्य जन-मानस में विवेकशीलता जगाना है, ताकि लोग अपनी अवाँछनीय आदतें और अवाँछनीय रूढ़ियों को छोड़कर औचित्य अपनाने और सन्मार्ग पर चलने के लिए तत्पर हो सकें। यह कार्य जिन प्रयत्नों से हो सकता हो उन्हें सर्वोत्तम समाज-सेवा माना जाएगा। हममें से हर भावनाशील व्यक्ति को मन से इस प्रकार के कार्यों की व्यवस्था करने में संलग्न होकर अपना परम पवित्र कर्त्तव्य पालन करना चाहिए।

प्रश्न

१. अन्य पशुओं से मनुष्य आर्थिक, निवास एवं आहार के आधारों पर अलग है ?
२. मनुष्य किस तरह सामाजिक प्राणी है ?
३. सामाजिक जीवन जीने के लिए मनुष्य को क्या करना चाहिए ?
४. समाज के कई ऋण हमारे ऊपर हैं, इन्हें चुकाने के लिए हमें क्या करना चाहिए ?
५. क्या हम अपना सारा समय, सारी संपत्ति देकर समाज का भला कर सकते हैं ?
६. सामाजिक जीवन के उत्कर्ष के लिए हमें क्या करना होगा ?
७. आज के सामाजिक जीवन की सबसे बड़ी सेवा क्या है ?
८. विचार क्रांति अभियान की आदर्शवादी विचारधारा का प्रतिपादन करने के लिए किस प्रकार से कार्य किया जाना चाहिए ?
९. समय की महत्त्वपूर्ण आवश्यकता शिक्षा के प्रचार के लिए हमें किस तरह अपना कर्त्तव्य पूरा करना होगा ?
१०. समाज के हित में विचार गोष्ठियों का आयोजन किस हद तक अपना महत्त्व रखता है ?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सज्जनता और मधुर व्यवहार

किसके भीतर क्या है, इसका परिचय उसके व्यवहार से जाना जा सकता है। जो शराब पीकर और लहसुन खाकर आया होगा, उसके मुख से बदबू आ रही होगी। इसी प्रकार जिसके भीतर दुर्भावनाएँ, अहंकार और दुष्टता का ओछापन भरा होगा, वह दूसरों के साथ अभद्रता पूर्ण व्यवहार करेगा। उसकी वाणी से कर्कशता और असभ्यता टपकेगी। दूसरे से इस तरह बोलेगा जिससे उसे नीचा दिखाने, चिढ़ाने, तिरस्कृत करने और मूर्ख सिद्ध करने का भाव टपके। ऐसे लोग किसी पर अपने बड़प्पन की छाप नहीं छोड़ सकते, उल्टे घृणास्पद और द्वेषभाजन बनते चले जाते हैं। कटुवचन मर्मभेदी होते हैं, वे जिस पर छोड़े जाते हैं, उसे तिलमिला देते हैं और सदा के लिए शत्रु बना लेते हैं। कटुभाषी निरंतर अपने शत्रुओं की संख्या बढ़ाता और मित्रों की घटाता चला जाता है।

महाराज अंबरीष पर क्रुद्ध दुर्वासा उन्हें शाप देने की तैयारी करने लगे। क्रोध किसी को अच्छा नहीं लगता, फिर भगवान् ही को क्यों अच्छा लगता। उन्होंने अंबरीष की रक्षा और दुर्वासा को अनुचित करने का दंड देने के लिए अपना सुदर्शन चक्र भेजा। दुर्वासा बड़े-बड़े देवताओं की शरण में गए, पर सबने यही कहा—क्रोधी व्यक्ति को पास रखना अपना अहित करना है। अन्ततः दुर्वासा ने अंबरीश से क्षमा माँगी और तब कहीं जाकर सुदर्शन के कोप से बचे। दुर्वासा ऋषि थे, पर आवेश ग्रस्तता के दुर्गुण ने उनकी भी यह दुर्गति करा दी।

दूसरों के साथ असज्जनता और अशिष्टिता का बरताव करके कई लोग सोचते हैं, इससे उनके बड़प्पन की छाप पड़ेगी, पर होता बिल्कुल उल्टा है। तिरस्कारपूर्ण व्यवहार करने वाला व्यक्ति घमंडी और ओछा समझा जाता है। किसी के मन में उसके प्रति आदर नहीं रह जाता। आश्रित परिवार के सदस्यों और कुछ स्वार्थ-सिद्धि के लिए कानाफूसी करने वालों के अतिरिक्त और किसी की हमें दिलचस्पी नहीं रह जाती। उद्धत स्वभाव के व्यक्ति अपना दोष आप भले ही न समझें दूसरे लोग उन्हें उथला, हलका मानते हैं और उदासीनता, उपेक्षा का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

व्यवहार करने लगते हैं। समय पड़ने पर ऐसा व्यक्ति किसी को अपना सच्चा मित्र नहीं बना पाता और आड़े वक्त कोई उसके काम नहीं आता। सच तो यह है कि मुसीबत के वक्त वे सब लोग प्रसन्न होते हैं जिनको कभी तिरस्कार सहना पड़ा था। ऐसे अवसर पर वे बदला और कठिनाई बढ़ाने की ही बात सोचते हैं।

ऋषि कुमार सहसपाद को दूसरों का उपहास करने में बड़ा आनंद आता था। लोगों ने समझाया भी कि विनोद जब निर्दोष हो तभी तक ठीक होता है। किसी को बुरा लगे ऐसा उपहास नहीं करना चाहिए। सहसपाद ने सुनी-अनसुनी कर दी। आश्रम में एक और ऋषि बालक कदर्भ रहते थे। वह बड़े तपस्वी, नेक और सुशील थे, पर उन्हें सर्प से बड़ा डर लगता था। एक दिन सहसपाद ने घास पर सर्प बनाकर उन्हें डरा दिया। कदर्भ इतने डर गये कि मुर्छित होकर गिर गए। होश आने पर उन्होंने सहसपाद को शाप दे दिया जिससे उन्हें सर्प की योनि में जाना पड़ा।

हमें संसार में रहना है तो सही व्यवहार करना भी सीखना चाहिए। सेवा सहायता करना तो आगे की बात है, पर इतनी सज्जनता तो हर व्यक्ति में होनी चाहिए कि जिससे वास्ता पड़े उससे नम्रता सद्भावना के साथ मीठे वचन बोले, थोड़ी सी देर तक कभी किसी से मिलने का अवसर आए, तब शिष्टाचार बरते। इसमें न तो पैसा व्यय होता है, न समय। जितने समय में कटुवचन बोले जाते हैं, अभद्र व्यवहार किया जाता है उससे कम समय में मीठे और शिष्ट तरीके से भी बरता जा सकता है। जो बात कड़वेपन और रुखाई के साथ कही गई थी, उसे ही मिठास के साथ उतनी ही देर में कहा जा सकता है। उद्दत स्वभाव दूसरों पर बुरी छाप छोड़ता है और उसका परिणाम कभी-कभी बुरा ही निकलता है। अकारण अपने शत्रु बढ़ाते चलना, कुछ बुद्धिमानी की बात नहीं। इस प्रकार के स्वभाव का व्यक्ति अंततः घाटे में रहता है। जिसके साथ दुर्व्यवहार किया गया, अप्रसन्न केवल वही नहीं होता, वरन् जिनने उस प्रसंग को देखा, सुना है, वे भी दुःखी और असंतुष्ट होते हैं। उद्धतता के ओछेपन की बुरी छाप उन सुनने, देखने वालों पर पड़ती है और उनके मन में भी ऐसा व्यक्ति हेय स्तर का ही जँचता है ऐसे लोग किसी का सच्चा सम्मान नहीं पा सकते और उसके

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बिना सहयोग भी किसे मिलता है ? एकाकी मनुष्य जिसे दूसरों का सहयोग न मिल सके। कभी कोई बड़ी प्रगति न कर सकेगा।

डॉ० महेंद्रनाथ सरकार अपनी कार से कहीं जा रहे थे। मार्ग में परमहंस स्वामी श्री रामकृष्ण का आश्रम पड़ता था। जब वे पास से निकले तो एक व्यक्ति को शांत चित्त बैठे देखा। उन्होंने समझा कि माली है, सो उससे फूल तोड़कर लाने को कहा। उस व्यक्ति ने बड़ी प्रसन्नता के साथ फूल तोड़कर दे दिए। डॉ० महेन्द्रनाथ चले गए। दूसरे दिन वे परमहंस से मिलने गये, तो देखकर अवाक् रह गए कि जिस व्यक्ति ने उन्हें बिना किसी अभिमान के आदरपूर्वक फूल दिए थे, वह माली नहीं स्वयं रामकृष्ण परमहंस ही थे।

श्रेष्ठ, उदार और सज्जन प्रकृति के मनुष्य सदा दूसरों का आदर करते हैं और हर किसी से सम्मान और मिठास भरे शब्द बोलते हैं। इसमें उनका जाता कुछ नहीं अपने बड़प्पन की छाप ही दूसरों पर पड़ती है। उद्धतता से नहीं, सज्जनता से हम दूसरों का आदर पा सकते हैं, उन्हें अपना बना सकते हैं और ऐसे ही शिष्ट व्यवहार की आशा उनसे भी कर सकते हैं। सज्जनता में ही मनुष्य का वास्तविक बड़प्पन छिपा है और उसका प्रमाण मीठे वचन और शिष्ट व्यवहार से ही पाया जा सकता है। यह संसार कुँए की आवाज की तरह प्रतिध्वनि करता है। जैसा व्यवहार हम दूसरों के साथ करते हैं। लगभग उसी स्तर की प्रतिक्रिया उनसे हमें प्राप्त होती है। कटुवादी अहमन्य और तिरस्कार का व्यवहार करने वाले लगभग वैसा ही व्यवहार बदले में पाएँगे। हो सकता है तत्काल किसी कारणवश लोग वैसा ही बरताव न करें, पर उनके मन में वही भाव दूने-चौगुने वेग से अवश्य ही उठ रहे होंगे। अच्छा होता वे लड़ाई झगड़े के रूप में तत्काल निकल जाते, पर यदि वे दबे पड़े रहे तो कालांतर में ब्याज समेत छूटेंगे। तब और भी अधिक घातक सिद्ध होंगे। कटु व्यवहार की घातक प्रतिक्रिया जो दूसरों पर होती है, वह लौटकर अंततः अपने ही ऊपर आती है। हम दूसरे को तिरस्कृत, अपमानित करके वस्तुतः अपने को ही तिरस्कृत, अपमानित करते हैं। अपने ही ओछेपन और निकृष्ट व्यक्तित्व को दुनियाँ के सामने प्रसिद्ध करते हैं।

महाभारत युद्ध का पहला दिन दोनों सेनाएँ संग्राम के लिए आमने-सामने आ डटीं। युद्ध शुरू होने को ही था कि युधिष्ठिर रथ से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उतर कर कौरवों की सेना में घुस गए और जाकर द्रोणाचार्य, पितामह भीष्म आदि को प्रणाम किया और उनका आशीर्वाद लिया। इधर चिंतित अर्जुन ने कृष्ण से पूछा—'भगवन् ! महाराज यह क्या कर रहे हैं ? इस पर कृष्ण बोले—अर्जुन ! महाराज युधिष्ठिर ने गुरुजनों के प्रति हार्दिक सम्मान व्यक्त कर आधा महाभारत जीत लिया है। आधा शेष रहा उसे जीतने के लिए अब तुम सब युद्ध प्रारंभ करो।

सज्जनता, मनुष्यता का ही दूसरा नाम है, जिसमें सज्जनता नहीं उसे नर-पशु ही कहना पड़ेगा। हम सच्चे अर्थों में मनुष्य हैं, इसको प्रमाणित करने के लिए ही सज्जनता की रीति-नीति अपनानी चाहिए। इसका आरंभ मधुर भाषण और विनम्र एवं शिष्ट व्यवहार से होता है। छोटे या बड़े किसी से भी बात करनी हो तो हमें यह नहीं भूल जाना चाहिये कि कटु या ओछे वचन बोलकर जहाँ उसे तिरस्कृत करते हैं वहाँ अपने को भी ओछा सिद्ध करते हैं। हमें पहले अपनी चिंता करनी चाहिए। अपना स्वभाव स्तर और अभ्यास गिरा कर चाहे किसी की भर्त्सना की गई तो अपने लिए मँहगी पड़ेगी दूसरे लोग गंदे हैं, इसलिए हम क्यों गन्दे बनें ? हमें अपना स्तर हर हालत में ऊँचा उठाए रहना चाहिए और जिससे भी जो कुछ भी कहना हो, उसे कहें तो, पर सज्जनता और शिष्टता की भाषा में ही बोलें। अच्छे शब्दों में भी हर बुरी-भली बात कही जा सकती है। इस कला को सीख लेना भलमनसाहत का पहला चिह्न है।

घर में छोटों से भी "आप" या "तुम" कहकर बोलना चाहिए। जहाँ आवश्यकता हो वहाँ नाम के आगे "जी" भी लगाना चाहिए। "तू" कहना अधिक निकटवर्ती स्त्री, पुत्र, पौत्र आदि के लिए ही चलता है। इसमें आत्मीयता का पुट माना जाता है, पर इसमें दोष अपनी आदत बिगाड़ने का है। दूसरे वे लोग जिन्हें "तू" से संबोधन किया जाता है, देखा-देखी दूसरों से भी वैसा ही कहने लगेंगे। आवश्यकता इस बात की है कि मनुष्य एकमात्र दूसरे की आयु, शिक्षा, धन अथवा पद का विचार किए बिना एक दूसरे के प्रति नम्रता और आदर भरा व्यवहार एवं वार्तालाप करें।

जब हम किसी से मिलें या कोई हमसे मिले, प्रसन्नता व्यक्त की जानी चाहिए। मुस्कराते हुए अभिवादन करना चाहिए और बिठाने बैठने, कुशल समाचार पूछने और साधारण शिष्टाचार बरतने के बाद आने का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कारण पूछना, बताना चाहिए। यदि सहयोग किया जा सकता हो, तो वैसा करना चाहिए। इसी प्रकार यदि दूसरा कोई सहयोग नहीं कर सका है, तो भी उसका समय लेने और सहानुभूति रखने के लिए धन्यवाद देना चाहिए तथा नाराजगी एवं अविश्वास उस हालत में भी व्यक्त नहीं करना चाहिए। साधारण पूछताछ का उत्तर भी मीठे और सहानुभूतिपूर्ण शब्दों में ही होना चाहिए। रूखा, कर्कश, उपेक्षापूर्ण अथवा झल्लाहट, तिरस्कार भरा उत्तर देना ढीठ और गँवार को ही शोभा देता है। हमें अपने को इस पंक्ति में खड़ा नहीं करना चाहिए।

जापान के सम्राट हिरोहितो के १६ वर्षीय पौत्र हिमा शकुनी ने ओलंपिक खेलों के दौरान अपना नाम खिलाड़ियों को खाना खिलाने वाले बैरों में लिखाया। राज्य परिवार के लोगों ने उन्हें ऐसा करने से रोका, तो राजकुमार ने उत्तर दिया—सेवा और सज्जनता द्वारा दूसरों को जो प्रेरणा दी जा सकती है, वह पद और प्रतिष्ठा द्वारा नहीं दी जा सकती।

बड़े जो व्यवहार करेंगे बच्चे वैसा ही अनुकरण सीखेंगे। यदि हमें अपने बच्चों को अशिष्ट, उद्दण्ड बनाना हो, तो हमें असभ्य व्यवहार की आदत बनाए रहनी चाहिए अन्यथा औचित्य इसी में है कि आवेश, उत्तेजना, उबल पड़ना, क्रोध में तमतमा जाना, अशिष्ट वचन बोलना और असत्य व्यवहार करने का दोष अपने अंदर यदि स्वल्प मात्रा में हो, तो भी उसे हटाने के लिए सख्ती के साथ अपने स्वभाव के साथ संघर्ष करें और तभी चैन लें, जब अपने में सज्जनता की प्रवृत्ति का समुचित समावेश हो जाए।

सुप्रसिद्ध साहित्यकार भारतेंदु हरिश्चंद्र बड़े उदार थे, यहाँ तक कि दूसरों की सेवा में ही कंगाल हो गए। एक दिन उनके पास आवश्यक पत्र भेजने को भी पैसे न बचे, तब एक मित्र ने पाँच रुपए दिए। कुछ दिन बाद भारतेंदुजी की आर्थिक स्थिति फिर संभल गई। वे अपने उन मित्र को जब भी आते जेब में पाँच रुपए रख देते। एक दिन मित्र महोदय बड़े नाराज हुए तो भारतेंदु जी भरे हृदय से बोले—आपने गाढ़े समय में मेरी सहायता की थी। उस ऋण से तो मैं कभी भी उऋण नहीं हो सकता।

हम अपनी और दूसरों की दृष्टि में सज्जनता और शालीनता से परिपूर्ण एक श्रेष्ठ मनुष्य की तरह अपना आचरण और व्यक्तित्व बना सकें तो समझना चाहिए कि मनुष्यता की प्रथम परीक्षा में उत्तीर्ण हो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गए। उसके आगे के कदम नैतिकता, सेवा, उदारता, संयम, सदाचार, पुण्य, परमार्थ के हैं। इसमें भी पहली एक अति आवश्यक शर्त यह है कि हम सज्जनता की सामान्य परिभाषा समझें और अपनाएँ, जिसके अंतर्गत मधुर भाषण और विनम्र शिष्ट एवं मृदु व्यवहार अनिवार्य हो जाता है।

प्रश्न

१. मित्रों की संख्या बढ़ाने का सर्वोत्तम उपाय कौन-सा है ?
२. मनुष्य का वास्तविक बड़प्पन किसमें है ?
३. कटु व्यवहार की कैसी प्रतिक्रिया होती है ?
४. मनुष्यता का सच्चा स्वरूप किसमें है ?
५. संभाषण में शिष्टाचार के नियम बताइए ?
६. अपरिचित व्यक्ति से मिलने पर कैसा व्यवहार करना चाहिए ?
७. बच्चों को शिष्टाचारी बनाने का उपाय क्या है ?
८. जीवन की प्रथम परीक्षा में उत्तीर्ण होने का उपाय क्या है ?
९. सज्जनता की सामान्य परिभाषा क्या है ?
१०. आदर्श जीवन के लिए कौन-कौन से गुण अपनाने अनिवार्य है ?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नागरिक कर्त्तव्य पालन

समाज में स्वस्थ परंपराएँ कायम बनी रहें उसी से अपंनी और सबकी सुविधा बनी रहेगी। यह ध्यान में रखते हुए हममें से प्रत्येक को अपने नागरिक कर्त्तव्यों का पालन करने में भावनापूर्वक दत्तचित्त होना चाहिए। समाज सबका है। सब लोग थोड़ा-थोड़ा बिगाड़ करें, तो सब मिलकर बिगाड़ की मात्रा बहुत बड़ी हो जाएगी। किन्तु यदि थोड़े-थोड़े प्रयत्न सुधार के लिए चल पड़ें, तो उस सुधार से सब मिलाकर सुधार भी बहुत हो सकता है। उचित यही है कि हम सब मिलकर अपने समाज को सुधारने, संचालित करने और स्वस्थ परंपराएँ प्रचलित करने का प्रयत्न करें और सभ्य, सुविकसित लोगों की तरह भौतिक एवं आत्मिक प्रगति का सुख संतोष प्राप्त कर सकें।

बच्चा तालाब में डूब रहा था और उसका पिता किनारे पर खड़ा उपदेश दे रहा था—ले मेरा कहना न मानने का फल भुगत, तभी एक सज्जन उधर से आए और कूद कर बच्चे के प्राण बचाए। बाहर निकले तो पिता से बोले—महोदय ! उपदेश हमेशा अच्छा नहीं होता। कर्त्तव्य भी निबाहना चाहिए।

दूसरों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए अपनी सुविधा और स्वतंत्रता को स्वेच्छापूर्वक सीमित करना, सभ्य देश के सभ्य नागरिक का कर्त्तव्य है। स्वच्छता को ही लीजिए, कहीं भी नाक, थूक साफ करना, पान, तमाखू की पीक डाल देना, अपने लिए कुछ दूर जाने का कष्ट भले ही बचाए, पर दूसरों को घृणा असुविधा पैदा होगी और यदि अपने को कोई रोग है तो उसका आक्रमण उस गंदगी में आने-जाने वाले पर होगा। यदि भले ही कोई रोके नहीं पर हमारा नागरिक कर्त्तव्य है कि दूसरों की असुविधा को ध्यान में रखते हुए स्वयं उस गंदगी को डालने के योग्य उपयुक्त स्थान तक जाकर उसे साफ करें। बीड़ी-सिगरेट हम पीते हैं तो ध्यान रखें कि अपने अस्वच्छ धुआँ छोड़ने से पास में बैठे हुए दूसरे लोगों की तबियत खराब तो नहीं होती, स्वयं ही पता लगाएँ कि किसी को असुविधा तो नहीं होती। यदि हमारी उस क्रिया को दूसरों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

को तकलीफ होती है तो सभ्यता का तकाजा यही है कि कहीं अन्यत्र जाकर बीड़ी पिएँ और धुआँ छोड़ें।

एक दिन तुलाधार वैश्य के पास एक साधु जाकर बोले—बेटा ! जा कुछ दिन तीर्थयात्रा भी करके आ, उससे शांति मिलेगी। तुलाधार ने उत्तर दिया—मेरे गाँव में कितने ही लोग भूख से पीड़ित हैं, कितनों को दवा-दारु की आवश्यकता है। चार पैसे कमाकर इनके रोटी, कपड़े और दवा-दारु की व्यवस्था करता हूँ। यही मेरी तीर्थयात्रा है, इसी में मुझे शांति मिलती है। साधु की अपनी मिथ्या आस्तिकता का अहंकार दूर हो गया और उस दिन से तुलाधार को अपना गुरु मान लिया।

घरों की गंदगी लोग अक्सर गली या सड़क पर डाल देते हैं, उसमें रास्ता निकलने वालों को असुविधा होती है और सार्वजनिक स्थानों की स्वच्छता अस्त-व्यस्त होती है। उचित यही है कि घरों में कूड़ेदान रखें और जब सफाई कर्मचारी आवें तब उसे उठवा दें। छोटे बच्चों को अपने घरों में ही टट्टी कराने का प्रबंध करना चाहिए, यह अनुचित है कि गली की नाली के ऊपर उन्हें बिठावें और गंदगी बदबू तथा अशोभनीय अस्वच्छता से उस गली में रहने वाले तथा निकलने वालों को कष्ट पहुँचावें। छत की ऊपरी मंजिल से टूटा घड़ा फेंक देने से एक बार उस रास्ते से निकलने वाले बच्चे का सिर फूट गया और उसकी मृत्यु हो गई। सार्वजनिक स्थानों की स्वच्छता और व्यवस्था नष्ट करना यह बताता है कि इन घिनौने व्यक्तियों को मनुष्यता के आरंभिक कर्त्तव्य, नागरिकता, तक का ही ज्ञान नहीं है।

मुसाफिर खाने, धर्मशाला, पार्क, नदी किनारे, सिनेमाघर आदि सबके काम में आने वाले स्थानों में लोग जहाँ-तहाँ रद्दी, कागज, दोने, पत्ते, सिगरेट के खोखे, मूँगफली के छिलके आदि पटकते रहते हैं और देखते-देखते स्थान गंदगी से भर जाते हैं। रेल गाड़ियों के डिब्बों में जहाँ हर आदमी को घिचपिच बैठना पड़ता है, ऐसी गंदगी बहुत ही अखरती है। सँडासों में मलमूत्र का विसर्जन गलत स्थान पर करने से वहाँ की स्थिति ऐसी हो जाती है कि दूसरों को उसका उपयोग करना कठिन पड़ता है। जबकि कितने ही मुसाफिर खड़े चल रहे हैं तब कुछ लोग बिस्तर बिछाए टाँग लंबी किए लेटे ही रहते हैं और उठाने पर झगड़ते हैं। इन लोगों को मनुष्यता की आरंभिक शिक्षा सीखनी ही चाहिए कि सार्वजनिक उपयोग के स्थान या वस्तुओं का उतना ही उपयोग करें

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जितना कि अपना हक है। थर्डक्लास के डिब्बे बैठने भर के लिए हैं। खाली हो तो कोई लेट भी सकता है, पर जब कि अनेक मुसाफिर खड़े या लटकते चल रहे हैं और चन्द लोग लेटने का ऐसा आनंद उठाएँ जिसे प्राप्त करने का हक नहीं है तो फिर उसे ढीठता या पशुता कहा जाएगा।

प्रसिद्ध भारत भक्त अंग्रेज सी० एफ० एंड्रूज ने अपना जीवन हमारे देश की सेवा के लिए समर्पित किया। उनके वयोवृद्ध पिता का पैर सड़क पर पड़े हुए केले के छिलके पर से फिसला, वे नाली में गिरे, पैर टूटा, अस्पताल में पड़े रहे। उनकी मृत्यु का जिम्मेदार वह व्यक्ति था जिसने केले खाने की धुन में छिलका कहाँ फेंकना चाहिए इसका कोई ध्यान नहीं रखा। ऐसे ही लापरवाही से उन्हें सड़क पर फेंकता चला गया। यदि उसने केले खाते या छीलते हुए यह सोचा होता कि इस प्रकार सड़क पर छिलका फेंकने से दूसरों का पैर फिसल सकता है और उसे घातक चोट लग सकती है तो जरूर उसे छिलका फेंकने के लिए धैर्यपूर्वक उसके लिए उचित स्थान तलाश करने की बात याद रहती, पर जहाँ दूसरों की सुविधा की बात कभी ध्यान में ही आती न हो वहाँ ऐसा विचार करने का कष्ट कौन उठाए ? नारंगी आदि के छिलके लोग यों ही फेंकते रहते हैं और आए दिन दुर्घटनाएँ होती रहती हैं।

कितने ही लोग गाय पालते हैं और दूध दुह कर उन्हें आवारा यह समझ कर छोड़ देते हैं किसी की चीज खाकर अपना पेट भर लाएगी और हमें दूध देगी। गौ माता के प्रति प्रचलित श्रद्धा के आधार पर कोई उसे मारेगा नहीं और अपना काम बन जाएगा। इस तरह वह गाय लोगों की वस्तुएँ खाकर बखेर कर दूसरों का रोज नुकसान करती और पिटती-कुटती रहती है। इस तरह दूसरों को कष्ट देने तथा स्वयं लाभ उठाने को क्या कहा जाए ? स्वयं कीर्तन करने का मन है तो अपने घर में पूजा के उपयुक्त मंद स्वर में प्रसन्नता पूर्वक करें। पर लाउडस्पीकर लगाकर रातभर धमाल मचाने और पड़ौस के बीमारों, परीक्षार्थियों तथा अन्य लोगों की नींद नष्ट करने वाली ईश्वर भक्ति से भी पहिले हमें अपनी नागरिक मर्यादाओं और जिम्मेदारियों को समझना चाहिए। जिसका अर्थ है कि दूसरों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए अपनी स्वेच्छा को स्वेच्छापूर्वक सीमाबद्ध करना।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बात बंगाल के कुमिल्ला जिले की है। एक अतिथि के स्वागत में मेजवानों ने तरह-तरह के मिष्ठान्न व पकवान बनवाए, माननीय अतिथि भोजन के लिए बैठे और उतना सारा तरह-तरह का भोजन परोसा गया, तो वह देखते ही उठ खड़े हुए और बोले—जिस देश में हजारों लोगों को एक समय भोजन मिलता हो, वहाँ ऐसा भोजन करने का अधिकार नहीं। यह अतिथि सीमांत गाँधी खान अब्दुल गफ्फार खाँ थे।

वचन का पालन और ईमानदारी का व्यवहार मनुष्य का प्राथमिक एवं नैतिक कर्त्तव्य है। जिस समय पर जिससे मिलने का कोई वस्तु देने का काम पूरा कर देने का वचन दिया है। उस वचन को ठीक समय पर पूरा करने का ध्यान रखना चाहिए ताकि दूसरों को असुविधा का सामना न करना पड़े। यदि हम दर्जी या मोची हैं तो उचित है कि वायदे के समय पर उसे देने का शक्ति भर प्रयत्न करें। बार-बार तकाजे करने और निराश वापिस लौटने में जो समय खर्च होता है और असुविधा होती है उसे देखते हुए ऐसे दर्जी धोबी अपनी प्राप्त मजूरी से ग्राहक का चौगुना-दसगुना नुकसान कर देते हैं। भाषण करना है तो हमें ठीक समय पर पहुँचना और नियमित समय में ही पूरा करना चाहिए। समय का ध्यान न रखना सुनने वालों के साथ सरासर बेइंसाफी है। दावत जिस समय की रखी है, उसी समय आरंभ कर देनी चाहिए। मेहमानों को घंटों प्रतीक्षा में बिठाए रहना—एक प्रकार से उनका समय बर्बाद करना है। जिसे धन की बर्बादी के समान ही हानिकारक समझा जाना चाहिए।

वस्तु का मूल्य और स्वरूप जो बताया गया है वही वस्तुतः होना चाहिए, असली में नकली की मिलावट कर देना, दामों में घिसा पिटी करके कमीवेशी करना व्यापार करने वालों के लिए सर्वथा अशोभनीय है। नागरिक कर्त्तव्य की अवहेलना है। दाम अधिक बताया पीछे फिर घिस-घिस कर कमी करना, अपनी विश्वसनीयता तथा प्रामाणिकता पर कलंक लगाना है। असली और नकली अलग-अलग बेची जाएँ और उनके दाम वैसे ही महँगे, सस्ते स्पष्ट किए जाएँ तो व्यापारी की साख बढ़ेगी और ग्राहकों का समय बचेगा तथा संतोष होगा। एक दुकानदार असली लालमिर्च बेचते थे और उचित दाम बताते थे जो बाजार के हिसाब से कुछ महँगे पड़े थे। ग्राहक जब पूछते तो पिसा हुआ गेरू सामने रखकर वे पूछते आप जितना कहें उतना गेरू मिर्चों में मिला दूँ। उतने ही दाम सस्ते हो जाएँगे। दूसरी दुकान पर बिकने वाली लाल

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मिर्चों का नमूना मँगाकर वे पानी में घोलते और नीचे जब गेरू बैठ जाता तब कहते यह मिलावट ही सस्तेपन का कारण है। ग्राहक वस्तुस्थिति समझ जाता और फिर सदा उसी दुकान से मँहगे दाम के शुद्ध मसाले खरीदता। ईमानदारी घाटे का सौदा नहीं है। वह प्रामाणिकता एवं विश्वसनीयता की परीक्षा भर चाहती है। इस कसौटी पर सही होना हर व्यवसायी का नागरिक कर्त्तव्य है। यह कर्त्तव्य पालन व्यक्ति का सम्मान भी बढ़ाता है और व्यवसाय भी।

दूसरों की असुविधा को ध्यान में रखते हुए अपनी सुविधा को सीमाबद्ध रखना, शिष्टता और सभ्यता भरा मधुर व्यवहार करना और मीठे वचन बोलना, वचन का पालन करना, प्रामाणिकता और विश्वस्तता की रीति-नीति अपनाना, समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को ठीक तरह निभाना नागरिक कर्त्तव्यों का शुभारंभ है। इतना तो हममें से प्रत्येक को सीखना और करना ही चाहिए, अपने आचरणों से समाज में स्वस्थ परंपराओं का प्रचलन करके हम वह स्थिति उत्पन्न कर सकते हैं जिससे सभ्य समाज में शिष्ट नागरिकों की तरह हम ठीक जी सकें और दूसरों को जीने दे सकें।

रेलगाड़ी आने का समय हो गया है, इधर पुल टूटा पड़ा है। भेड़ चरा रहे बालक ने जब यह देखा, तो उसका हृदय आशंका से भर गया। भेड़ों को छोड़कर वह रेल की पटरी के सहारे उधर ही भागा जिधर से रेल आनी थी। थोड़ी देर में रेल आती दिखाई दी। उसने अपना कुर्त्ता उतार कर हिलाना और खतरे की सूचना देना शुरू किया। ड्राइवर कुछ समझा नहीं, पर युवक को पटरी से हटाने के लिए बराबर सीटी देता रहा। युवक पीछे हटता भी जाता था और कपड़ा भी हिलाता जा रहा था। रेलगाड़ी रुकते-रुकते उसकी छाती पर पहुँच गई। ड्राइवर और अन्य सवारियों ने उतर कर देखा तो दस गज की दूरी पर पुल टूटा पड़ा था। लोगों में उस नागरिक के प्रति श्रद्धा उमड़ आई।

प्रश्न

१. अपने देश के प्रति नागरिक का कर्त्तव्य क्या है ?
२. दूसरों की सुविधा का ध्यान रखने से क्या लाभ होता है ?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

३. घर, मुहल्ले एवं नगर में सफाई रखने के लिए क्या किया जाए ?
४. नागरिकता किसे कहते हैं ? सार्वजनिक स्थानों पर लोग किस प्रकार गंदगी फैलाते हैं ?
५. मनुष्यता की आरंभिक शिक्षा क्या है ?
६. ईश्वर भक्ति से भी पहले नागरिक मर्यादाओं एवं जिम्मेदारियों को क्यों निभाना चाहिए ?
७. मनुष्य का प्रामाणिक एवं नैतिक कर्त्तव्य क्या है ?
८. समय की बर्बादी धन की बर्बादी से भी अधिक अहितकर है, सिद्ध करें ?
९. व्यायाम में सफलता का रहस्य क्या है ?
१०. मिलावट से क्या हानि है ?

● ●

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

व्यक्तिगत स्वार्थ और सामाजिक सुव्यवस्था

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है उसकी प्रक्रिया का इतिहास यही प्रतिपादित करता है। पारस्परिक सहकारिता और उदारता के भावनात्मक सद्गुणों ने वह स्थिति पैदा की जिसके अनुसार लोग एक दूसरे को अपना बौद्धिक और क्रियात्मक सहयोग दे सकें और इस विनिमय ने ज्ञान, अनुभव, साधन, उत्पादन, चिंतन एवं विकास के अनेक द्वार खोले। इसी सड़क पर चलता हुए दुर्बल मानव प्राणी वर्तमान स्थिति तक पहुँच सकने में समर्थ हुआ है। यदि वह एकाकी, अपने आप तक सीमित, स्वार्थी सहयोग में रुचि न लेने वाला और अनुदार रहा होता, तो प्रकृति के झंझाबातों में संभव है उसका अस्तित्व ही, अनेक प्रागैतिहासिक प्राणियों की तरह लुप्त हो गया होता। ऐसा न होता तो भी सहयोग साधना के बिना उसका वर्तमान विकसित स्थिति तक पहुँच सकना असंभव था। बुद्धि की महत्ता बहुत मानी जाती है और श्रेय भी उसी को दिया जाता है, पर तथ्य यह है कि बुद्धि का विकास भी सामाजिक और परस्पर सहयोग की मूल मानवीय प्रवृत्ति द्वारा संभव हुआ। इस प्रवृत्ति को चाहे तो मानव धर्म का मूल आधार भी कह सकते हैं।

एक रोगी व्यक्ति एक गड्ढे को भर रहा था। एक आदमी ने पूछा—यह गड्ढा क्यों भर रहे हो ? उसने बताया—मैंने सुना है कि यहाँ से इस देश के सैनिक गुजरेंगे। कहीं वे लोग अँधेरे में इस गड्ढे में न गिर जाएँ, इसलिए भर रहा हूँ। उस आगंतुक ने कहा—लेकिन तुम तो रोगी हो। इस पर उसने उत्तर दिया—हाँ ! संभव है मैं मर जाऊँ, पर सैकड़ों लोग मरें, उससे तो मेरा अकेले का ही मर जाना अच्छा है।

आज मनुष्य की आत्मनिर्भरता का अधिकांश भाग समाज के स्वरूप, स्तर और संगठन पर निर्भर है। वह ढाँचा जहाँ जितना मजबूत सुव्यवस्थित और सुसंस्कृत है, वहाँ व्यक्ति को विकसित होने की सुविधा उतनी ही अधिक मिल सकती और उतना ही आनंद, उत्साह का वातावरण बन जाता है। जहाँ यह व्यवस्था जितनी घटिया और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विसंगतियों में भरी है वहाँ उतनी ही असुविधाएँ और पीड़ाएँ नागरिकों को सहनी पड़ती हैं। इन बातों को ध्यान में रखते हुए आधुनिक दर्शन-शास्त्र, समाजशास्त्र, मनःशास्त्र एक ही प्रतिपादन करते हैं कि व्यक्ति अपनी सुख-सुविधाओं का जितना ध्यान रखता है और प्रयत्न करता है उससे कम नहीं, अधिक ही समाज की सुव्यवस्था और उज्ज्वल परंपरा बनाए रखने में भी सचेष्ट रहना चाहिए। इसी मनोवृत्ति को देशभक्ति, नागरिकता, कर्त्तव्यनिष्ठा, लोकसेवा परायणता, सज्जनता आदि नाम से पुकारते हैं।

धारा नगरी में आग लग गई। दो सुकुमार बच्चे आग की लपट में घिर गए। महाराज भोज चिल्लाए, जो इन बच्चों को बचायेगा, उसे पुरस्कार दिया जाएगा। भीड़ में से कोई आगे नहीं बढ़ रहा था, तभी एक ओर से एक व्यक्ति आया और आग में घुस गया। दोनों बच्चों को निकाल तो लाया, पर स्वयं बुरी रह जल गया। उपचार के बाद पहचान में आया कि वह तो महान् उदार और दयालु कवि माघ थे। भोज ने उन्हें शीश झुकाते हुए कहा—कविवर ! आज तो तुमने काव्य से भी अधिक अपनी कर्त्तव्य परायणता से हम सबको जीत लिया।

किसी जमाने में व्यक्ति अन्य पशुओं की तरह एकाकी और आत्मनिर्भर रहा हो, पर आज तो उसकी स्थिरता, सुविधा, व्यस्तता, प्रगति और प्रसन्नता सब कुछ समाज व्यवस्था पर निर्भर हो गई है। अन्न दूसरे उगाते हैं तब अपने को रोटी मिलती है। चौका में काम आने वाले बर्तन आदि उपकरण दूसरों ने बनाए हैं। वस्त्र, साबुन, जूते, कंघा, तेल जो उपलब्ध हैं, अन्यत्र बने हैं। इन्हें हम तक पहुँचाने में जिन यंत्रों, वाहनों और साधनों का प्रयोग हुआ है। वे दूसरे के बनाए हैं। दैनिक जीवन में प्रयोग होने वाली वस्तुओं के लिए हमें पूर्णतया दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता है। यदि यह सुविधाएँ न मिल सकें तो तथाकथित एकाकी और अति सीमित जीवन जी सकने की इन दिनों कल्पना कर सकना भी कठिन है।

डाकखाना, तार, रेल, मोटर, ज़हाज, रेडियो, सड़क, पुल, स्कूल, प्रेस, पुस्तकें, अस्पताल, कारखाने, बिजली आदि साधनों के बिना हम किस स्थिति में पहुँच जाएँगे, इसकी कल्पना करने पर पता चलता है कि उनके बिना हम क्या रह जाएँगे। सरकारी स्तर पर पुलिस, कचहरी, जेल, फाँसी, सेना, कानून, नियंत्रण, निरीक्षण, शिक्षा व्यवस्था आदि के जो कार्य चलते हैं, यदि वे न रहें तो सुरक्षा और व्यवस्था का सारा ढाँचा ही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लड़खड़ा जाए और सर्वत्र अनिश्चितता, आशंका और अशांति की काली घटाएँ ही छाई दीखें। कवि, कलाकार, गायक, साहित्यकार, चित्रकार, सन्त, सुधारक, लोकसेवी प्रतिभाएँ यदि अपने अनुदान देना बंद कर दें, तो सर्वत्र नीरसता और कर्कशता ही दीखे। गंभीरता से विचार करें तो प्रतीत होगा कि अपना और अपने परिवार का वर्तमान तथा भविष्य बहुत कुछ समाज की स्थिति पर निर्भर करता है। चोर, गुंडे, दुष्ट, दुराचारियों का बाहुल्य ही चले और हम उनके दायरे में घिरे रहें तो व्यक्तिगत रूप से सज्जन और धार्मिक होते हुए भी विषम परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा और आए दिन अवाँछनीय एवं आक्रमणात्मक दुष्टता का सामना करना पड़ेगा। इस स्थिति में अपनी सुरक्षा, शांति व्यवस्था और भविष्य की आशा में सब कुछ धूमिल तमसावृत बन जायेगी।

यह भली प्रकार समझ लिया जाना चाहिए कि समाज की स्थिति अच्छी रहना व्यक्ति की प्रगति और शांति की गारंटी है। यदि वह बिगड़ती है तो कोई भी चैन से न बैठ सकेगा। अपने देश में इन दिनों बढ़ी हुई अशिक्षा, मूढ़ता, अनैतिकता, और असामाजिकता ने प्रगति का पथ कितना अवरुद्ध कर रखा है तथा पग-पग पर कितने कंटक बखेर रखे हैं, उसका प्रभाव हम अपने वैयक्तिक और पारिवारिक जीवन पर पड़ता हुआ प्रत्यक्ष देखते हैं। मिलावट भरे और नकली खाद्य पदार्थ ही विवश होकर खरीदने पड़ते हैं और उनके कारण स्वास्थ्य गिरता चला जाता है। नकली दवा-दारू और ओछे चिकित्सकों ने हमारे स्वास्थ्य को बर्बाद कर दिया, कुसंस्कारी बच्चों के साथ मिलने-जुलने पर अपने बालक वैसे ही आवारा हो गए। पक्षपाती और अनाचारी अफसरों के नीचे रहने से प्रगति के द्वार बंद हो गए। गंदे साहित्य, चित्र, फिल्म और गानों ने घर की नई पीढ़ी को कुमार्गगामी कर दिया। चोरों ने श्रम-संचित पूँजी चुराकर दीन-दरिद्र बना दिया, गुंडा तत्वों ने हमारी नींद हराम कर दी। रिश्वतखोरी के कारण हमारा उचित काम हो ही न सका जबकि दूसरों ने उसी आधार पर अपने अनुचित कार्य आनन-फानन में करा लिए।

यह एक झाँकी है जो बताती है है कि सामाजिक अस्त-व्यस्तता की परिस्थिति में व्यक्ति की प्रगति, शांति और सुरक्षा असंभव है। इसलिए व्यक्तिगत सुख-सुविधाएँ बढ़ाने की तरह ही हमें सामाजिक सुव्यवस्था की बात परमार्थ देशभक्ति के आधार पर ही नहीं व्यक्तिगत सुविधा की दृष्टि से भी सोचनी चाहिए। सीमा पर सेना नियुक्त करके ही हम अपने नगर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

में शत्रु देशों के आक्रमण से बचे हुए हैं अन्यथा अलग-अलग लोग अपनी-अपनी सुरक्षा का प्रबंध करते तो आक्रमणकारी सामंत युग की तरह कत्लेआम करने, सारे शहर की लूट करने और समर्थ नर-नारियों को गुलाम बनाकर घसीट ले जाने के कुकृत्य आज भी कर रहे होते। सेना की नियुक्ति हर सीमा पर करके हमने अपने घर, नगरों की सुरक्षा का ही प्रबंध किया है। इसी तरह हम समाज निर्माण और समाज सुधार के कामों में दिलचस्पी लेते और योगदान देते हैं, तो न केवल अपनी, वरन् अपने स्वजन संबंधियों की सुख-सुविधा भी बढ़ाते हैं। स्वार्थ और परमार्थ का सुंदर समन्वय इसी में है कि व्यक्ति अपनी ही नहीं सारे समाज की प्रगति एवं व्यवस्था पर पूरा-पूरा ध्यान दें।

तानाजी के पुत्र का विवाह था। तभी कोंडण दुर्ग के लिए युद्ध की सूचना आ पहुँची। तानाजी ने कहा—अपने देश और समाज के आगे व्यक्तिगत स्वार्थ तुच्छ हैं, वह युद्ध के लिए चल पड़े। युद्ध में जीत उन्हीं की हुई, पर उनका शरीर काम आ गया। उनकी स्मृति में ही इस दुर्ग का नाम सिंहगढ़ रखा गया।

सुविकसित समाजों में व्यक्ति की सुरक्षा और प्रगति सुनिश्चित रहती है। बुढ़ापे के लिए वृद्ध-गृह, अशक्तों को पेंशन, रोगियों को चिकित्सा, बालकों को शिक्षा का अच्छे से अच्छा प्रयत्न सामाजिक स्तर पर बड़ी खूबसूरती के साथ हो सकता है। प्रगतिशील देशों में वैसा हो भी रहा है। बुढ़ापे या अशक्तता के लिए अपनी चिंता करते रहने में उतना सार नहीं है जितना इस बात में है कि समाज को सुविकसित करके इस योग्य बना दिया जाए कि हमारी और हमारे तरह के दूसरे लोगों की सुनिश्चितता का भार उठा सकने योग्य समाज की स्थिति को बना दिया जाए। बच्चों के लिए धन छोड़ जाने पर भी कोई निश्चिंतता नहीं, पर यदि समाज हर व्यक्ति को उचित काम देने में समर्थ हो जाता है तो बच्चों के लिए उत्तराधिकार में धन न छोड़ जाने पर भी निश्चिंतता बनी रहेगी कि उन्हें रोटी कमाने और सुख से रहने के साधन मिल जाएँगे।

इटावा के एक अध्यापक पुलिस थाने में रिपोर्ट लिखा चुके, तो थानेदार ने उनके मुँह की ओर ताकते हुए कहा—चोरी करने वाला तो आपका ही लड़का है। तो क्या हुआ ? आपका मतलब यह है कि मैं अपने बच्चे की सुरक्षा के लिए सामाजिक हित का परित्याग कर दूँ ?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उन अध्यापक ने कहा। थानेदार ने कहा—यदि हमारे देश में सभी ऐसे ही हो जाएँ, तो यह अपराध ही क्यों हों ?

व्यक्तिगत स्वार्थपरता जिसमें मनुष्य अपने और अपने बच्चों के लाभ भर की बात सोचता है वस्तुतः एक मानसिक ओछापन और बौद्धिक संकीर्णता भर है। हमें ध्यान रखना होगा कि मनुष्य तेजी से कठोर सामाजिकता के बंधन में आबद्ध होता चला जा रहा है। विज्ञान ने सारी दुनियाँ को एक कर दिया है और दूरी को समीपता में बदल दिया है। ऐसी दशा में सारा मानव समाज एक कुटुंब की तरह हो चला है। कुटुंब में एक आदमी मिठाई खाए और दूसरे भूखों मरें तो मिठाई खाने वाले को संकट में फँसना पड़ेगा। इसी प्रकार समाज का पिछड़ापन रहते, व्यक्तिगत उन्नति, समृद्धि और शौक-मौज के स्वप्न देखना सर्वथा अदूरदर्शिता है। हममें से प्रत्येक को समय, श्रम, मन और धन समाज को समुन्नत बनाने में व्यक्तिगत स्वार्थों की सुरक्षा की दृष्टि से भी लगाना चाहिये क्योंकि सुव्यवस्थित समाज रचना पर ही व्यक्तिगत सुविधाओं की स्थिरता पूर्णतया निर्भर रहती है।

एक बार भीषण अकाल पड़ा। मनुष्य और जीव-जंतु भूख और प्यास से तड़प-तड़प कर मरने लगे। तब नरमेध यज्ञ की व्यवस्था की गई, लेकिन अपने शरीर की बलि कौन दे ? यह प्रश्न उठ खड़ा हुआ ? तभी एक युवक सामने आया और बोला—लाखों लोगों की रक्षा के लिए मुझे प्राण गँवाने पड़ें, तो इसे मैं अपने शरीर की सार्थकता ही मानूँगा। युवक का त्याग देखकर भगवान् इंद्र मुग्ध हो गए। उन्होंने बिना बलि लिए ही जल बरसाया। यह युवक शतमन्यु के नाम से परोपकारी आकाश का जगमगाता नक्षत्र बन गया।

प्रश्न

१. मानव धर्म का मूल आधार क्या है ?
२. मनुष्य को व्यक्तिगत स्वार्थ की अपेक्षा सामाजिक सुव्यवस्थाओं पर ध्यान क्यों देना चाहिए ?
३. आधुनिक युग में एकाकी एवं अति सीमित जीवन जीना क्यों कठिन है ?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

४. सिद्ध कीजिए कि सुरक्षा और व्यवस्था का सारा ढाँचा समाज की ही देन है ?
५. व्यक्तिगत प्रगति एवं शांति के लिए क्या किया जाना चाहिए ?
६. समाज के विकृत होने से मानव भी विकृत कैसे हो जाता है ?
७. स्वार्थ एवं परमार्थ का समन्वय किस में है ?
८. सुविकसित समाज में क्या विशेषताएँ होती हैं ?
९. व्यक्तिगत स्वार्थपरता, मानसिक ओछापन एवं बौद्धिक संकीर्णता क्यों है ?

● ●

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नवयुवकों में सज्जनता और शालीनता

जीवन निर्माण का महत्त्वपूर्ण समय १२ से लेकर २० वर्ष तक की आयु तक रहने वाली किशोर अवस्था है। इस अवधि में मनुष्य गीली मिट्टी और सूखी लकड़ी की तरह जैसा उठती उम्र में बन गया प्रायः वैसा ही अंत तक बना रहता है। जो बूढ़े हो चले उन ढलती आयु के लोगों के दिन करीब हैं, उनके दोष-दुर्गुणों को सहन भी किया जा सकता है और उपेक्षा भी की जा सकती है, पर नई पीढ़ी के विकासवान् बालकों की उपेक्षा नहीं हो सकती। अगले दिनों महत्त्वपूर्ण भूमिकाएँ उन्हें ही संपादित करनी हैं। नेतृत्व उन्हीं के कंधों पर आने वाला है। वे जैसे भी कुछ भले-बुरे होंगे उसी के अनुरूप समाज की भावी संभावनाएँ बनेंगी। यदि हम निकट भविष्य में अपने समाज को समुचित, सुसंस्कृत देखना चाहते हैं तो सारा ध्यान अपनी होनहार उदीयमान पीढ़ी पर केंद्रित करना पड़ेगा।

कहना न होगा कि समस्त श्री, समृद्धि, प्रगति और शान्ति का सद्‌भाव मनुष्य के सद्‌गुणों पर अवलंबित है। दुर्गुणी व्यक्ति हाथ में आई हुई, उत्तराधिकार में मिली हुई समृद्धियों को गँवा बैठते हैं और सद्‌गुणी गई-गुजरी परिस्थितियों में रहते हुए भी प्रगति के हजार मार्ग प्राप्त कर लेते हैं। सद्‌गुणों की विभूतियाँ ही व्यक्तित्व को प्रतिभावान बनाती हैं और प्रखर व्यक्तित्व ही हर क्षेत्र में सफलताएँ वरण करते चले जाते हैं। विद्या, धन और स्वास्थ्य के आधार पर उन्नति करने की बात कही जाती है, पर उनसे भी बढ़कर प्रगति के आधार सद्‌गुण हैं। दुर्गुणी व्यक्ति अपने कौशल के आधार पर कुछ उपलब्धियाँ प्राप्त कर भी ले, तो उन्हें सुरक्षित नहीं रख सकता। इतना ही नहीं वह घमंड में उद्धत आचरण करके अपनी तथा दूसरों की शांति नष्ट करता है, अपने को तथा अपने समीपवर्ती समाज को संकट में डालता है।

पिता ने पुत्र को कुछ फल लाने को पैसे दिए। लड़का वहाँ से चल पड़ा, तो उसे एक कन्या दिखाई दी, जिसकी धोती फटी हुई थी। उसे अपने शरीर को ढके रखने में कष्ट हो रहा था। पुत्र ने पिता के दिए पैसे से एक धोती खरीदी और उस कन्या को देकर खाली हाथ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

घर लौटा। पिता ने पूछा—फल कहाँ है ? लड़के ने सारी बात सच-सच बता दी। पिता ने कहा—बेटा ! तूने तो अमरफल ला दिया। यही लड़का संत रंगदास के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

उठती आयु में सबसे अधिक उपार्जन सद्‌गुणों का ही किया जाना चाहिए। विद्या पढ़ी जाए सो ठीक है, खेल-कूद, व्यायाम आदि के द्वारा स्वास्थ्य बढ़ाया जाए, सो भी अच्छी बात है, विभिन्न कला-कौशल और चातुर्य सीखे जाएँ, वह भी संतोष की बात है, पर सबसे अधिक आवश्यकता इस बात की है कि इस आयु में जितनी अधिक सतर्कता और तत्परता पूर्वक सद्‌गुणों का अभ्यास किया जा सके, करना चाहिए। एक तराजू में एक ओर विद्या, बल, बुद्धि, धन आदि की संपत्तियाँ रखी जाएँ और दूसरे पलड़े में सद्‌गुण तो निश्चय ही यह दूसरा पलड़ा अधिक भारी और अधिक श्रेयस्कर सिद्ध होगा। दुर्गुणी व्यक्ति साक्षात् संकट स्वरूप है। वह अपने लिए पग-पग पर काँटे खड़े करेगा, अपने परिवार को त्रास देगा और समाज में अगणित उलझनें पैदा करेगा। उसका उपार्जन चाहे कितना ही बढ़ा-चढ़ा क्यों न हो, कुकर्म बढ़ाने और विक्षोभ उत्पन्न करने वाले मार्ग में ही खर्च होगा। ऐसे मनुष्य अपयश, घृणा, द्वेष, निंदा और भर्त्सना से तिरस्कृत होते हुए अंततः नारकीय यंत्रणाएँ सहते हैं।

अभिभावकों को केवल इतना ही नहीं सोचना चाहिए कि उनके बच्चे कमाऊ, चतुर और कोई पदाधिकारी बन जाएँ वरन् अधिक ध्यान इस बात का रखना चाहिए कि बच्चे सच्चरित्र, सद्‌गुणी, सज्जन एवं संस्कारवान बनें। यही उपलब्धि उनके जीवन की सबसे बड़ी लाभदायक संपदा सिद्ध होगी। इसी के आधार पर वे अपना जीवन सुखी एवं समुन्नत बना सकेंगे। सच्चा प्यार इसी को कहते हैं। वे अभिभावक ही अपने कर्त्तव्य पालन में सफल कहे जाएंगे, जिन्होंने अपने बच्चों को सद्‌गुणी बनाने में कुछ उठा नहीं रखा। सच्चे अध्यापक वे हैं, जो खेल, गणित, भूगोल, इतिहास आदि किताबी ज्ञान देकर ही निवृत्त नहीं हो जाते वरन् छात्रों की गतिविधियों में सद्‌गुणों की मात्रा बढ़ाने में संलग्न हैं।

कलकत्ता में वेट लिफ्टिंग दल के खिलाड़ियों का चयन करने के लिए प्रतियोगिता हो रही थी। निर्णायकों ने रोजेरियो को प्रथम घोषित किया। तभी रोजेरिया दौड़ता हुए पास पहुँच कर बोला—महोदय ! मुझे प्रथम मानकर आपने भूल की, यह अधिकार मुझसे पहले मित्र का है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

देखिए ! वजन उठाते समय मेरे घुटने जमीन से टिक गए थे, उसकी मिट्टी मेरे पैरों पर अभी तक लगी है। रोजेरियो की इस सज्जनता और सत्यता पर सभी लोग मुग्ध हो गए।

आज कुछ ऐसी गंदी हवा चली है, जिसने नई पीढ़ी की उद्धत एवं उच्छृंखल बनाने की विभीषिका खड़ी कर दी है। हमारे होनहार बच्चों में से अधिकांश में उच्छृंखलता, अवज्ञा, उद्दंडता, अनुशासनहीनता की मात्रा बहुत बढ़ती चली जाती है, यह चिंता की बात है। इसमें देश के दुर्भाग्य का खतरा छिपा हुआ है। परस्पर छुरेबाजी, अध्यापकों की अवज्ञा, परीक्षा में नकल, बिना टिकट यात्रा, लड़कियों को छेड़ना, सिनेमा के शौकीनी, श्रृंगार, सजावट की फिजूलखर्ची, उद्धत आचरण एवं वार्तालाप में विनय तथा शिष्टता का अभाव आदि कितने ही दुर्गुण अपने होनहार बालकों में देखते हैं तो भारी चिंता होती है कि इतने उथले व्यक्तित्व को लेकर वे किस प्रकार अपने भविष्य को उज्ज्वल और अगले दिनों जो जिम्मेदारी उनके कंधों पर आने वाली है, उसका निर्वाह किस प्रकार कर पाएँगे।

जो नवयुवक अपना भला-बुरा समझने की स्थिति में है, उन्हें गिरह बाँध लेनी चाहिए कि सभ्य समाज के जिम्मेदार नागरिक हमेशा अपने व्यक्तित्व को तेजस्वी बनाने के लिए सद्‌गुणों को अपने स्वभाव में निरंतर सम्मिलित करते रहते हैं। शिष्टता ही लोकप्रिय बनाती है। अनुशासनप्रिय व्यक्ति के अनुशासन में ही दूसरे लोग रहते हैं। सज्जनों को ही श्रद्धा मिलती है। सद्‌गुणी दूसरों का हृदय जीतते हैं और दशों दिशाओं में उन पर स्नेह, सहयोग बरसता है। इस राज-मार्ग को जिसने अपनाया उसे ही मनस्वी, तेजस्वी और यशस्वी बनने का अवसर मिला है और जो दुष्टता के दुर्गुणों में ग्रस्त हो गए, वे थोड़े समय औरों को आतंकित करके, क्षणिक रौब-दाब जमा सकते हैं और डरा धमका कर कुछ उल्लू सीधा कर सकते हैं, पर यह तनिक-सी सफलता अंततः बहुत मँहगी और भारी पड़ती है। लोगों की निगाह में जब व्यक्तित्व गिर गया और गुंडा या उपद्रवी माना जाने लगा तो समझना चाहिए कि सम्मान और सहयोग की स्थिति समाप्त हो गई। जीवन में प्रगति और शांति के लिए दूसरों की सद्‌भावना और सहायता की जरूरत पड़ती है, पर यह दोनों ही अनुदान केवल सज्जनों को मिलते हैं। आतंकवादी और उद्धत व्यक्ति किसी के हृदय में अपने लिए स्थान न बना सकेंगे, उनके लिए

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सबके भीतर घृणा और अविश्वास भरा रहता है। ऐसे व्यक्ति जीवन में कोई ऊँचा स्थान प्राप्त नहीं कर सकते और न उन्हें कोई बड़ी सफलता ही मिलती है।

भिक्षु कश्यप ने श्रावस्ती में योग के कई चमत्कार दिखाए, तो उनका यश दूर-दूर तक फैल गया, पर अब कश्यप को आत्म-कल्याण की साधनाओं के लिए समय ही न मिलता था। प्रशंसकों से घिरे रहते। यह देखकर भगवान् बुद्ध वहाँ पहुँचे और बोले—बेटा ! मनुष्य ने सदाचार का ध्यान न दिया, लोगों को प्रभावित करने में ही लग गया तो उसकी उन्नति का द्वार ऐसे ही घिर जाता है, जैसे तू अपने प्रशंसकों से घिर गया है।

हमारे नवयुवकों को समझना चाहिए कि ध्वंसात्मक दुष्प्रवृत्तियों को, अशिष्टता एवं उच्छृंखलता को अपना लेना अति सरल है। छिछोरे साथी अथवा उद्दत अगुआ लोग उठती आयु के बालकों को आसानी से गुमराह कर सकते हैं, पर शालीनता और सज्जनता का अभ्यास बनाना उनके बस की बात नहीं, इसलिए हेय व्यक्तित्व के जोशीले और उच्छृंखल लोगों को अपने ऊपर हावी ही नहीं होने देना चाहिये। उनके प्रभाव और सान्निध्य से दूर रहना चाहिए। अन्यथा उनकी मैत्री अपने को उच्छृंखल बना देगी और वह स्थिति पैदा कर देगी, जिसमें अपनी निज की ओर दूसरों की आँखों में अपना व्यक्तित्व गया-गुजरा, ओछा, कमीना, और निकृष्ट स्तर का बन जाए। इस स्थिति में जो पड़ा उसके सौभाग्य का सूर्य एवं उज्ज्वल भविष्य अस्त हो गया ही समझना चाहिए।

रामकृष्ण परमहंस की प्रशंसा में केशवचंद्र सेन ने एक लेख छपाया। रामकृष्ण परमहंस ने उसे पढ़ा, तो बड़े नाराज हुए और बोले—हमें यश की नहीं अपने चरित्र को उज्ज्वल बनाने की बात सोचनी चाहिए। चरित्रवान् का यश तो अपने आप उसी प्रकार फैलता है जिस प्रकार फूलों की सुगंध।

सभ्य, समुन्नत देशों के नवयुवक अपने राष्ट्रों की स्थिरता एवं प्रगति में भारी योगदान दे रहे हैं। उनकी प्रवृत्तियाँ रचनात्मक दिशा में लगी हैं। अध्ययन में गंभीर रुचि लेकर वे अपनी योग्यता बढ़ाते हैं, ताकि उपवास आने पर अपनी प्रतिभा को किसी भी कसौटी पर खरी सिद्ध कर सकें।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

एक हम हैं कि जिनके बच्चे हर कहीं सिर दर्द सिद्ध होते हैं। अभिभावक रुष्ट, अध्यापक दुःखी, साथी क्षुब्ध, स्वयं उद्विग्न। इस सबका एक ही कारण है—दुर्गुणों की मात्रा का बढ़ जाना। बुखार बढ़ने की तरह मर्यादाओं का उल्लंघन करने की प्रवृत्ति का बढ़ना भी खतरनाक है। अपने बालकों का उद्धत आचरण देखकर हम दुख, पश्चाताप और दुर्भाग्य की कल्पना करते रहें यह स्थिति हम सबके लिए लज्जाजनक है।

जो भी हो हमें अपने बच्चों को समझाने और सिखाने का हर कड़ुआ-मीठा उपाय करना चाहिए कि वे सज्जन, शालीन, परिश्रमी और सत्पथगामी बनें, इसी में उनका और हम सबका कल्याण है।

प्रश्न

१. निकट भविष्य में यदि हमें अपने समाज को समुन्नत देखना है तो हमें क्या करना चाहिए ? किस तरह करना चाहिए ?
२. मनुष्य की प्रगति किन गुणों पर अवलंबित है ? दुर्गुणी व्यक्ति तथा सद्गुणी व्यक्ति किस प्रकार भिन्न कहे जा सकते हैं ?
३. उठती आयु में हमें सद्गुणों के साथ-साथ और किन-किन गुणों को हस्तगत करना चाहिए ?
४. सद्गुण और अन्य गुणों में कौन-सा गुण श्रेष्ठ है ? व क्यों ?
५. दुर्गुणी व्यक्ति अपने स्वतः के लिए किस प्रकार हानिकारक है ?
६. सच्चे अध्यापक और सच्चे अभिभावक कौन कहे जा सकते हैं ? किस आधार पर ?
७. क्या आप बता सकते हैं कि आज के होनहार बालकों में कौन से दुर्गुण अधिक पाए जाते हैं ?
८. मर्यादा के उल्लंघन से क्या हानियाँ हैं ?
९. आज के युवकों में अनुशासनहीनता क्यों है ? उन्हें कैसे सभ्य नागरिक बनाया जा सकता है ?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जीवन लक्ष्य समझें

पत्थर गुस्से से बोला—फूल ! जानता नहीं तुझे अभी पीस कर रख दूँगा।

फूल मुस्कराया और बोला—तब तो आप बड़े उपकारी हैं, मुझे कुचलकर आप मेरी सुगंध और भी दूर-दूर तक फैलाने में सहायक होंगे। पत्थर अपनी अकड़ पर बड़ा लज्जित हुआ और अनुभव किया कि फूल का जीवन ही सच्चा और सार्थक है।

मनुष्य जीवन ईश्वर का एक अनुपम उपहार है। जो सुविधाएँ किसी जीव-जंतु को नहीं मिलीं वे मनुष्य को मिली हैं। हँसना, बोलना, लिखना, पढ़ना, सोचना, परिवार, चिकित्सा, उद्योग, निवास, वाहन, मनोरंजन आदि के जितने जैसे सुविधा-साधन मनुष्य को मिले हैं वैसे क्या किसी प्राणी को उपलब्ध हैं ?

यों ईश्वर को सभी जीव समान रूप से प्रिय हैं। वह सभी का पिता है इसलिए सभी के प्रति उसे सकरुण और पक्षपात रहित होना ही चाहिए। जो सुविधा अन्य किसी को नहीं मिली वे मनुष्य को मिली हैं, तो उसमें पक्षपात की गंध आती है और लगता है कि दूसरों की तुलना में उसे कुछ अधिक, अतिरिक्त दिया गया। ऐसा क्यों हुआ ? इस प्रश्न पर विचार करने से यह तथ्य सामने आता है कि ईश्वर ने सृष्टि की शांति, सुव्यवस्था, प्रगति, समृद्धि एवं सुंदरता की अभिवृद्धि के लिए मनुष्य को अपने सहायक सहचर के लिए रचा है और अपनी सारी विशेषताएँ, विभूतियाँ और सत्ताएँ इसमें भर दी हैं। ताकि वह इन पुण्य प्रयोजनों का ठीक तरह निर्वाह कर सकने में पूरी तरह समर्थ रहे। अतिरिक्त सुविधाएँ अमानत के रूप में मनुष्य को दी गई हैं, वह उसके लोभ, विलास और अहंकार की पूर्ति के लिए नहीं, वरन् इसलिए है कि लोक-मंगल के लिए वह अधिक योगदान दे सके।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मनुष्य बच गया तो उसे विदा करते हुए विधाता ने कहा—तात ! जाओ और संसार के प्राणियों का हित करते हुए स्वर्ग और मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करो, पर ऐसा कुछ न करना जिससे तुम्हें मृत्यु के समय पछतावा हो। भगवन आप एक कृपा और करना मुझे मरने से पहले चेतावनी अवश्य दे देना। क्योंकि यदि मैं मार्ग भ्रष्ट हो रहा होऊँ तो सँभल जाऊँ ? तथास्तु कहकर विधाता ने मनुष्य को धरती पर भेज दिया, पर यहाँ आकर मनुष्य इंद्रिय भोगों में पड़ कर अपने लक्ष्य को भूल गया, जैसे-जैसे आयु समाप्त हुई, कर्मों के अनुसार यमदूत उसे नरक ले जाने लगे, तो उसने विधाता से शिकायत की आपने मुझे मृत्यु से पूर्व चेतावनी क्यों नहीं दी। विधाता हँसे और बोले—(१) तेरे हाथ काँपे (२) दाँत टूट गए (३) आँखों से कम दिखने लगा (४) बाल पक गए, यह चार संकेत देने पर भी तू न सँभला तो इसमें मेरा क्या दोष ?

जिस प्रकार सृष्टि के अन्य प्राणी शरीर यात्रा की सामान्य सुविधा सामग्री पाकर संतुष्ट हो जाते हैं, मनुष्य को भी वैसा ही करना चाहिए। विलासिता, उपयोगी—संचय या अहंकार की पूर्ति से यदि उपलब्ध क्षमताएँ समाप्त कर ली जाती हैं और जीवनोद्देश्य की पूर्ति की ओर से आँखें मींच ली जाती हैं तो यही कहा जाएगा कि हम ईश्वर के महान प्रयोजन को भूल गए और लाखों योनियों में भ्रमण करने के बाद—चिरकाल पश्चात् जो एक अलभ्य अवसर मिला है उसे ऐसे ही गँवा दिया, तो यह बुद्धिमान समझे जाते हुए भी हमारी अबुद्धिमत्ता और अदूरदर्शिता ही सिद्ध होगी।

हमें लाभ-हानि का अंतर भली प्रकार मालूम है। अपने समस्त क्रिया-कलापों का निर्धारण इसी आधार पर करते हैं, फिर न जाने क्या आश्चर्य की बात है कि हमें मनुष्य जीवन जैसे अमूल्य अवसर का लाभ उठाने की बात नहीं सूझती और इसे ऐसे ही व्यर्थ की बाल-क्रीड़ाओं में गँवा देते हैं। गँवाते ही नहीं वरन् दुरुपयोग कर विविध विधि पाप कमाते हैं, जिससे भविष्य में इनका दंड अनेक जन्मों तक भुगतने के लिए विवश होना पड़ता है। इससे तो वे जीव जंतु अच्छे जो किसी प्रकार निर्वाह करके जैसे आए थे वैसे ही अपनी बेदाग चादर लेकर चले जाते हैं। अगले जन्मों के लिए पाप की गठरी और नारकीय यंत्रणा का भारी बोझ लेकर तो विदा नहीं होते। मनुष्य पिछले जन्मों के कष्टों को याद कर रोता हुआ ही आता है और भविष्य को अंधकारमय, यातनापूर्ण देखकर रोता हुआ ही विदा होता है। क्या इसी को बुद्धिमत्ता कहें—जिस पर मनुष्य इतराता और इठलाता फिरता है ?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

एक डॉक्टर धर्म-कर्म को नहीं मानता था, पर स्त्री बड़ी साधना शील और धर्म परायण थी। डॉक्टर कहता—मैं हजारों को बचा लेता हूँ, भगवान आकर क्यों नहीं बचा लेता। स्त्री तब तो कुछ नहीं बोली, पर कुछ दिन पीछे जब डॉक्टर के बाल सफेद हुए, दाँत टूटे, तो स्त्री ने कहा—डॉक्टर साहब ! अब आपके काले बाल, नए दाँत, नई मूछें कब तक निकलेंगी ? डाक्टर साहब कुछ उत्तर न दे सके। जो ज्ञान जीवन का अर्थ न समझा सके, वह निरर्थक है।

बाहर की बहुत बातें जानकर हम ज्ञानवान कहलाएँ यह ठीक है, पर यह भी कम आवश्यक नहीं कि हम जीवनोद्देश्य जैसे महत्त्वपूर्ण तथ्य का उपयोग करना सीखें और अपने स्वरूप, कर्त्तव्य के बारे में भी जानें, समझें, उन पर गंभीरता पूर्वक विचार करें। हमें यह सोचना ही चाहिए कि हम कौन हैं ? क्या हैं ? किस लिए हैं और अपने अस्तित्व की सार्थकता किस प्रकार सिद्ध कर सकते हैं ? यह आत्म बोध यदि न हो सका तो मनुष्य शरीर होते हुए भी नर-पशु और नर पिशाच जैसा घृणित जीवन जीना पड़ेगा। लक्ष्य भूलने वाला किधर भटक सकता है। आमतौर से हम सब भटक ही जाते हैं, अपने को शरीर मान बैठते हैं और शरीर की सुविधा, प्रसन्नता, तृष्णा, वासना और अहंकार की पूर्ति जैसे छुद्र प्रयोजनों के लिए ही सारी विचारणा और गतिविधियाँ केंद्रित किए रहते हैं। कामना आकाश पाताल की करते हैं। तृष्णाएँ पहाड़ जितनी समेटे रहते हैं।

लालसाओं और आकांक्षाओं की ललक में उलझे रहते हैं, मस्तिष्क की सारी चिंतन क्षमता उसी जंजाल में समाप्त हो जाती है। आत्म-कल्याण अथवा जीवन-लक्ष्य के बारे में सोचने की फुरसत ही नहीं रहती। इसी जंजाल में सारा समय निकल जाता है। सारी कार्य क्षमता उसी में उलझी रहती है। न सोचने की फुरसत मिलती है न कुछ करने की। व्यस्तता इतनी अधिक रहती है कि आत्म कल्याण की दिशा में न कुछ सोचते बनता है न करते। यह कैसी दुर्भाग्य पूर्ण स्थिति है कि जिस आत्मा को परमात्मा ने अपने प्राणप्रिय पुत्र की तरह असीम अरमानों के साथ अपने उद्यान को सुरभित बनाने के लिए भेजा था वह स्रष्टा के निर्देश और अपने वातावरण के उद्देश्य को सर्वथा उपेक्षित कर निर्बुद्धि प्राणियों की तरह पेट और प्रजनन के लिए ही अपने महान अस्तित्व को समाप्त कर दे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मीठे फल खाने की इच्छा से दो मित्र एक बगीचे में गए। माली ने कहा इस बगीचे के मालिक की आज्ञानुसार यहाँ एक ही दिन ठहर सकते हो सो शाम तक जितने फल खा सको, खा लो। दोनों अपनी रुचि के आम फल खाने चल दिए। एक तो उछल-उछल कर पेड़ों पर चढ़ा और पेट भर फल खा लिए। दूसरा देखता रहा—पौधों के लिए कैसी मिट्टी चाहिए, थाले कैसे बनाए जाते हैं, पानी कैसे लगाया जाता है ? शाम तक उसने एक नया बाग लगाने की सारी बातें जान लीं अलबत्ता फल नहीं खा सका। पर घर जाकर उसने दूसरा बाग लगा लिया, इतनी कथा कहने के बाद दरवेश ने अपने शागिर्दों से कहा—यह संसार भी ऐसा ही है। मनुष्य यहाँ एक निश्चित अवधि के लिए आता है, जो सांसारिक आकर्षणों में पड़े हैं, वे तो पहले युवक की भाँति हैं, समझदार वे हैं जो दूसरों की तरह परिस्थितियों का अध्ययन कर जीवन का सच्चा लक्ष्य प्राप्त करते हैं।

संभव हो तो हममें से प्रत्येक विवेकवान को अपनी इस स्थिति पर विचार करना चाहिए और संभव हो तो वह साहस जुटाना चाहिए, जिससे जीवन को निरंतर पश्चाताप का केंद्र बिंदु बनाने से बचाकर स्रष्टा की आकांक्षापूर्ति के लिए नियोजित किया जा सके। यदि ऐसी स्फुरणा अंतःकरण में जाग उठे—प्रबल हा उठे—तो समझना चाहिए कि अंतरात्मा में ईश्वर का प्रकाश चमकने लगा और भगवान् का अनुग्रह परिलक्षित होने लगा। जब कभी किसी में कार्मिक मूर्छना जागती है तो भीतर से ऐसी हूक, टीस, व्याकुलता और तड़पन उठती है कि एक क्षण भी बर्बाद किए बिना हमें ईश्वरीय प्रयोजन के लिए समर्पित जीवन जीना चाहिए। निर्वाह के स्वल्प साधनों से काम चलाना चाहिए और अपनी सारी क्षमताएँ एवं विभूतियाँ जीवन लक्ष्य की पूर्ति में नियोजित कर देनी चाहिए। इस प्रकार के ज्ञान का उदय ही आत्मबोध, आत्म साक्षात्कार अथवा ईश्वर दर्शन कहा जाता है।

दो पड़ौसी—एक ईमानदार और ईश्वर भक्त, दूसरा छल-कपट से भी धन कमाता और सांसारिक सुख भोगता। पहला आदमी यह देखकर दिन भर ईर्ष्या से कुढ़ता रहता। एक दिन भगवान से जाकर बोला—आपसे जो कुछ माँगा, धन, संपत्ति, स्त्री, पुत्र सब कुछ मिला, फिर भी सुखी नहीं हो पाया, सो क्यों ? भगवान हँसे और बोले—इसलिए कि तू भी वही चाहता है, जो कोई भी सांसारिक सुखों में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आसक्त चाहता है। अब तू आत्म-सुख, आत्म-शांति की कामना कर उसी से सुख मिलेगा। धन संपत्ति से नहीं।

हममें से अधिकांश लोग अति भ्रमपूर्ण विडंबनाओं में उलझे पड़े हैं। ईश्वर के लिए जप, स्तवन, पूजन-अर्चन, कथा-कीर्तन जैसे कर्मकांडों की लकीर पीटकर झूठा आत्म संतोष कर बैठते हैं कि ईश्वर की प्रसन्नता अथवा जीवनोद्देश्य की प्राप्ति के लिए उतना खेल-मेल कर लेना पर्याप्त है। हमें विवेक की आँखें खोलकर यह देखना चाहिए कि प्रशंसा करने, गिड़गिड़ाने, नाक रगड़ने या रिश्वत देने से हम किसी बुद्धिमान संसारी का भी प्यार, अनुग्रह प्राप्त नहीं कर सकते तो ईश्वर को इस प्रकार के बहकाने से कैसे संतुष्ट किया जा सकेगा ? पूजा उपासना का मतलब ईश्वर का ईश्वरीय आयोजन एवं निर्देश को स्मृति पटल पर मजबूती से जमा लेना तथा अपने में अधिकाधिक निर्मलता विवेकशीलता उत्पन्न करना भर है। यह अपना नित्य कर्म है जिससे आत्म शोधन और आत्म जागरण का प्रयोजन भर पूरा होता है। ईश्वर इतने भर से संतुष्ट नहीं हो सकता। उसकी प्रसन्नता के दो ही केंद्र बिंदु हैं—(१) अपनी विचारणा मनोभूमि, गुण, कर्म, स्वभाव की श्रृंखला एवं गतिविधियों में अधिकाधिक पवित्रता, उदारता, उत्कृष्टता एवं आदर्शवादिता का समावेश, (२) लोक मंगल के लिए समर्पित किए गए बढ़-चढ़ कर अनुदान। अपनी स्थिति के अनुरूप हर कोई विश्व मानव की—जनता जनार्दन की—भावनात्मक स्थिति को ऊँचा उठाने में कुछ न कुछ योगदान दे ही सकता है। इस प्रयोजन के लिए समय, श्रम, बुद्धि, धन आदि का जितना अनुदान किया गया हो समझना चाहिए कि उतने ही अंशों में हमने भगवान की इच्छा पूर्ति के लिए साहस किया और उतनी ही मात्रा में हमें ईश्वरीय प्यार अनुग्रह और आशीर्वाद पाने का हक मिल गया। भगवान का प्रकाश अंतःकरण में प्रवेश करने देने के लिए हमें अपनी स्वार्थपरता, संकीर्णता लोभ वृत्ति की खिड़कियाँ खोलनी पड़ती हैं। सज्जनता को जीवन क्रम में समाविष्ट किए बिना अपनी रीति-नीति में मानवता के उच्च दृष्टिकोण को समाविष्ट किए बिना, किसी जीवन की सार्थकता नहीं हो सकती और ईश्वर की दी हुई संपदाओं में से न्यूनतम भाग निर्वाह के लिए रखकर शेष को लोकमंगल के रूप में प्रभु को लौटाए बिना किसी को जीवन लक्ष्य की प्राप्ति नहीं हो सकती। हमें ऐसा आत्मबोध

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जगाना चाहिए जो आत्म शांति और ईश्वर प्राप्ति के उपर्युक्त मार्ग पर धकेल सकने में समर्थ हो सके।

प्रश्न

१. मनुष्य अन्य प्राणियों से श्रेष्ठ क्यों है ? उसे अधिक सुविधाएँ क्यों दी गई हैं ?
२. मानव जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य क्या है ?
३. आत्मबोध किसे कहते हैं ?
४. यह कब समझा जाना चाहिए कि ईश्वर का प्रकाश चमकने लगा है ?
५. समर्पित जीवन से क्या समझते हो ?
६. ईश्वर दर्शन किसे कहते हैं ? वह किन्हें होता है ?
७. अधिकांश लोग किस प्रकार के कर्म-कांडों में आत्म-संतोष किए बैठे हैं ? क्या उनसे कुछ लाभ है ?
८. पूजा-उपासना का सच्चा मतलब क्या है ?
९. ईश्वर की प्रसन्नता के कौन-कौन से केंद्र बिंदु हैं ?
१०. भगवान् की इच्छा पूर्ति का साहस कैसे किया जाता है ?

● ●

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कामनाग्रस्त न हों प्रगतिशील बनें

प्रगति की आकांक्षा और लालसाओं की पूर्ति का सामान्य स्वरूप एक-सा दीखता है, पर बारीकी से देखने पर इनमें जमीन-आसमान का अंतर मिलेगा। प्रगति उस आवश्यकता का नाम है जो व्यक्तित्व को उभारती, प्रतिभा को निखारती तथा योग्यताओं को बढ़ाती है। इसका अर्थ है उन क्षमताओं का विकास जो शरीर, मन, कर्त्तव्य एवं स्वभाव को स्वस्थ, स्वच्छ एवं सुविकसित बना सके। यही वास्तविक प्रगति है। इसी के आधार पर मनुष्य जो भी सांसारिक संपदाएँ चाहे प्राप्त कर सकता है। धन उपार्जन करने की क्षमता, हाथ में लिए हुए काम में सफलता, कुशाग्र सूझ-बूझ, आकर्षक व्यक्तित्व, पदोन्नति, संबंधित लोगों का स्नेह-सहयोग आदि न जाने कितनी सिद्धियाँ इसी विशेषता के आधार पर मिलती हैं। निखरा हुआ व्यक्तित्व ही साहसिक कदम उठा सकने की हिम्मत और चमत्कारी उपलब्धियाँ प्राप्त कर सकने में समर्थ होता है। अपनी इसी प्रसुप्त विशेषता को जागृत एवं प्रखर बना सकना प्रगति का मूल तथ्य है। जिसके हाथ यह पारस लग गया उसे दीन, दुर्बल जीवन नहीं जीना पड़ता, वरन् एक से एक बढ़ी-चढ़ी सफलताओं और संपदाओं के प्राप्त करने का अवसर निरंतर मिलता रहता है।

भगवान् बुद्ध उपदेश देकर उठे तो एक परिव्राजक ने पूछा—भगवन् ! आपके उपदेशों पर थोड़े से ही लोग चलते हैं फिर भी आप कभी निराश क्यों नहीं होते ? तथागत ने उत्तर दिया—सफलता और यश की कामना करने वाला कभी महान् कार्य नहीं कर सकता।

बाहर से जो संपदाएँ या सफलताएँ दीखती हैं वे स्थिर व लाभदायक तभी हो सकती हैं जब उनके पीछे सुविकसित व्यक्तित्व की श्रम-साधना सन्निहित हो। यदि यों ही उत्तराधिकार में भाग्यवश अनायास या अनैतिक तरीके से कोई सफलता या संपदा मिल गई तो वह देर तक टिकेगी नहीं, उसे सँभालना और रोकना कठिन हो जाएगा। किसी प्रकार वह बनी भी रहीं तो इतनी समस्याएँ और उलझनें उत्पन्न करेंगी, जिससे यही सोचना पड़ेगा कि इससे तो निर्धन या असफल रहना अच्छा था। व्यक्तित्व का निखार ही वस्तुतः अनेक तरह की भौतिक और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आत्मिक संपदाएँ उत्पन्न करने में समर्थ रहता है और उसी के आधार पर उनका सदुपयोग बन पड़ता है। उसी स्थिति में उस वैभव का कुछ उपयोग और लाभ भी है। अन्यथा अनुपयुक्त व्यक्तित्व, अनायास प्राप्त संपदा से अपना और दूसरों का अहित करते और शोक, संताप फैलाते दीखेंगे। प्रगति शब्द का ठीक अर्थ और स्वरूप समझना हो तो यही कहा जाएगा कि परिष्कृत शरीर और मन के आधार पर सुविकसित व्यक्तित्व का निर्माण कर सकने में सफलता प्राप्त कर लेना ही सच्ची प्रगति है।

भोज ने सारे राज्य को दावत दी। चारों ओर से नर-नारी आ-आकर दावत का आनंद लेने लगे। कोई रह तो नहीं गया, यह देखने के लिए भोज भेष बदलकर राजपथ पर जा रहे थे, तभी सामने से आता हुआ एक वृद्ध लकड़हारा दिखाई दिया। भोज ने पूछा—भाई ! भोज ने दावत दी है, तुम क्यों नहीं गए ? बूढ़े लकड़हारे ने कहा—मुफ्त का खाना खाकर मैं अपने बच्चों को निकम्मा नहीं बनाना चाहता। भोज यह सुनकर अवाक् रह गये।

आकांक्षाएँ एक नशेबाजी जैसी मानसिक स्थिति ही समझी जानी चाहिए। वे असीम होती हैं। परिस्थिति, योग्यता और साधनों का ध्यान न रखकर अक्सर लोग आकाश पाताल प्राप्त करने की अनियंत्रित कामनाएँ मन में सँजोये बैठे रहते हैं और उन्हें जल्द जिस-तिस मार्ग से पूरा करने के लिए व्याकुल रहते हैं। यह ललक पूरी तो हो नहीं सकती, व्यक्ति को बुरी तरह उद्विग्न रखती है। कामना की पूर्ति के लिए योजनाबद्ध तैयारी करनी होती है और निरंतर श्रम-साधना धैर्य और सन्तुलित मन से तब तक चलानी पड़ती है जब तक कि उस उपलब्धि के लिए उपयुक्त साधन और अवसर न मिल जाएँ। उनमें देर हो सकती है और अनेक विघ्न आ सकते हैं। कामना ग्रस्त इस संबंध में अति अधीर होता है और छलाँग मारकर जो चाहता है उसे तुर्त-फुर्त प्राप्त करने को उतावला-बाबला बना रहता है। ऐसे व्यक्ति असफल तो रहते ही हैं, उतावली में ऐसे कार्य और भी करते हैं, जिन्हें अवांछनीय और मूर्खता-पूर्ण कहना पड़े और जिनका परिणाम अंततः विभीषिका जैसी विपत्ति के रूप में सामने आए। इसी स्थिति से ताल-मेल न बिठाकर चलने वाली ललक को आकांक्षा या कामना कहते हैं। यह प्रगतिशीलता का नहीं छिछोरापन का चिह्न है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

महाराज संजय ने पुत्र प्राप्ति हेतु तप किया। तप से प्रसन्न हुए नारद जी ने पूछा—तात ! आपको कैसा पुत्र चाहिए ? संजय बोले—स्वर्णविष्टी भगवन् ! जिसका मल-मूत्र भी सोना हो, थूक-लार निकले वह भी सोना हो। नारद संजय के इस लोभ पर मुस्कराए और एवमस्तु कहकर चले गए।

कुछ दिन पीछे संजय को सचमुच ऐसा ही पुत्र पैदा हुआ। इस विचित्र बालक की खबर दूर-दूर तक फैली। कुछ डाकुओं ने यह बात सुनी, तो वे बच्चे का अपहरण कर ले गए। स्वर्ण का बँटवारा कैसे हो ? इस बात को लेकर डाकुओं में परस्पर कहा-सुनी हो गई। तय हुआ कि उसे मारकर एक ही बार में सारा सोना निकालकर बाँट लिया जाए। लड़का काट डाला गया, पेट में सोना नहीं निकला, इस पर डाकू हैरान थे, तभी राजा के सिपाही वहाँ पहुँच गए और उन्होंने डाकुओं को मार डाला। सारी खबर महाराज संजय ने सुनी तो उनके मुँह से सहसा यही निकला—पाप और सर्वनाश की जड़ लोभ है।

प्रगतिशील और कामनाग्रस्त का आरंभिक उत्साह एक जैसा लगता है, पर वस्तुतः दोनों की दो दिशाएँ हैं और परिणाम भी एक-दूसरे से विपरीत ही होते हैं। वे भौतिक लिप्साएँ जो क्षमता बढ़ाने का इंतजार न करके तुर्त-फुर्त मनोकामना पूर्ण करने के लिए लालायित रहती हैं, आध्यात्मिक भाषा में ऐषणाएँ कही जाती हैं। ऐषणाओं में प्रधान तीन हैं—(१) वित्तेषणा (२) पुत्रेषणा (३) लोकेषणा। उन्हें सरल भाषा में अमीरी, विषय-वासना और वाहवाही कहा जा सकता है। उचित और न्यायानुकूल मार्ग से उचित मात्रा में इनकी आवश्यकता भी है, पर इनकी ललक एक नशेबाज की उन्मत्तता जैसी स्थिति पैदा कर देती है और जिस-तिस मार्ग से इनकी असीम उपलब्धि के लिए मनुष्य व्याकुल-पागल हो सकता है। सीधे रास्ते से हर काम उचित समय, उचित श्रम और उचित पात्रत्व द्वारा ही सीमित मात्रा में पूरा होता है, पर अधीरता में इन साधनों को बढ़ाने एवं अपनाने की स्थिति नहीं रहती। उतावली में, अवास्तविक कल्पना लोक में मनुष्य विचरण करने लगता है। बच्चों जैसी उपहासास्पद योजनाएँ बनाता है और बुरी तरह ठगा जाता है तथा ठोकर खाता है। अनुचित अनैतिक मार्ग अपनाने में भी उसे झिझक नहीं होती। ऐषणाओं के पीछे बावला मनुष्य पाता कम और खोता ज्यादा है, इसलिए तत्वदर्शियों ने उन्हें खतरनाक और अवांछनीय कहा है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सरदार भगतसिंह ने अपने को देश सेवा में सौंप दिया। अपने भरण-पोषण के लिए उन्होंने अपने परिवार का आश्रय भी त्याग दिया। उनकी इस त्याग वृत्ति को देखकर काँग्रेस कार्यकारिणी के सदस्य श्री शार्दूलसिंह ने उन्हें १५० रूपये पर अमृतसर कार्यालय में काम दिला दिया, पर भगतसिंह ने १५० रूपये लेने से इंकार करते हुए कहा—जीवन निर्वाह के लिए ३० रुपये ही काफी हैं। मुझे कमाई नहीं देश की सेवा करनी है।

तुर्त-फुर्त अमीर बनने की लिप्सा में लोग जुआ, चोरी, बेईमानी, विश्वासघात, शोषण और छल आदि बुरे से बुरे अपराध करते देखे जाते हैं। काम वासना की भट्टी में जिनका मन उबल रहा है वे बहिन, भाँनजी, बेटी, पोती किसी को नहीं देखते। स्वास्थ्य, यश, ईमान गँवाते हैं और हर जगह भेड़िए की तरह खूनी नजर से निहारते हैं। इससे मिलना क्या है—केवल गँवाना ही गँवाना है, पर वासना का गुलाम यह सब देखता कहाँ है ? पहाड़ भर चाहता है, पर तिल भर भी पा नहीं सकता, केवल जलन, अशांति और खीज ही पल्ले पड़ती है। इसी प्रकार सस्ती वाहवाही के लोभ विविध प्रकार के ढोंग रचते, नेतागीरी के लिए मरते, अपना चेहरा लोगों को दिखाने के लिए अकुलाते देखे जा सकते हैं। सजधज, श्रृंगार, फैशन, ठाठ-बाट बनाकर लोग दूसरों पर अपने बड़प्पन या आकर्षण का रौब जमाते हैं। इस प्रवंचना में समय और पैसे की पूरी बर्बादी होती है। बड़ी-बड़ी दावतें, विवाह-शादी की धूमधाम आदि में इसी सस्ती वाहवाही के भूखे लोग धन की होली फूँकते देखे जा सकते हैं। लोग हमें धर्मात्मा समझें इसके लिए कितने ही लोग तीर्थयात्रा करते, बंदरों को चने, कछुओं को आटा खिलाते देखे जा सकते हैं। दान करने की इच्छा ख्याति का स्वार्थ लेकर होती है। नाम का पत्थर जड़वाने, पत्थर लगवाने के लोभ में कई व्यक्ति निरर्थक कामों में पैसा खर्च करते देखे जाते हैं। जबकि कितने ही अति उपयोगी कामों की ओर इसलिए लोग आँख उठाकर भी नहीं देखते क्योंकि उनमें उनकी दानशीलता का ढिंढोरा पिटने वाला नहीं होता। फिल्म में अपनी तस्वीर खिंचवाने और आवाज सुनवाने के लिए संभ्रान्त परिवारों के सुशिक्षित लड़के-लड़कियाँ अपने शील और भविष्य को बर्बाद करते हुए आए दिन दिखाई देते हैं। यह सब लोकेषणा पिशाचिनी का माया जाल ही समझना चाहिए, जिसने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रतिभाओं को आदर्शवाद की ओर बढ़ने से रोककर निरर्थक की मृगतृष्णा में लुभाया और उन्हें छिछोरी बालबुद्धि में उलझाकर बर्बाद कर दिया।

कौशाम्बी का विश्वकर्मा चंपक अपनी ईमानदारी के लिए प्रसिद्ध था। उसकी पत्नी हव्या भी बड़ी ईमानदार थी। एक बार कौशाम्बी में अकाल पड़ा। एक दिन चम्पक अपनी पत्नी के साथ कहीं जा रहा था। रास्ते में एक सोने का कंगन पड़ा दीखा। चम्पक ने सोचा—कहीं हव्या को उसका लोभ न आ जाए, वह उस पर धूल डालकर उसे ढकने लगे। हव्या पति का अभिप्राय समझ गई, उसने कहा—स्वामी ! नाहक धूल पर धूल डाल रहे हैं। उनकी ईमानदारी देखकर इंद्र का हृदय द्रवित हो गया उन्हें वृष्टि के लिए विवश होना पड़ा।

धन, वासना और वाहवाही की तीव्र आकांक्षा उठना और इसकी बेचैनी से व्याकुल रहना, ऐसा लगता है कि मानो यह प्रगतिशीलता और पुरुषार्थ-परायणता का चिह्न है, पर वस्तुतः बात ऐसी है नहीं। यह नशेबाजी जैसा एक उन्माद भर है, जो ललक को तुर्त-फुर्त पूरा करने के लिए घसीटता चला जाता है। भौतिक महत्त्वकांक्षाओं की अनियंत्रित आकांक्षा, लालसा, कामना जितनी ही तीव्र होगी व्यक्ति उतना ही अधीर, अविवेकी, अशांत, अनैतिक एवं उन्मत्त सरीखा व्याकुल होता चला जाएगा। इस मनःस्थिति में उसने कुछ प्राप्त कर भी लिया हो तो वह इतना मँहगा पड़ता है, जितना अभावग्रस्त रहना भी नहीं अखरता।

पारसी धर्मगुरु रवि मेहर के तीनों पुत्र बीमार होकर मर गए। शाम को मेहर घर लौटे तो पत्नी ने पानी दिया और हाथ मुँह धुलाकर खाना परोसा। भोजन करते समय मेहर ने पूछा—भद्रे ! बच्चे नहीं दिखाई दे रहे ? इस पर पत्नी ने कहा—स्वामी ! कल हम लोग जिस स्त्री से जेवर लाए थे, वह आज माँगने आई थी ? मेहर ने कहा—दे क्यों नहीं दिए ? पराई वस्तु की कामना क्यों की जाए ? ठीक है कहकर वह उन्हें शयनागार में ले गई, जहाँ तीनों बच्चों के शव पड़े थे। मेहर फूट-फूट कर रोने लगे तो पत्नी ने कहा—स्वामी ! आप अभी-अभी तो कह रहे थे कि कोई अपनी वस्तु ले ले तो उसका दुःख नहीं करना चाहिए। पुत्र भगवान् के थे, उसने ले लिए तो दुःख क्यों कर रहे हैं ? मेहर का चित्त यह सुनकर हलका हो गया।

हमें प्रगतिशील होना चाहिए, कामनाग्रस्त नहीं। प्रतिभा के बढ़ाने को धैर्य और परिश्रमपूर्वक संतुलित मस्तिष्क से की गई साधना हमारे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

व्यक्तित्व को निखारती है और उसी आंतरिक उत्कर्ष के आधार पर वह समर्थता प्राप्त होती है जिसके आधार पर किसी भी उपयुक्त दिशा में भरपूर और चिरस्थायी उन्नति कर सकना सुलभ हो जाए। हमें गाँठ बाँधकर रखना चाहिए कि सद्गुणों की संपत्ति वह आधार है जिसके द्वारा सांसारिक सफलताएँ कभी भी, कितनी ही बड़ी मात्रा में मिल सकती हैं। आनंद वासना में नहीं हँसती-हँसाती मनोवृत्ति में है जो पग-पग पर उल्लास के अवसर उत्पन्न कर सकती है। वाहवाही के ओछे प्रदर्शनों से नहीं महामानवों के पद चिह्नों पर चल सकने का साहस एकत्रित करने से वह सच्ची और चिरस्थायी श्रद्धा मिलती है जिसका अल्प अनुकरण, अनुगमन करने वाले भी यशस्वी बन सकें।

स्वामी रामतीर्थ के भाषणों से अमरीका इतना प्रभावित हुआ कि उन्हें एक ही साथ १२ यूनिवर्सिटियों ने डाक्ट्रेट की उपाधि देने का प्रस्ताव रखा। प्रस्ताव को अमान्य करते हुए स्वामी जी ने कहा—सेवा का मूल्य आत्मानुभूति, आत्म-सुख है, उपाधि लेकर मैं अपना अहंकार बढ़ाना नहीं चाहता। मेरे साथ लगी स्वामी जी और एम. ए. यह दो उपाधियाँ ही बहुत हैं।

प्रश्न

१. प्रगति किसे कहते हैं ?
२. प्रगति का मूल तथ्य क्या है ?
३. सच्ची प्रगति क्या है ?
४. भारत विदेशी शासकों से क्यों पराजित हुआ ?
५. कामनाग्रस्त व्यक्ति आसक्त क्यों रहते हैं ?
६. ऐषणाएँ कितनी प्रकार की होती हैं ? ये अवांछनीय एवं खतरनाक क्यों कही जाती हैं ?
७. वाहवाही के लोभी किस प्रकार के ढोंग रचते हैं ?
८. बुद्धि व्यभिचारिणी कैसे हो जाती है ?
९. आनंद किसमें है ?
१०. समर्थता कैसे प्राप्त होती है ?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वर्ग और मुक्ति का आनंद इसी जीवन में

स्वर्ग और मुक्ति अध्यात्म-जगत के दो बड़े पुण्य-फल माने जाते हैं। इन्हें प्राप्त करने के लिए लोग बहुत-से धर्म-कर्म करते हैं। यह दोनों क्या हैं, उनका स्वरूप क्या है, इस विषय में लोगों की कल्पनाएँ तथा मान्यताएँ सही नहीं हैं। कल्पना की जाती है कि स्वर्ग पृथ्वी जैसा लोक है। वहाँ खाने, सोने, मनोरंजन, आराम तथा विषय भोग की प्रचुर सुविधाएँ रहती हैं। वहाँ पहुँचने पर मनुष्य उन सुविधाओं का लाभ उठाता हुआ, आराम और आनंद के दिन काटता है। इसी प्रकार मुक्ति के बारे में सोचा जाता है कि भगवान के लोक में पहुँचकर जीव झंझटों से छुटकारा पा जाता है। उन्हीं के जैसा बनकर रहता है और उन्हीं में लीन हो जाता है। इसी को सालोक्य, सामीप्य और सायुज्य मुक्ति कहते हैं।

उपर्युक्त मान्यताएँ सही नहीं हैं। क्योंकि ग्रह-नक्षत्रों में अभी तक किसी ऐसे पिंड का पता नहीं चला जिसमें मनुष्य स्तर के जीवधारी प्राणियों के निवास की बात सोची जा सके। फिर हर ग्रह-नक्षत्र के जीवों की स्थिति सुविधा, आवश्यकता, प्रकृति तथा बनावट अपने ही ग्रह में रह सकने योग्य बनी होती है। ऐसी दशा में स्वर्ग लोक की बात कुछ ठीक से गले उतरती नहीं। फिर जिन सुविधाओं का वर्णन किया जाता है उनका उपयोग इस स्थूल शरीर से ही किया जाता है मरने के बाद सूक्ष्म शरीर रह जाता है, जिससे भावनात्मक अनुभूतियाँ तो हो सकती हैं, पर इंद्रियाँ न होने से इंद्रिय सुख कैसे मिलेंगे ? वहाँ पर जीव खाने-पीने जैसे सुविधा-साधनों का लाभ कैसे उठा सकेगा ? इसी प्रकार यदि सब झंझटों से छुटकारा पाना—सब लाभों से वंचित हो जाना ही मुक्ति हो तो सामाजिक प्रकृति के समूह में रहने वाले मनुष्य के लिए वह और भी अधिक कष्टकारक होगी। अकेली जेल-कोठरी में कुछ दिन रहने वाले कैदी शारीरिक दृष्टि से ढीले और मानसिक दृष्टि से उद्विग्न होकर निकलते हैं। अकेले के लिए समय काटना मुश्किल पड़ता है। मुक्त होने पर यदि किसी लोक में अकेला ही रहना पड़े तो उस सुनसान में क्या

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सुख मिलेगा ? भगवान तो बहुत कार्यव्यस्त हैं, उसके पास बैठे भी रहे तो क्या लाभ ? यदि उनमें घुल जाएँ तो भगवान का वजन भले ही राई रत्ती बढ़ जाए, अपना तो अस्तित्व ही समाप्त हुआ। ऐसा आत्म-नाश ही यदि मुक्ति कहलाता है तो उसे कोई क्यों चाहेगा ? इससे किसी को क्या मिलेगा ?

मनुष्य के व्यवहार से क्रुद्ध होकर देवताओं ने दुर्भिक्ष को भेजा। दुर्भिक्ष धरती में आकर एक स्थान पर छुपकर देखने लगा कि यहाँ के लोग आखिर किस तरह खराब हैं ? तभी वहाँ एक परिवार आकर रुका। खाने के लिए उन्होंने रोटियाँ निकालीं। रोटी एक थी। पत्नी ने रोटी पति को देते हुए कहा—आप खा लीजिए, मुझे तो भूंख नहीं है। पति ने उसे पुत्री को देते हुए कहा—बेटी तू खाले, मैंने तो पानी पीकर पेट भर लिया। तभी वहाँ एक अपंग दिखाई दिया, लड़की ने रोटी उसे देते हुए कहा—भाई ! तुम बहुत भूखे दिखाई देते हो, लो रोटी खालो। दुर्भिक्ष यह देखकर चुपचाप देवताओं के पास जाकर बोला—आप लोगों ने मुझे भूल से स्वर्ग भेज दिया था। देवता कहने जा रहे थे कि वह मृत्युलोक है, पर तभी विधाता बोल पड़े सचमुच तात जहाँ लोग प्रेमपूर्वक रहें, स्वर्ग वहीं होता है।

स्वर्ग मुक्ति की उपर्युक्त मान्यताएँ पौराणिक काल की अलंकारिक मान्यताएँ हैं। वस्तुतः स्वर्ग आत्म-सन्तोष को कहते हैं, क्योंकि संसार में वही सबसे अधिक शांतिदायक स्थिति है। जीवन का अस्तित्व सूक्ष्म है, इसलिए पदार्थों का सुख तो शरीर भर को मिलेगा, सूक्ष्म सत्ता को तो भावनात्मक तृप्ति ही प्रसन्न कर सकती है। धन-दौलत, ऐश आराम तो भावनाओं का ही होता है और उस स्तर की अनुभूति तभी मिल सकती है जब व्यक्ति का दृष्टिकोण परिष्कृत और क्रिया कलाप आदर्शवादी मान्यताओं के अनुरूप बन सके। आत्मा का संतोष इसी स्थिति में होता है, क्योंकि वह ईश्वर का अविनाशी अंश होने के कारण सदुद्देश्य के लिए ही धरती पर आई है और मछली जिस प्रकार पानी में ही चैन की साँस ले सकती है, उसी प्रकार आत्मा को चैन ईश्वरीय स्तर की उच्च भूमिका में अवस्थित होने पर ही मिल सकता है। यह भूमिका उच्च विचारणा और श्रेष्ठ आचार-पद्धति पर निर्भर है। जिनकी विचारणा और क्रिया-कलाप भौतिक स्वार्थ परता पर अवलंबित हैं, उन्हें संपदा, सुविधा या ख्याति कितनी भी क्यों न मिल जाए, कभी आंतरिक शांति न

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मिलेगी। आत्म-शांति का संतोष केवल उनके हिस्से में आया है, जिन्होंने अपने विचार क्षेत्र को उच्च उत्कृष्ट मान्यताओं के अनुरूप सोचने और चाहने के लिए अभ्यस्त कर लिया और उन पर इतना प्रगाढ़ विश्वास जमा लिया है कि शरीर उस धारा-धारणा के विपरीत एक कदम भी न उठाए। जिसे अपने विचारों और कार्यों की उत्कृष्टता का संतोष जितनी अधिक मात्रा में मिल रहा हो, समझना चाहिए कि वह उतने ही ऊँचे स्वर्ग लोक में निवास कर रहा है।

विधाता ने घोषणा कर दी एक सप्ताह के लिए कर्मों का प्रतिबंध नहीं रहेगा, जो भी चाहे स्वर्ग आ सकता है। चित्रगुप्त जी छुट्टी पर चले गए हैं। स्वर्ग के इच्छुक लाखों व्यक्ति स्वर्गलोक की ओर दौड़ पड़े। एक व्यक्ति सर पर लकड़ियाँ लिए हुए घर जा रहा था। उसे ऐसी कोई आतुरता न देखकर विधाता विमान से नीचे उतरे और उससे पूछा—क्यों भाई तुमने स्वर्ग के समाचार नहीं सुने क्या ? सुने हैं महाराज ! वृद्ध ने कहा—पर मुझे तो अपने हँसते हुए बच्चों, प्यार देती हुई पत्नी, मिलकर काम करते भाइयों और परस्पर सहयोग और मैत्री का व्यवहार करने वाले पड़ौसियों में ही स्वर्ग दिखाई देता है। इस स्वर्ग को छोड़कर कहाँ आकाश में मारा-मारा फिरूँ ?

नरक भी कोई लोक नहीं है। नरक के जो वर्णन किये जाते हैं, वे शरीरधारी के लिए संभव है। मरने के बाद जब जीव हवा जैसी सूक्ष्म वस्तु रह गया तो उसे कोल्हू में पेला जाना, कोड़ों से मारा जाना किस प्रकार संभव होगा ? वस्तुतः नरक भोगने के लिए हमें किसी लोक विशेष में जाने या दूसरों द्वारा उत्पीड़न सहने की आवश्यकता नहीं है। यह प्रयोजन तो अपनी दुर्बुद्धि और दुष्प्रवृत्ति हर घड़ी पूरा करती रह सकती है। कुसंस्कारी और दुर्गुणी मनुष्य अपनी ओछी विचार पद्धति की आग में स्वयं ही हर घड़ी जलते रह सकते हैं। चिन्ता, भय, क्रोध, असंतोष, ईर्ष्या, द्वेष, शोषण, प्रतिशोध, उत्पीड़न की प्रवृत्ति बन जाने पर अंतःकरण हर घड़ी इतना विक्षुब्ध और दुःखी रहता है कि जीवन नीरस ही नहीं भार भी प्रतीत होने लगता है। आत्मप्रताड़ना से पीड़ित व्यक्ति नशेबाजी की शरण में जाकर गम-गलत करने, बैरागी बन दौड़ने या आत्म-हत्या जैसे कुकृत्य करते देखते गये हैं। यह नरक की ही अनुभूतियाँ हैं। दुष्ट व्यक्ति जिनके ऊपर सब ओर से घृणा बरसती है एक प्रकार से नरक के कीड़े ही गिने जा सकते हैं। दुष्कर्म करते समय आत्मा काँपती है और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आत्म-धिक्कार की ग्लानि निरंतर पश्चाताप की आग में जलाती है। इसे नरक ही कहा जाएगा। कुकर्म तो थोड़ी देर में पूरा कर लिया जाता है, पर उसे करके जो पतन हुआ तथा भविष्य में ईश्वर दंड की जो संभावना बनी, उसे स्मरण करके आदमी भीतर ही भीतर बुरी तरह जलता रहता है। वस्तुतः यही नरक है जो किसी भी कुमार्ग गामी को खाता, खोखला करता और पश्चाताप में झुलसाता रहता है।

एक संपन्न व्यक्ति बड़ा दुःखी रहता था पर उसे अपने दुःख का कोई कारण समझ में नहीं आ रहा था। एक दिन एक संत ग्रामवासियों में बैठे बात कर रहे थे। पास ही दीपक जल रहा था, आकाश में चन्द्रमा खिला हुआ था। उस व्यक्ति ने प्रश्न किया महाराज दीपक के नीचे अँधेरा और चंद्रमा में कालिख क्यों है ? संत ने हँसकर कहा—अँधेरा पक्ष तो दुनिया की हर वस्तु में है। क्या ही अच्छा होता यदि तुम दीपक और चंद्रमा में कालिमा और अंधकार न देखकर प्रकाश देखते। मनुष्य अपने दुःख का कारण समझ गया। उस दिन से वह हर वस्तु का उजला पक्ष देखने लगा।

शारीरिक दुःख इस संसार में भी कम नहीं हैं। उनके लिए किसी और लोक में जाने की आवश्यकता नहीं पड़ती। कष्टसाध्य रोगियों को व्यथा से निरंतर चिल्लाते हुए कहीं भी देखा जा सकता है। अंधे, कोढ़ी, अपंग, असहाय लोगों को क्या कुछ कम कष्ट सहने पड़ते हैं ? प्रियजनों की मृत्यु, असफलता, अपमान, धनहानि, आक्रमण, उत्पीड़न जैसे प्रसंगों पर भी क्या कुछ कम दुःख होता है ? शारीरिक और मानसिक कष्ट इस संसार में भी कम नहीं है। कर्मफल के अनुरूप यदि कुछ त्रास मिलते हों तो वे यहाँ भी भरे पड़े हैं। इसलिए नरक की कल्पना को अन्य लोक से जोड़ना उचित नहीं। दुष्कर्म करने पर उसके फलस्वरूप मिलने वाले सामाजिक और ईश्वरीय दंड को मिलाकर पूरा नारकीय अनुभव किसी भी कुपंथगामी को यहीं इसी लोक में मिल सकता है।

एक अमीर तमाम संपत्ति इकट्ठा कर इस प्रयत्न में था कि वह सारी संपत्ति कब्र में गाड़ लेगा और स्वर्ग में आनन्द से रहेगा। महापुरुष ईसा ने कहा—मूर्ख ! अपनी संपत्ति, अपने साधन इसी दुनियाँ में दीन और दुखियों के लिए खर्च कर, देख तुझे यहीं स्वर्ग मिलता है या नहीं।

मुक्ति का अर्थ होगा बंधनों से छूटना। विचार करना है कि कौन से बंधन हैं जिनसे हम बंधे हैं और शरीर को रस्सों से तो किसी ने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जकड़ नहीं रखा है। निवास भी कैदखाने में नहीं करते। कहीं भी स्वेच्छा से आ-जा सकते हैं। यदि संसार को भव-बंधन कहा जाए तो यह भी उचित न होगा क्योंकि यह विश्व भगवान का विराट रूप है। जहाँ कण-कण में भगवान व्याप्त हों, वहाँ बंधन कैसा ? जिस भाग पर जन्म लेने के लिए देवता तरसते हों, जहाँ अवतारों, ऋषियों और धर्मात्माओं का निरंतर प्रवाह बहता हो, जहाँ गंगा-यमुना जैसी नदियाँ, हिमालय जैसे पर्वत और प्राकृतिक सुषमा का स्वर्ग बिखरा पड़ा हो, वहाँ जन्म लेना और जीवित रहना एक सौभाग्य ही है। उसे भवबंधन कैसे कहा जाए ? जहाँ प्रेमी परिजनों के अनुदान निरंतर बरसते हुए हमें कृतज्ञता में डुबा देते हैं वहाँ बंधन कैसा, जिससे छुटकारा पाने को मुक्ति की कल्पना में विचरण किया जाए ? जन्म-मरण तो एक-सी परिस्थिति की नीरसता से नवीनता के उल्लास में परिणत होने का मनोरंजन मात्र है। उसमें अवांछनीय, अनुचित, अशोभनीय या आनंद रहित क्या है, जिससे छूट भागने की बात सोची जाए ?

संत अनाम एक गाँव से जा रहे थे। एक स्त्री और पति में झगड़ा हो रहा था। उन्होंने झगड़े का पता लगाया, तो मालूम हुआ पति देव काम नहीं करते, वैराग्य की आड़ लेकर स्वर्ग के चक्कर में पड़े हैं, सन्त अनाम बोले—जिसको इस जीवन में स्वर्ग न मिला वह परलोक में क्या स्वर्ग प्राप्त करेगा।

मुक्ति वस्तुतः अपने दोष-दुर्गुणों से, स्वार्थ संकीर्णता से, क्रोध-अहंकार से लोभ-मोह से, पाप-अविवेक से प्राप्त करनी चाहिए। यही वह शत्रु हैं जो पग-पग पर दुःख देते हैं। आत्म ग्लानि और आत्म-प्रताड़ना की आग में जलाने वाले अपने कषाय और कल्मष ही हैं, जो सन्मार्ग पर चलने से रोकने में जंजीरों का काम करते हैं। समय, साधन, सुविधा और सामर्थ्य होते हुए भी हम परमार्थ प्रयोजनों के लिए कुछ सोच और कर नहीं पाते, यह अंतरंग की दुर्बलता ही सबसे बड़ा बंधन है। उसे तोड़कर फेंका जा सकता हो और उच्च विचारणा के अनुरूप आदर्शवादी, परमार्थ-परायण जीवन जिया जा सकता हो, तो समझना चाहिए कि मुक्ति मिल गई। स्वर्ग और मुक्ति अपने दृष्टिकोण को परिष्कृत करके हम इसी जीवन में प्राप्त कर सकते हैं, इसके लिए मृत्यु काल तक की प्रतीक्षा करने की क्या आवश्यकता है ?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रश्न

१. स्वर्ग क्या है ? उसका वास्तविक अर्थ बताओ।
२. मुक्ति क्या है ? वह कितने प्रकार की होती है ?
३. क्या स्वर्ग एवं नरक की मान्यताएँ सही हैं ?
४. सूक्ष्म व स्थूल शरीर में क्या भेद है।
५. क्या मुक्ति आत्मनाश का ही दूसरा नाम नहीं है ?
६. चिरस्थाई आनंद किसे कहते हैं ? वह कैसे मिलता है ?
७. आत्मा का अवतरण धरती पर किस कारण हुआ है ?
८. आत्म शांति एवं संतोष किन्हें मिलता है ?
९. नरक क्या है ? क्या वह इसी लोक में नहीं है ?
१०. भव बंधन की मान्यता कहाँ तक सही है ?
११. जन्म मरण क्या है ?
१२. सबसे बड़ी दुर्बलता कौन-सी है ?

● ●

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वाध्याय की अनिवार्यता

मनुष्य का मन कोरे कागज या फोटोग्राफी की प्लेट की तरह है जो परिस्थितियाँ, घटनाएँ एवं विचारणाएँ सामने आती रहती हैं उन्हीं का प्रभाव अंकित होता चला जाता है और मनोभूमि वैसी ही बन जाती है। व्यक्ति स्वभावतः न तो बुद्धिमान है और न मूर्ख, न भला है—न बुरा। वस्तुतः वह बहुत ही संवेदनशील प्राणी है। समीपवर्ती प्रभाव को ग्रहण करता है और जैसा कुछ वातावरण मस्तिष्क के सामने छाया रहता है उसी ढाँचे में ढलने लगता है। उसकी यही विशेषता परिस्थितियों की चपेट में आकर कभी अधःपतन का कारण बनती है, कभी उत्थान का।

आगरा जिले के खंदौली गाँव के निकट शिकारियों ने भेड़िये मारे और उनकी माँद में एक छः वर्षीय बालक पाया। मादा भेड़िए ने कहीं से उठाये इस बच्चे को खाया नहीं वरन् उसे अपना दूध पिलाकर पाल लिया। जब यह बच्चा पकड़ा गया तो भेड़िए की तरह चार पैर से चलता, बोलता और सिर्फ कच्चा माँस खाता था। सर्वत्र यही सिद्धांत लागू होता है। अपनी मौलिक प्रतिभा लेकर तो कोई बिरले ही जन्मते हैं आमतौर से सामने प्रस्तुत परिस्थितियाँ ही विचारों और आकांक्षाओं का सृजन करती हैं। उसी आधार पर व्यक्तित्व का एक कार्यक्रम ढलने लगता है। विचारों को उच्च स्तर पर ढालना मानवीय विकास की आधारभूत आवश्यकता है। प्राचीन काल में सुसंपन्न व्यक्ति भी अपने बालकों को निविड़ वन प्रदेशों में ऋषियों के समीप गुरुकुलों में सुशिक्षण के लिए भेजते थे। यों पढ़ाई-लिखाई के लिए नौकर, ट्यूटर राजमहलों में भी रहते थे, रखे जा सकते थे, पर परिष्कृत वातावरण में रहने के कारण मनोभूमि का लाभ उन महान् व्यक्तित्वों के सान्निध्य में ही मिल सकता था। इसलिए हर विवेकवान सत्संग का लाभ उठाने के लिए न केवल बच्चों को ऋषिकुलों में भेजता था वरन् स्वयं भी तीर्थ यात्रा वनवास, वानप्रस्थ आदि के बहाने उस वातावरण में रहने का प्रयत्न करता था ताकि उस प्राण प्रवाह में अपने को प्रभावित कर सकना संभव हो सके।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

एक बच्चे को देश का बड़ा भारी नेता बनने की इच्छा थी, पर कैसे बना जाए ? यह बात समझ में नहीं आती थी। एक दिन फ्रैंकलिन की जीवनी पढ़ते समय उसने ज्ञानार्जन की महत्ता पढ़ी। बच्चा उस दिन से स्वाध्याय में एक मन से जुट गया और अपने मस्तिष्क में ज्ञान का विशाल भंडार एकत्र कर लिया। यही लड़का एक दिन अजेटाइना का राष्ट्रपति बना, नाम था—डोमिंगो फास्टिनो सारमिंटो।

व्यक्तित्व की उत्कृष्टता के लिए सबसे बड़ी आवश्यकता उस विचारणा की है जो आदर्शवादिता से ओत-प्रोत होने के साथ-साथ हमारी रुचि और श्रद्धा के साथ जुड़ जाए। यह प्रयोजन दो प्रकार से पूरा हो सकता है। एक तो आदर्शवादी उच्च चरित्र महामानवों का दीर्घकालीन सान्निध्य, दूसरा उनके विचारों का अवगाहन व स्वाध्याय। वर्तमान परिस्थितियों में पहला तरीका काफी कठिन है। एक तो तत्वदर्शी महामानवों का एक प्रकार सर्वनाश हो चला। श्रेष्ठता का लवादा ओढ़े कुटिल, दिग्भ्रांत और उलझे हुए लोग ही श्रद्धा की वेदी हथियाए बैठे हैं। उनके सान्निध्य में व्यक्ति कोई दिशा पाना तो दूर उलटा भटक जाता है। जो उपयुक्त हैं वे समाज की वर्तमान परिस्थितियों को सुधारने के लिए इतनी तत्परता एवं व्यस्तता के साथ लगे हुए हैं कि सुविधा पूर्वक लंबा सत्संग दे सकना उनके लिए भी संभव नहीं, फिर जो सुनना चाहता है वही कहाँ खाली बैठा है। इसलिए जिन सौभाग्यशालियों को प्रामाणिक महापुरुषों का सान्निध्य जब कभी मिल जाये तब उतने में ही संतोष कर लेना पड़ेगा। दीर्घकालीन सत्संग की संभावनाएँ आज की स्थिति में कम ही हैं।

क्लंग क्लंग घाटी पर एक सौ अंग्रेजों का मुकाबला आजाद हिन्द सेना के कुल ३ जवान कर रहे थे। खबर आई क्या सैनिक पीछे हटा लिए जाएँ ? सुभाष बोस को समझ में नहीं आया क्या किया जाए ? जब भी कोई ऐसा अवसर आता तो वे पुस्तकों की शरण में जाते। विवेकानंद की पुस्तक खोली, पढ़ने लगे तो एक स्थान पर लिखा था—"सिर पर संकटों के बादल मँडरा रहे हों, तब भी धैर्य नहीं खोना चाहिए।" बस सुभाष को परामर्श मिल गया। उन्होंने तीनों सैनिकों को आदेश दिया कि डटे रहो। अँग्रेजों की टुकड़ी ने समझा यहाँ हिंद सेना का भारी जमाव है, अतएव वे चौकी छोड़कर भाग गए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दूसरा मार्ग ही इन दिनों सुलभ है। स्वाध्याय के माध्यम से मस्तिष्क के सम्मुख वह वातावरण देर तक आच्छादित रखा जा सकता है जो हमें प्रखर और उत्कृष्ट जीवन जी सकने के लिए उपयुक्त प्रकाश दे सके। स्वाध्याय में बौद्धिक भूख और आध्यात्मिक आवश्यकता की पूर्ति के लिए हमें पेट को रोटी और तन को कपड़ा जुटाने से भी अधिक तत्परता के साथ प्रयत्नशील होना चाहिए। स्वाध्याय दैनिक नित्य कर्मों में शामिल रखा जाए। क्योंकि चारों ओर की परिस्थितियाँ जो निष्कर्ष निकालती हैं उनसे हमें निकृष्ट मान्यताएँ और गतिविधियाँ अपनाने का ही प्रोत्साहन मिलता है। यदि इस दुष्प्रभाव की काट न की गई तो सामान्य मनोबल का व्यक्ति दुर्बुद्धि अपनाने और दुष्कर्म करने में ही लाभ देखने लगेगा।

भारतीयों का ज्ञान कमजोर होता है, जब सरदार वल्लभभाई पटेल को अँग्रेजों की इस आलोचना का पता चला, तो उन्होंने अपने जीवन की वह दिशा बदल दी। प्रातःकाल नहा-धोकर इनर टैम्पुल लाइब्रेरी निकल जाते और लगातार १७ घंटे तक स्वाध्याय कर घर लौटते। परीक्षा में वे प्रथम उत्तीर्ण हुए तो अँग्रेज दंग रह गये।

स्नान करने, दाँत माँजने, कपड़े धोने और झाड़ू लगाने की नित्य आवश्यकता इसलिए पड़ती है कि निरंतर मलीनता की जो पर्त जमा होती रहती है, उसे जल्दी-जल्दी हटाए बिना स्वच्छता खतरे में पड़ जाती है। इसी प्रकार मन के ऊपर चारों ओर के गर्हित वातावरण का प्रभाव पड़ते रहने से जो मलीनता जमती है उसके परिष्कार का एक मात्र उपाय स्वाध्याय ही रह जाता है। जीवित या मृत महामानवों के विचारों चरित्रों का प्रभाव जब चाहे तब, जितनी देर तक चाहें उतनी देर तक उनके साथ सामीप्य सान्निध्य का लाभ ले सकते हैं। उनका साहित्य हमें हर समय उपलब्ध रह सकता है और अपनी सुविधानुसार चाहे जितना संबंध उसके साथ जुड़ा रखा जा सकता है। इस संबंध से माता का दूध पीने का लाभ उठाने वाले बच्चे तथा रक्तदान प्राप्त करने वाले रोगी की तरह हर किसी को स्वाध्याय द्वारा समुचित लाभ उठाने का अवसर मिल सकता है। पुस्तकों का मूल्य स्वल्प होता है, पर उनके द्वारा जो प्रभाव उपलब्ध किया जा सकता है उसे बहुमूल्य या अमूल्य ही मानना पड़ेगा ?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बालजक एक वकील के क्लर्क थे। एक दिन उन्होंने एक मित्र से थोड़े पैसे उधार माँगे तो मित्र ने इंकार कर दिया। बालजक को बड़ा दुःख हुआ। सोचने लगे मेरी आर्थिक स्थिति खराब क्यों है ? निस्संदेह मेरे पास ज्ञान का अभाव है, यह सोचते ही वे पढ़ने में लग गए और एक मूर्धन्य साहित्यकार के रूप में नाम भी कमाया और धन भी।

सत्साहित्य ने अगणित व्यक्तियों को ऊँचे उठने और आत्मबल संपन्न हो सकने का अवसर दिया है। भगवान श्री कृष्ण गीता का ज्ञान सुनाकर एक अर्जुन को ही लाभ दे सके पर उस महाग्रंथ ने न्यूनाधिक मात्रा में उस समय से लेकर अब तक करोड़ों अरबों मनुष्यों को प्रकाश दिया है और उस प्रकाश के माध्यम से असंख्यों ने जीवन लक्ष्य प्राप्त करने में सफलता पाई है। प्रेरक साहित्य सदा व्यक्तित्व, चरित्र, मनोबल और आत्म निर्माण में सहायता करता रहता है। इस प्रेरणा से प्रभावित अगणित व्यक्ति तुच्छता के बंधनों को तोड़कर महानता वरण करने में समर्थ हुए हैं। अस्तु उपासना, पूजा, अर्चन, तप, व्रत, दान आदि के समकक्ष ही "स्वाध्याय" को भी पुण्य प्रयोजनों में अति आदर पूर्वक सम्मिलित किया गया है। तत्वदर्शियों ने इस बात पर बहुत जोर दिया है कि मनुष्य को स्वाध्याय बिना प्रमाद किए नित्य नियमित रूप से करना चाहिए।

संत इमर्सन से उनके एक मित्र ने पूछा—आपको अभी स्वर्ग जाने को कहा जाए तो आप क्या तैयारी करेंगे ? सबसे पहले अपनी सारी पुस्तकें बाँध लेंगे। इमर्सन बोले—ताकि स्वर्ग में हमारा समय बेकार न जाए।

लोकमान्य तिलक से एक मित्र ने पूछा—आपको नरक जाना पड़े तो क्या करेंगे ? अपने साथ पुस्तकें लेता जाऊँगा, ताकि स्वाध्याय द्वारा नरक को भी स्वर्ग में बदलने वाले विचार इकट्ठा कर सकूँ।

इन दिनों इस संदर्भ में एक चिंता की बात यह बन गई है कि रूढ़िवादिता ने इस क्षेत्र में भी गहराई तक अड्डा जमा लिया है। सड़ी-गली, अप्रासंगिक और बेतुकी पौराणिक कहानियों की पुस्तकों को ही लोग धर्मग्रंथ मान बैठे हैं और जो पुराना सो अच्छा की पृष्ठ भूमि में उन्हें ही रोज-रोज दुहरा कर स्वाध्याय की लकीर पीटने लगे हैं।

इस निरर्थक विडंबना से भला किसका क्या लाभ हो सकता है ? स्वाध्याय के लिए वह चुना हुआ साहित्य ही उपयुक्त होगा जो व्यक्ति के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गुण, कर्म, स्वभाव को परिष्कृत करने का व्यवहारिक मार्ग दर्शन करे और समाज में प्रस्तुत उलझनों को सुलझाने का बुद्धिसंगत समाधान प्रस्तुत करे। आज व्यक्ति और समाज की परिस्थितियाँ प्राचीन काल से भिन्न हैं, सो उनके समाधान भी युग के अनुरूप ही होने चाहिए। हर युग में स्थिति के अनुरूप मार्ग दर्शन करने के लिए विचारक, तत्त्वदर्शी, युगद्रष्टा और देवदूत अवतरित होते रहते हैं। समय की भिन्नता के कारण को ध्यान में रखते हुए ही बार-बार और नये-नये संदेश लेकर आने वाले संदेश वाहकों की आवश्यकता पड़ती है। आज की परिस्थितियों के अनुरूप मार्ग दर्शन इस युग के ऋषि ही दे सकते हैं और स्वाध्याय के लिए वैसे ही साहित्य की उपयोगिता हो सकती है।

स्वामी रामतीर्थ रास्ते में एक पुस्तक पढ़ते जा रहे थे। एक दिन एक व्यक्ति ने टोका—महाराज ! यह कोई पाठशाला थोड़े ही है, कम से कम चलते समय तो पुस्तक रख दिया करें। तो स्वामी जी बोले—बंधु ! यह सारा संसार ही मेरी पाठशाला है, बताइए इसमें कहाँ पुस्तक रखूँ ? कहाँ पढ़ूँ ?

कहना न होगा कि युग-निर्माण योजना ने प्राचीनतम और नवीनतम का अनुपम सम्मिश्रण किया है। सृष्टि के आदिकाल से लेकर चले आ रहे सनातन धर्म सिद्धांतों को आधुनिक बुद्धिवाद और विज्ञानवाद के साथ जोड़कर वर्तमान परिस्थितियों के उपयुक्त ऐसे समाधान प्रस्तुत किए हैं जिन्हें विवेकवानों ने अद्‌भुत और अनुपम कहा है। स्वाध्याय के लिए यह सस्ता और छोटा दीखने वाला साहित्य वस्तुतः तथाकथित पोथी पत्रों से हजार गुना अधिक महत्त्वपूर्ण है। स्वाध्याय के लिए उपयुक्त साहित्य जिसने व्यक्ति और समाज के सर्वांग विकास को साँगो-पाँग दिशाएँ प्रस्तुत की हों शायद ही अन्यत्र कहीं उपलब्ध है। जो कुछ सर्वश्रेष्ठ इस संसार में उपलब्ध है उन फूलों का सार—मधुर मधु ही इसे कहा जाए तो कुछ भी अत्युक्ति न होगी। उचित यही होगा कि हम दिग्भ्रांत करने वाली विभिन्न पुस्तकें पढ़ने की अपेक्षा स्वाध्याय के लिए युग-निर्माण साहित्य चुनें और उसे पढ़ने का क्रम नित्यकर्म की तरह अपने दिनचर्या में सम्मिलित कर लें।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रश्न

१. सिद्ध कीजिए कि मनुष्य संवेदनशील प्राणी है।
२. मनुष्य में विचारों एवं आकांक्षाओं का सृजन कैसे होता है ?
३. मानवीय विकास की आधारभूत आवश्यकता क्या है ?
४. प्राचीनकाल में छात्रों को ऋषिकुल में क्यों भेजा जाता था ?
५. व्यक्तित्व की उत्कृष्टता किन-किन तत्वों पर निर्भर है ?
६. स्वाध्याय क्यों आवश्यक है ?
७. प्रेरक साहित्य के अध्ययन से क्या लाभ है ?
८. स्वाध्याय के लिए कैसा साहित्य होना चाहिए ?
९. युग निर्माण योजना के साहित्य पर प्रकाश डालें।
१०. स्वाध्याय को नित्य कर्म क्यों मानना चाहिए ?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वास्थ्य रक्षा

भौतिक या आध्यात्मिक कोई भी पुरुषार्थ स्वस्थ शरीर से ही संभव है। शारीरिक सामर्थ्य बनाए रहकर ही हम जीवितों में गिने जा सकते हैं। अस्वस्थ, रुग्ण और दुर्बल तो अर्धमृतक ही बने रहते हैं। देहगत पीड़ा के साथ असफलता और असमर्थता की मनोव्यथा भी जुड़ी रहती है। अस्तु उचित यही है कि स्वास्थ्य के संबंध में उपेक्षा न बरती जाए।

स्वास्थ्य दवा दारू पर निर्भर नहीं है। वह पैसों से भी नहीं खरीदा जा सकता, कीमती चीजें खाकर आरोग्य रक्षा की बात सोचना भी व्यर्थ है। यह सुरक्षा तो आहार, विहार, श्रम संतुलन पर निर्भर रहती है। जो इनकी विधि व्यवस्था बनाए रहता है वही स्वास्थ्य का आनंद लेता है और वही कमजोरी एवं बीमारी से अपनी रक्षा करने में समर्थ होता है।

काम में न आने वाले चाकू को जंग खा जाता है, काम में न आने से शरीर भी अपनी क्षमता खो बैठता है। जो खाते हैं, उसे पचाने एवं शरीर के कलपुर्जों को गतिशील बनाये रखने के लिए परिश्रम करते रहना आवश्यक है। जो कड़ी मेहनत करते हैं, उनके अंग-प्रत्यंग मजबूत बनते हैं जबकि आरामतलब और काम-चोरों की काया अशक्त होती चली जाती है न उनका अन्न पचता है और न गहरी नींद आती है। अभ्यास न होने से जरा-सा काम आ पड़ने पर थक जाते हैं। बाहर से ठीक दिखते हुए भी कड़ी मेहनत न करने वाले लोग भीतर से खोखले होते चले जाते हैं, भूख घटती है और रस रक्त भी कम बनता है। उतने भर से जीवन यात्रा को दूर तक खींचते ले जाना संभव नहीं रहता। आरामतलबी एक अभिशाप है। शारीरिक मेहनत से जी चुराना और अस्वस्थता को आमंत्रण देना एक ही बात है।

तब बीमारियाँ एक पहाड़ पर रहा करती थीं। उन दिनों की बात है, एक किसान को जमीन की कमी महसूस हुई अतएव उसने पहाड़ काटना शुरू कर दिया। पहाड़ बड़ा घबराया। उसने बीमारियों को आज्ञा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दी—बेटियो ! टूट पड़ो इस किसान पर और इसे नष्ट-भ्रष्ट कर डालो। बीमारियाँ दंड-बैठक लगाकर आगे बढ़ी और किसान पर चढ़ बैठीं, किसान ने किसी की परवाह नहीं की, डटा रहा अपने काम में। शरीर से पसीने की धार निकली और उसी में लिपटी हुई बीमारियाँ भी बह गईं। पहाड़ ने क्रुद्ध होकर शाप दे दिया—मेरी बेटी होकर तुमने हमारा इतना काम नहीं किया, अब जहाँ हो वहीं पड़ी रहो। तब से बीमारियाँ परिश्रमी लोगों पर असर नहीं कर पातीं, गंदे लोग ही उनके शिकार होते हैं।

जिन्हें सुविधा हो, व्यायामशाला जाकर दण्ड बैठक, डंबल, मुग्दर, कुश्ती आदि व्यायाम करें। जिनमें नर-नारी बाल-वृद्ध सभी को अपने-अपने साथियों के साथ खेलने-कूदने, भागने-दौड़ने, ड्रिल, कवायद, लाठी, बनेठी चलाने आदि का प्रशिक्षण प्राप्त करके मनोरंजन एवं स्वास्थ्य संवर्धन का अवसर मिले, ऐसे संगठित प्रयत्न आज की महती आवश्यकता है। समाजसेवियों को जगह-जगह ऐसी व्यवस्थाएँ बनानी चाहिए। व्यक्तिगत रूप से आसन प्राणायाम, सूर्य नमस्कार आदि किए जा सकते हैं। सबेरे ३-४ मील तेज चाल से भ्रमण सामान्य स्वास्थ्य और शरीर वाले के लिए उपयोगी है। जिनका धंधा बैठे ठाले का है, उनके लिए तो टहलने का व्यायाम नितांत आवश्यक है। घर के पास पौधे लगाकर उनकी गुड़ाई, निराई, सिंचाई का काम भी किया जा सकता है। महिलाएँ कपड़े धोने, चक्की चलाने जैसे पसीना बहाने वाले कार्य स्वयं कर सकती हैं। स्वेटर बुनने, भोजन बनाने जैसे कार्यों में कड़ी मेहनत और सारे शरीर के अंगों का संचालन न होने से शारीरिक परिष्कृतता का उद्देश्य पूरा नहीं होता। शरीर के हर अंग को पूरी मेहनत मिले और पसीना निकले ऐसा कार्य हर व्यक्ति को अपने लिए निकाल ही लेना चाहिए। स्वास्थ्य रक्षा की दृष्टि से यह प्रक्रिया अति आवश्यक है।

बापू ने अपनी सारी सम्पत्ति सार्वजनिक उपयोग के लिए दान कर दी। इन्हीं दिनों गोर्की की बहन की एक मात्र पुत्री भी विधवा हो गई। वे खुद भी विधवा थीं और गाँधी जी की आश्रिता थीं। उन्होंने गाँधी जी को पत्र लिखा—अब तो उदर पोषण के लिए पड़ोसियों का अनाज पीसना पड़ता है। कोई उपाय बताइए जिससे हम अपना और अपनी पुत्री का पेट पाल सकें। गाँधी जी ने उत्तर में लिखा—किसी पड़ोसी की चक्की मत पीसो, यहीं आ जाओ, मैं भी आजकल चक्की पीसता हूँ। अब दोनों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

साथ-साथ पीसा करेंगे, तो मन भी लगा रहेगा और मेरे साथ तुम भी निरोग और स्वस्थ रहोगी।

स्वास्थ्य को चौपट करने वाले मनोविकारों से सतर्कता पूर्वक बचना चाहिए। बुखार, खाँसी, जुखाम आदि बीमारियाँ तो प्रत्यक्ष दीखती हैं, पर चिंता, भय, उत्तेजना, आशंका, ईर्ष्या, द्वेष जैसी मानसिक बीमारियाँ दिखाई तो नहीं पड़ती, समझ में नहीं आतीं, पर हानि बुखार खाँसी से भी अधिक पहुँचती है। चिंता एक तरह की आग है, जो भीतर-भीतर ही हाड़-माँस जलाती रहती है। जरा-जरा सी बात में गरम और उत्तेजित हो उठने की आदत रक्त को विषैला करती है, और मस्तिष्क का संतुलन बिगाड़ देती है। इसका प्रभाव नाड़ी-संस्थान पर पड़ता है, जिससे कितने ही रोग उठ खड़े होते हैं। खाया-पिया सब क्रोध की गर्मी से जल जाने से आहार का लाभ भी नहीं मिल पाता, निराशा और घुटने की मनोभूमि पाचन क्रिया को चौपट कर देती है। सारे अंग शिथिल पड़ जाते हैं, रक्त संचार, मल-विसर्जन और श्वाँस-प्रश्वाँस की क्रिया उनकी कुछ ही दिनों में ढीली पड़ जाती है जो अपने भविष्य को अंधकारमय देखते हैं और अप्रिय प्रसंगों की याद करके दुःख, शोक में डूबे रहते हैं। अवाँछनीय परिस्थितियों का सामना करने के लिए मानसिक संतुलन एवं सूझ-बूझ की आवश्यकता पड़ती है। चिंता, निराशा, आवेश, घुटन जैसे मनोविकार उस आवश्यकता की पूर्ति में तो सहायक होते ही नहीं बल्कि सोचने की मशीन में गड़बड़ी कर समाधान ढूँढ़ना और भी कठिन बना देते हैं।

दूसरों की बढ़ोत्तरी देखकर कुढ़ना, दूसरों के दोष दुर्गुणों को ही ढूँढ़ते रहना, भविष्य में कोई विपत्ति आने या अशुभ घटना घटित होने की आशंका करके डरते रहना, यह देखने में बुरी आदतें मात्र मालूम होती हैं, पर बहुत कम लोग जानते हैं कि उनका स्वास्थ्य को नष्ट करने में कितना बड़ा हाथ रहता है। सदा असंतुष्ट रहने वाले व्यक्ति अनिद्रा, सिरदर्द, दिल की धड़कन, मधुमेह जैसे अकाल मृत्यु बुलाने वाले रोगों के चंगुल में फँसते और स्वास्थ्य को बर्बाद करते रहते हैं। आठ घंटे शारीरिक श्रम में उतनी शक्ति नष्ट नहीं होती जितनी आधा घंटा तक मनोविकारों का उद्वेग बने रहने पर हो जाती है।

जिन्हें स्वस्थ रहना हो वे मन को हलका रखें। हँसने की आदत डालें और चित्त को प्रसन्न व संतुष्ट रखा करें। जो अभाव तथा कठिनाइयाँ सामने हैं उनका धैर्य, साहस और सूझ-बूझ के साथ मुकाबला

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

करें। अनुपयुक्त परिस्थितियों को बदलने और समस्याओं को सुलझाने के लिए जो उपाय संभव हों उन्हें योजनाबद्ध ढंग से करने में लग जाएँ। जो कठिनाइयाँ न टाली जा सकें उन्हें धैर्यपूर्वक सहन करें। समझदार और दूरदर्शी व्यक्ति ऐसी ही रीति-नीति अपनाते हैं और हानि-लाभ के क्षणों से बने जीवन के पहिए को लुढ़काते हुए अपना काम चलाते हैं। इसके विपरीत छिछोरी प्रकृति के व्यक्ति जरा-सी बात को आकाश पाताल जैसा महत्त्व देकर स्वयं दुःखी होते, साथियों को उद्विग्न करते तथा अपना शारीरिक या मानसिक स्वास्थ्य चौपट करते रहते हैं। स्वस्थ रहने के लिए निश्चिंत, संतुष्ट, श्रमशील और प्रसन्न रहना आवश्यक है। यह गुण अपने में न हों तो पैदा करने चाहिए अन्यथा मनोविकार शरीर को गलाते और परिस्थितियों को उलझाते चले जाएँगे।

वाशिंगटन कार्यालय से लौटकर प्रतिदिन दो घंटे खराद का काम करते और कुर्सी मेजें बनाया करते। एक दिन वे खराद चला रहे थे कि उनके एक मित्र वहाँ पहुँचे और बोले—बाजार में बहुत अच्छा फर्नीचर मिल सकता है, फिर इस छोटे से काम में समय गँवाने से क्या फायदा। वाशिंगटन ने उत्तर दिया—भाई ! अच्छे सामान की बात नहीं, मैं आफिस की सुस्ती दूर किया करता हूँ, देखो न इसीलिए तो मैं स्वस्थ और निरोग हूँ।

प्रकृति ने हर प्राणी को वह स्वाभाविक क्षमता और बुद्धि दी है जिसके आधार पर वह निरोग दीर्घ-जीवन प्राप्त कर सके। उस क्षमता और बुद्धि का प्रकृति के नियमों के अनुकूल उपयोग करने वाले सभी प्राणी निरोग पाए जाते हैं। वन्य प्रदेशों में स्वच्छंद विचरण करने वाले पशु-पक्षियों को देखते हैं तो उनमें से कोई भी रोगी नहीं दीखता। हिरण, लोमड़ी, खरगोश, शेर, कबूतर किसी को भी तो बीमारियों के चंगुल में फँसा नहीं देखते। केवल एक ही मूर्ख जानवर-मनुष्य है जो प्रकृति अवज्ञा करके अपना आहार-विहार कृत्रिमता से करता है और उस अवज्ञा के फलस्वरूप ही तरह-तरह के रोगों का संकट भोगता है। मनुष्य के चंगुल में फँसे हुए पशुओं में धीरे-धीरे अप्राकृतिक आहार-विहार की विवशता से रोगी रहने का सिलसिला चल पड़ा है।

यदि हम निरोग रहना चाहते हैं तो उसका एक ही उपाय है कि अपने शरीर की बनावट के अनुरूप आहार-विहार अपनाएँ और प्रकृति ने जिस ढंग से रहने का संकेत दिया है उसी का अनुसरण करें। यह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रयोजन कृत्रिम दवा दारू और तथाकथित डिब्बे में बंद पौष्टिक आहारों से पूरा नहीं हो सकता। प्रकृति माता की शरण ही एक मात्र वह उपाय है जिससे वर्तमान रुग्णता और दुर्बलता से छुटकारा पाया जा सकता है और भविष्य के लिए हँसता-खेलता दीर्घ जीवन प्राप्त किया जा सकता है।

हमारे लिए क्या भोजन उपयुक्त है उसके लिए किसी दूसरे से पूछताछ करने की या पुस्तकें पढ़ने की जरूरत नहीं है। मुख के दरवाजे पर बैठा हुआ जिव्हा रूपी डाक्टर किसी भी वस्तु की परीक्षा करके यह बतला सकता है कि क्या अपने लिए ग्राह्य और अग्राह्य है ? जो वस्तुएँ बिना जलाए भूने, बिना मसाले मिठाई मिले अपने-अपने मूल रूप में हमें रुचिकर स्वादिष्ट लगें समझना चाहिए कि यही हमारा प्राकृतिक शुद्ध भोजन है। इस दृष्टि से फल हमारा सर्वोत्तम भोजन है। इसे दुर्भाग्य ही कहना चाहिए कि हमारी रुचि उधर से हटती जाती है, अन्यथा फलों की कृषि की जाने लगे तो वे अन्न की तुलना में सस्ते भी पड़ें और पैसा भी अधिक मिले। मँहगे फल खरीद सकना संभव न हो तो भी ऋतुओं पर उस समय की शारीरिक स्थिति के लिए पूर्णतया उपयुक्त सस्ते ऋतु फल भी मिलते हैं वे भी कम लाभदायक नहीं होते। अपने मौसमों में आम, जामुन, बेर, अमरूद, शहतूत आदि खूब पैदा होते हैं और सस्ते भी मिलते हैं। केला, पपीता महँगे नहीं पड़ते। शाक-वर्ग में उगने वाले कितने ही सस्ते फल सहज ही पाए जा सकते हैं। खरबूजा, तरबूज, ककड़ी, खीरा, टमाटर का अपनी ऋतुओं में बाहुल्य रहता है। कच्चे अन्न पकने में तो कुछ समय लगाते हैं पर जीवन तत्व उनमें भी कम नहीं रहते। मक्का, मटर, चने, ज्वार, बाजरा आदि पकने सूखने से पहले हरी स्थिति में स्वादिष्ट भी रहते हैं और प्रकृति के अनुकूल भी। गेहूँ, चना, मूँग आदि सुपाच्य अन्न सूखे ही लेने हों तो उन्हें पानी में अंकुरित करके खाया जा सकता है। उबालने की नौबत आए तो सुपाच्य शाक अथवा चावल आदि उबाले जा सकते हैं। दलिया भी काम चलाऊ हो सकता है।

गुरुवर ! एक शिष्य ने पूछा—मनुष्य इतनी सुविधा में रहता है, अच्छी-अच्छी चीजें खाता है फिर भी उसे हमेशा बीमारी लगी रहती है। हमेशा दवा खाता रहता है, पर जिन्हें घर, मकान और औषधि उपलब्ध नहीं हैं, वह जंगल के जीव हमेशा नीरोग रहते हैं, ऐसा क्यों ? आचार्य ने बताया—वे प्राकृतिक जीवन जीते हैं। इसलिए कपड़े पहनना, प्रकृति के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विपरीत आचरण करना, परिश्रम से जी चुराना, चाहे जो कुछ चाहे जैसे तल-भून कर खाना यह अप्राकृतिक आचरण ही मनुष्य को रोगी और प्राकृतिक आचरण ही अन्य जीवधारियों को स्वस्थ रखते हैं।

आहार को जितना अधिक जलाया जाएगा और उसमें मिर्च, मसाले, तेल, घी आदि मिलाए जाएँगे उतना ही वह अहितकर और निस्तत्व होता चला जाएगा। आज जीभ को चटोरी बनाकर उसकी आदत बिगाड़ी जाती है और उस बिगड़ी आदत को ही जायका कहकर उदरस्थ किया जाता है। जो स्वाभाविक रूप में जैसा हो वही उसका असली स्वाद है और कौन-सा स्वाद उपयुक्त है इसे बिना बिगड़ी हुई जीभ सहज ही बता सकती है। मिर्च खाते ही जीभ जलती है, नमक खाते ही उलटी आती हैं। हींग, लौंग, हल्दी आदि खाकर कोई देखे तो जीभ सहज ही बतायेगी कि यह जंजाल अपने लिए सर्वथा अग्राह्य है। पर चतुर कहलाने वाले मनुष्य ने जीभ को धीरे-धीरे अवाँछनीय चीजों का अभ्यस्त बना लिया और वह नशेबाज की तरह कड़ुई और विषैली नशीली चीजों की भाँति चिकनाई और मसालों से भरे जलाने और भूनने से निस्तत्व किए गए पकवान मिष्ठानों को स्वादिष्ट मानकर धोखा खाती रहती है। यह आहार उसके पचाने में अनुपयुक्त होते हैं और शरीर को शक्ति देने की अपेक्षा उलटे उसकी संचित शक्ति खोते रहते हैं। ऐसी दशा में पोषण विहीन और जीवनतत्वों से रहित अप्राकृतिक भोजन करने वाला व्यक्ति बीमारी के चंगुल में फँसता चला जाए तो आश्चर्य क्या है ? माँस, मदिरा, तंबाकू जैसे अभक्ष्य पदार्थ स्वास्थ्य की बर्बादी के अतिरिक्त रत्ती भर भी लाभ नहीं दे सकते।

सर्वेक्षण से पता चला कि रूस के अजरवेजान क्षेत्र के लोग दुनियाँ में सबसे अधिक दीर्घ जीवी होते हैं। इस पर स्वास्थ्य विशेषज्ञों ने उसके कारणों की खोज की, तो पता चला कि वहाँ के लोग अधिकांश समय खुले खेतों में काम करते, पहाड़ों पर चढ़ते, झरनों का पानी पीते और आहार में शाक और दूध आदि प्राकृतिक पदार्थों को ही प्रमुखता देते हैं। इसी कारण वे दीर्घजीवी होते हैं। ये लोग इंद्रिय निग्रह का भी पालन करते हैं।

स्वच्छ आहार की तरह स्वच्छ जलवायु भी निरोगिता के लिए आवश्यक है। सड़ा, गला, विषैला भोजन हानिकारक होने की बात सभी जानते हैं, पर यह भूल जाते हैं कि वायु जो अन्न से भी अधिक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आवश्यक है—स्वच्छ मिलनी आवश्यक है। सीलन भरे, बिना खिड़की के तरह-तरह की चीजों से भरे मकानों में गंदी हवा ही रहती है। गली कूचों में भेड़ियों की माँद की तरह गंदे मकानों में रहने वालों की अपेक्षा खुली हवा में पेड़ों के नीचे रहने वाले अधिक निरोग रह सकते हैं। धुल धुएँ सीलन-सड़न से भरा हुआ वातावरण धन कमाने के लिए भले ही उपयुक्त हो स्वास्थ्य को दिन-दिन गलाता जाएगा। मुँह ढककर खिड़की दरवाजे बंद करके सोने की आदत साँस के द्वारा शरीर में विषैले तत्वों के प्रवेश का खुला निमंत्रण है। ऐसा करने वाले निरोग कैसे रह सकते हैं ?

साँस केवल नाक से ही, मुँह से ही नहीं लेते और छोड़ते हैं। यदि चमड़ी पर कोई हवा बाहर न निकलने वाला मजबूत लेप चढ़ा दिया जाए तो आदमी थोड़ी ही देर में बेहोश हो सकता और मर सकता है। कसे हुए कपड़ों की पर्त चढ़ाकर बने ठने रहने वाले लोग फैशन भले ही बना लेते हों कपड़ों के कसाव त्वचा को साँस लेने से रोकते हैं। बहुत कपड़े पहनना ऐसा ही है जैसे नाक पर पट्टी बाँधना। इससे चमड़ी की शक्ति क्षीण हो जाती है और सर्दी-गर्मी सहने की क्षमता खो बैठती है। कसे कपड़ों से लदे रहने वालों को अक्सर सर्दी-गर्मी, जुकाम, खाँसी, लू लगने जैसी शिकायत होती रहती है। यह प्रकृति के अमूल्य उपहार प्राणवायु तथा सर्दी-गर्मी की अवज्ञा करने का ही दुष्परिणाम है जो हमें बीमारियों के रूप में भुगतना पड़ता है। उचित यही है कि हम स्वच्छ वायु में रहें, मकानों में हवा की और प्रकाश की पूरी गुँजाइश रखें, मुँह ढक कर न सोया करें कपड़े कम से कम तथा ढीले पहनें।

प्रश्न

१. स्वास्थ्य की सुरक्षा के संबंध में हमें सावधानी क्यों बरतनी चाहिए ?
२. बीमारी और कमजोरी से अपनी रक्षा कौन कर पाते हैं ?
३. आराम-तलबी एक अभिशाप है—सिद्ध कीजिए।
४. सार्वजनिक स्वास्थ्य के रोज-रोज गिरते जाने के कारण क्या हैं ?
५. स्वास्थ्य रक्षा की नितांत आवश्यकता क्यों है ?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

६. जिस दिन से शारीरिक श्रम का महत्त्व हमारी समझ में आ जाएगा, हमें क्या लाभ होगा ?
७. मेहनत न करने का दंड मनुष्य किस प्रकार से चुकाता है ?
८. स्वास्थ्य रक्षा के लिए मनुष्य और स्त्रियों को क्या-क्या शारीरिक श्रम करना चाहिए ?
६. हमारे मनोविकारों का हमारे स्वास्थ्य पर क्या प्रभाव पड़ता है ?
१०. स्वास्थ्य रक्षा के लिए हमें मानसिक रूप से क्या प्रयत्न करना चाहिए ?
११. वन्य जीव स्वस्थ और निरोग क्यों रहते हैं ?
१२. निरोग रहने के उपाय लिखो ?
१३. उपयुक्त भोजन की परीक्षा कैसे की जाए ?
१४. हमारा सर्वोत्तम भोजन क्या है ?
१५. आहार में सबसे हानिकारक वस्तु क्या होती है ?
१६. तले व भुने पदार्थ स्वास्थ्य के लिए हानिकारक क्यों होते हैं ?
१७. स्वास्थ्य के लिए कैसा वातावरण जरूरी है ?
१८. परिश्रम के क्या लाभ हैं, शारीरिक श्रम कितना किया जाए ?
१९. ब्रह्मचर्य जीवन के लिए क्यों आवश्यक है ?
२०. हमारा जीवन किस प्रकार का हो ?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वच्छता

अस्वच्छता मनुष्य की आंतरिक और गई गुजरी स्थिति का परिचय देती है। गंदा आदमी यह प्रकट करता है कि उसे अवांछनीयता हटाने और उत्कृष्टता बनाये रखने में कोई रुचि नहीं है। लापरवाह, आलसी और प्रमादी ही गंदे देखे गये हैं। जो अवाँछनीयता से समझौता करके उसे गले से लगाए रह सकता है, वही गन्दा भी रह सकता है। गंदगी देखने में सबको बुरी लगती है और उस व्यक्ति के प्रति सहज ही घृणा बुद्धि उत्पन्न करती है। गंदे को कौन अपने समीप बिठाना चाहेगा ? दुर्गंध से किसे अपनी नाक, मलीनता से अपनी आँखें और हेय प्रवृत्ति को देखकर कौन अपनी मनोदशा क्षुब्ध करना चाहेगा ? जिन्हें तिरस्कार, अपमान, घृणा, असहयोग, उपेक्षा और निंदा प्राप्त करनी हो—दूसरों की आँखों में अपना स्तर गया-गुजरा सिद्ध करना हो, उनके लिए सरल मार्ग खुला पड़ा है—गंदा रहना शुरू कर दें। उपरोक्त सभी अभिशाप उन्हें सहज ही तुरंत मिलने आरंभ हो जाएँगे।

वर्धा गाँधी जी के आश्रम में दो साधु आए और बोले—हमें सेवा का काम दीजिए। गाँधी जी ने उस समय तो उन्हें खिला-पिलाकर सुला दिया। पर सबेरे ही झाड़ू लेकर पहुँचे और बोले—आज आश्रम की सफाई आपको करनी है। साधु मीन-मेख निकालने लगे, तो बापू बोले—जो सफाई नहीं कर सकता, वह सेवा क्या करेगा ?

गंदगी स्वास्थ्य की दृष्टि से अतीव हानिकारक है। उसे बीमारी का संदेशवाहक अथवा आमंत्रण कह सकते हैं। जहाँ गंदगी रहेगी वहाँ बीमारी जरूर पहुँचेगी। गंदगी से बीमारी को बहुत प्यार है। फूलों को तलाश करती हुई तितली जिस प्रकार फूल पर जा पहुँचती है उसी तरह जहाँ गंदगी फलफूल रही होगी वहाँ बीमारी भी खोज, तलाश मिलाती हुई जरूर पहुँच जाएगी। बीमारी भी गंदगी पैदा करती है यह ठीक है पर यह निश्चित है कि जो गंदे हैं वे स्वस्थ न रह सकेंगे। जिन्हें बीमारी से प्यार हो उन्हें गंदा रहना शुरू कर देना चाहिए। उनकी प्रिय देवी बिना बुलाए ही दौड़ती चली आएगी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मनुष्य की मूल प्रकृति गंदगी के विरुद्ध है, इसलिए किसी व्यक्ति या पदार्थ को गन्दा देखते हैं तो अनायास ही घृणा उत्पन्न होती है और वहाँ से दूर हटने को जी करता है। अस्तु, जिन्हें मनुष्यता का ज्ञान है उन्हें गंदगी हटाने का स्वभाव अपनी प्रकृति में अनिवार्यतः जोड़ लेना चाहिए। कहने की आवश्यकता नहीं—इस दृष्टि से भारत जैसे उष्ण देश में हर किसी के लिए खुरदरे तौलिए से रगड़-रगड़कर दिन में एक बार तो स्नान करना आवश्यक है। दो लोटे पीठ पर लुढ़का लेने और गीले बदन ही कपड़े बदल लेने की बेगार भुगतना, नहाने से भी बुरा पड़ता है। उससे देह का मैल छूटता नहीं वरन् पानी पड़ने से और भी अधिक फूलता सड़ता है। नहाना हो तो इस तरह नहाना चाहिए कि शरीर का एक-एक गुप्त या प्रकट अंग खुरदरे तौलिए से भली प्रकार रगड़-रगड़कर इतना साफ कर लिया जाए कि चमड़ी पर थोड़ी लालिमा उभर आए। सर्दी के दिनों में बंद स्नान घर में नहाया जा सकता है। कमजोर व्यक्ति गरम पानी ले सकते हैं। बीमारों का भीगे तौलिए से रगड़कर भी काम चल सकता है। हर हालत में हर व्यक्ति को स्वच्छता के लिए स्नान आवश्यक मानना चाहिए। चेचक जैसे रोगों में मजबूरी उत्पन्न हो जाए तो बात दूसरी है, नहीं तो बीमारों को भी चिकित्सक के परामर्श से स्वच्छता का कोई न कोई रास्ता जरूर निकालते रहना चाहिए।

अन्य सभी इंद्रियों के छिद्रों को भली प्रकार साफ किया जाना चाहिए अन्यथा वहाँ मैल जमने और सड़ने लगेगा। मुँह की सफाई बहुत ध्यान देने योग्य है। जीभ पर मैल की एक पर्त जमने लगती है और दाँतों की झिरी में अन्न के कण छिपे रहकर सड़न पैदा करते हैं। मुँह से बदबू आने के यह दो ही प्रधान कारण हैं। सबेरे कुल्ला करते समय दाँतों को भली प्रकार साफ करना चाहिए। जितने बार कुछ खाया जाये उतने ही बार कुल्ला करना चाहिए और रात को सोते समय तो जरूर ही मुँह की सफाई कर लेनी चाहिए। इससे दाँत अधिक दिन टिकेंगे, मुँह में बदबू न आएगी और लोगों को पास बैठने पर दूर हटाने की आवश्यकता न पड़ेगी।

साधु ने मल्लाह के लड़के को देखा। शरीर में फोड़े, दाद, फुंसी हो रही थीं। बोले—क्यों स्नान नहीं करता क्या ? उसका पिता बोले—महाराज ! हम लोग मल्लाह हैं, हम तो पानी में ही काम करते हैं,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दिन में कई बार स्नान होता है। साधु बोला—एक बार स्नान करो, पर मैल छुटा कर करो, तो वही सौ स्नान के बराबर है।

कपड़े जो शरीर को छूते हैं उन्हें विशेष ध्यान देकर साबुन से रोज धोना चाहिए। बनियान, अंडर वियर, धोती, पाजामा आदि पसीना सोखते रहते हैं और रोज साबुन तथा धूप की अपेक्षा करते हैं। कोट जैसे कपड़े जिनका पसीना से संपर्क नहीं होता, नित्य धोने से छूट पा सकते हैं। भारी बिस्तरों को धोना तो कठिन पड़ेगा पर शरीर छूने वाले चादरे जल्दी-जल्दी बदलते रहना चाहिए और बिस्तर को कड़ी धूप में हर रोज सुखाना चाहिए।

घर के बर्तन इस तरह नहीं रहने चाहिए जिन पर चूहे और छिपकली पेशाब करें और उस जहर से अप्रत्यक्ष बीमारियाँ शरीरों में घुस पड़ें। खुले हुए पदार्थों में कीड़े-मकोड़े घुसते हैं। इसलिए हर खाने में काम आने वाली वस्तु दबी-ढकी रहनी चाहिए। कपड़े, बर्तन, फर्नीचर, किताबें, जूते तथा अन्य सामान यथास्थान रखा हो तो ही सुंदर लगेगा। अन्यथा बिखरी हुई अस्त-व्यस्त चीजें कूड़े और गंदगी की ही शक्ल धारण कर लेती हैं, भले ही वे कितनी ही मूल्यवान हों। जिस वस्तु को झाड़ते-पोंछते न रहा जाएगा वह धूलि के पर्त जमा होने तथा लगातार ऋतु प्रभाव सहते रहने से मैली पुरानी हो जाएगी। हर चीज सफाई, मरम्मत और व्यवस्था चाहती है। घर का हर पदार्थ हमसे यही आशा करता है कि उसे स्वच्छ और सुव्यवस्थित रखा जाए। जिन्हें स्वच्छता से सच्चा प्रेम है वे शरीर का श्रृंगार करके ही न बैठ जाएँगे वरन् जहाँ रहेंगे वहाँ हर पदार्थ की शोभा, स्वच्छता एवं सुसज्जा का ध्यान रखेंगे। मकान की टूट-फूट और लिपाई-पुताई का, किवाड़ों की रंगाई का ध्यान रखा जाए तो उसमें बहुत पैसा खर्च नहीं होता। थोड़ा-थोड़ा समय बचाकर घर के लोग मिल-जुलकर यह सब सहज ही एक मनोरंजन की तरह करते रह सकते हैं और घर परिवार में शरीर और बच्चों में मानवोचित स्वच्छता का दर्शन हो सकता है। कलाकारिता स्वच्छता से आरंभ होती है। अवाँछनीयता को अस्वीकार करने की प्रवृत्ति का अभिवर्धन शरीर से आरम्भ होकर वस्त्रों तक और मन से लेकर व्यवहार तक की स्वच्छता तक विकसित होता चला जाता है और इस अच्छी आदत के सहारे परम सौंदर्य से भरे हुए इस विश्व में भगवान की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रकाशवान कलाकारिता को देखकर आनंद विभोर रहता हुआ पूर्णता के लक्ष्य तक पहुँचा जा सकता है।

एक गाँव का युवक ऋषि दयानंद के पास जाकर बोला—महाराज ! मुझे स्वर्ग जाने से कोई नहीं रोक सकता, मैंने १०८ बार गंगाजी का स्नान किया है। मेरे सभी पाप धुल गये। महर्षि हँसकर बोले—तेरे शरीर का मैल छूटा नहीं, मन का मैल क्या छूटेगा ? बेटा ! जा और पहले स्नान का ही स्वरूप सीख कर आ।

अपने यहाँ मल-मूत्र संबंधी गन्दगी के लोग बुरी तरह अभ्यस्त हो गए हैं। पुराने ढंग के पखानों में फिनायल, चूना आदि न पड़ने से उनमें भारी दुर्गंध आती है। बच्चों को नालियों पर गलियों में टट्टी कराके रास्ते दुर्गन्धपूर्ण एवं जी मिचलाने वाले बना दिए जाते हैं। घरों के आगे लोग कूड़े का ढेर लगा देते हैं। पेशाब ऐसे स्थानों पर करते रहते हैं जहाँ सार्वजनिक आवागमन रहता है। मेहतर के भरोसे सब कुछ निर्भर रहता है। यह नहीं सोचते कि मल-मूत्र आखिर है तो हमारे ही शरीर का, उसकी स्वच्छता के लिए कुछ काम स्वयं भी करें और मेहतर के काम में सहयोग देकर स्वच्छता बनाए रखने का अपना कर्त्तव्य निबाहें। देहातों में तो और भी बुरी दशा का वातावरण गंदगी, दुर्गंध और अस्वास्थ्यकर घृणास्पद दृश्यों से भरा पड़ा रहता है। कूड़े और गोबर के ढेर जहाँ-तहाँ लगे रहते हैं और उसकी सड़न सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए संकट उत्पन्न करती रहती है। इस दिशा में विशेष रूप से ध्यान दिया जाना चाहिए। सोख्ता पेशाबघर, सोख्ता नालियाँ तथा गड्ढे खोदकर लकड़ी के शौचालय बहुत सस्ते में तथा बड़ी आसानी से बनाए जा सकते हैं। गाँव में पानी का लोटा साथ ले जाने की तरह यदि एक खुरपी भी लोग साथ ले जाया करें और छोटा गड्ढा खोदकर उसमें टट्टी करने के उपरांत गड्ढे को ढक दिया करें तो जमीन को खाद भी मिले और गंदगी के कारण उत्पन्न होने वाली शारीरिक, मानसिक और सामाजिक अवाँछनीयता भी उत्पन्न न हो।

स्वच्छता मानव जीवन की सुरुचि का प्रथम गुण है। हमें अपने शरीर, वस्त्र, उपकरण एवं निवास की स्वच्छता का ऐसा प्रबंध करना चाहिए जिससे अपने को संतोष और दूसरों को आनन्द मिले। निर्मलता, निरोगता, निश्चिंतता और निर्लिप्तता के आधार पर उत्पन्न की गई आत्मा की पवित्रता हमें ईश्वर से मिलाने का पथ प्रशस्त करती है। स्वच्छता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

को हम अनिवार्य मानें और अस्वच्छता का निष्कासन निरंतर करते रहें, यही हमारे लिए उचित है।

प्रश्न

१. गंदा आदमी किस कारण घृणित माना जाता है ?
२. बीमारी किस जगह में अधिक होती है ?
३. हमें भारतवर्ष में स्नान किस तरह करते रहना चाहिए ?
४. अपने दाँतों को अधिक टिकाने और मुँह में बदबू न आने देने के लिए हमें क्या करना चाहिए ?
५. अपने कपड़े, जिन्हें हम रोज व्यवहार में लाते हैं, किस प्रकार स्वच्छ किए जाने चाहिए ?
६. अपने घरों को, अपने कमरों को किस प्रकार जमाना चाहिए ?
७. मलमूत्र से सफाई रखने के लिए क्या उपाय किए जाने चाहिए ?
८. स्वच्छ रहने का प्रतिफल हमें क्या मिलेगा ?

● ●

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संयम से सुखी जीवन

सप्तर्षियों की बैठक होने वाली थी। उससे पूर्व ही वेदव्यास को महाभारत लिखकर देना था। समय कम था, तो भी उन्होंने गणेश जी की मदद ली और महाभारत लिखना प्रारंभ कर दिया। महाभारत समय से ही पूर्व लिखा गया। अंतिम श्लोक लिखाते हुए व्यास जी ने कहा—गणेश ! आश्चर्य है कि पूरा महाभारत लिख गया और इस बीच आप एक शब्द भी नहीं बोले। गणेश जी ने कहा—भगवन् ! इस संयम के कारण ही हम लोग वर्षों का कार्य कुछ ही दिनों में संपन्न करने में समर्थ हुए हैं।

व्यक्तिगत रूप से शारीरिक स्वास्थ्य की रक्षा के लिए (१) आहार (२) विहार (३) श्रम (४) संतुलन की दिशा सही होना आवश्यक है। इन चारों को पलंग के चार पायों की तरह संबद्ध मानना चाहिए। इनमें से एक भी गड़बड़ करेगा तो अस्वस्थता की विपत्ति आ दबोचेगी। कई बार प्रारब्ध एवं परिस्थितिवश संयमी लोगों को भी दुर्बलता एवं रुग्णता के कुचक्र में फँसना पड़ता है। पर वह थोड़ी-सी घटनाएँ अपवाद मात्र हैं। आमतौर से यही सिद्धांत काम करता है कि जो स्वास्थ्य के नियमों की उपेक्षा करेगा वही अस्वस्थता का शिकार होगा। अतः हम में से प्रत्येक को इस दिशा में सतर्क रहना चाहिए।

आहार के थोड़े से नियम हैं। भूख से आधा खाए। आधा पेट अन्न से, चौथाई पानी से और चौथाई हवा आने-जाने के लिए खाली रखें। जो ठूँसकर खाता है वह पेट पर अत्याचार करता है और अपचन को आमन्त्रित करता है। जो खाना हो नियत समय पर ही खाना चाहिए। दिन भर बकरी की तरह मुँह चलाते रहना पाचन क्रिया के साथ खिलवाड़ करना है। हाँडी में एक बार खिचड़ी डाल दी जाए तो खिचड़ी कुछ कच्ची, कुछ पक्की, कुछ जली, कुछ गली और वह बेकार हो जायेगी। दिन भर खाते रहने वाले ऐसी ही बेकार खिचड़ी अपने पेट में पकाते हैं और हानि उठाते हैं। भोजन स्वाद के लिए नहीं शरीर-रक्षा को औषधि समझकर ग्रहण करना चाहिए। उसका स्वाद नहीं गुण देखा जाता है। जो वस्तुएँ सुपाच्य, सात्विक हों उन्हें भी बहुत जलाए, भूने बिना,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मिर्च-मसालों की भरमार किए बिना खाना चाहिए। तले हुए, चटपटे, मावा और चीनी वाले, गरिष्ठ, नशीले और माँस जैसा अभक्ष्य पदार्थों में पैसा भी अधिक लगता है और पाचन ठीक न होने से रक्त भी विषैला बनता है। स्मरण रखने की बात है कि अपचन ही समस्त रोगों का जनक है। जिसने अखाद्य खाया, अनावश्यक खाकर अपना पेट बिगाड़ा, उसे बीमारियों के चंगुल में फँसने से कोई बचा नहीं सकता।

जो खाया जाए मुँह में अच्छी तरह चबा लिया जाए। जल्दबाजी में ग्रास निगलते चलने से आधा चबाया भोजन पेट का बहुत समय और श्रम लेकर पचता है। स्वच्छता पूर्वक और स्वच्छता के साथ खाया हुआ भोजन ही स्वास्थ्यकर होगा। गंदगी के सम्मिश्रण से अच्छी वस्तुएँ भी विषैली बन जाती हैं। सड़ी-गली तथा बाजारू चीजों से बचना चाहिए। जब खाना हो प्रसन्न चित्त, संतुष्ट, निश्चिंत मनोभूमि के साथ आहार को ईश्वर का प्रसाद समझकर ग्रहण करना चाहिए। असंतुष्ट, रुष्ट, उद्विग्न मनःस्थिति में नाक-भौं सिकोड़ते, नुक्ताचीनी करते हुए खाया गया अच्छा आहार भी हानिकारक परिणाम उत्पन्न करता है। हमारे भोजन में शाक-भाजी और ऋतु फलों की भी आवश्यक मात्रा रहनी चाहिए। ये बहुत महँगे नहीं हैं, पर बहुमूल्य व्यंजनों से बढ़कर लाभदायक है।

जब तक पिछला भोजन न पच जाए तब तक अगला ग्रहण नहीं करना चाहिए। किसी कारण पेट में अपच हो तो एक समय का भोजन तुरंत बंद कर देना चाहिए। सप्ताह में एक बार आधा दिन या पूरे दिन के लिए पेट को छुट्टी दे दी जाए, उपवास कर लिया जाए तो स्वास्थ्य की सुरक्षा के लिए यह बहुत लाभदायक सिद्ध होगा। उपवास का अर्थ है नियत अवधि तक पानी के अतिरिक्त और कुछ न लेना। आजकल की तरह फलाहार के नाम पर अल्लम-गल्लम ठूँसते रहने वाले उपहासास्पद उपवास स्वास्थ्य की दृष्टि से निरर्थक ही नहीं हानिकारक भी होते हैं। उपवास का उद्देश्य पेट को विश्राम देना है। उसमें पानी, ठंडाई या नींबू की शिकंजी जैसा कोई हलका पेय ही चल सकता है।

थाली में कम से कम किस्म के भोजन रहें। खाद्य पदार्थों की भरमार से थाली सजाना, मेहमानदारी, चटोरेपन या अमीरी का दिखावा भले ही कर ले, पाचन की दृष्टि से उसमें केवल हानि ही हानि है। अपने देश में भोजन पकाने में इतना अधिक अग्नि सम्पर्क किया जाता है कि आहार के पोषक तत्त्व ही जल जाते हैं और खाने वाले को मूल

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पदार्थ का कोयला ही हाथ लगता है। मिष्ठान और पकवान, दूध और अन्न जैसे पदार्थों के जीवन को नष्ट करके जलाए भूने पदार्थों में कुछ पोषण शेष नहीं रह जाता। इसलिए उचित यही है कि कम से कम अग्नि संपर्क पकाने के समय किया जाए। जो शाक-भाजी, फल बिना पकाए खाए जा सकते हैं, उन्हें उसी तरह खाना चाहिए। जिनका छिलका खाया जा सकता है उन्हें छिलके समेत लेना चाहिए। क्योंकि पोषक तत्वों की अधिकता छिलके में ही होती है। आटा और दाल भी छिलका समेत लेना चाहिए। चीनी के बजाए गुड़ में कुछ जान बची रहती है। जिन्हें पकाना हो उन्हें उबाल भर लेना चाहिए। दलिया, चावल, खिचड़ी, शाक आदि सब भाप के द्वारा (कुकर पद्धति से) पकाए जाएँ तो उनमें पोषण बना रहेगा। सद्भावना वाले व्यक्तियों द्वारा पकाया, परोसा और हँसी-खुशी के वातावरण में मिल-जुलकर खाया हुआ सस्ता भोजन भी स्वास्थ्य की दृष्टि से बहुत उपयोगी सिद्ध होता है। आहार संबंधी इन मुख्य नियमों की आदत डाल ली जाए तो समझना चाहिए कि शारीरिक समर्थता की पहली मंजिल पार कर ली।

शर-शैया पर पड़े हुए भीष्म पितामह कौरवों-पांडवों को धर्मोपदेश दे रहे थे। तभी द्रौपदी को हँसी आ गई। द्रौपदी को हँसते देख, पितामह ने पूछा—बेटी ! असमय हँसने का कारण क्या है ?

द्रौपदी बोली—पितामह ! क्षमा करें, आज तो आप इतने ज्ञान की बातें कर रहे हैं, एक दिन कौरवों की सभा में मेरा अपमान हो रहा था, वस्त्र खींचे जा रहे थे, तब आपका ज्ञान कहाँ चला गया था ? भीष्म पितामह बोले—बेटी ! तब मेरे मन पर कुधान्य का प्रभाव था, जो कई दिन के उपवास के कारण अब दूर हो गया है।

आहार के बाद विहार का नंबर आता है। विहार का अर्थ है नियमित एवं व्यवस्थित आचरण। स्वास्थ्य की दृष्टि से नियमितता का भारी महत्त्व माना गया है। नियत समय पर सोना, जागना, नहाना आवश्यक है। नित्य कर्मों में बरती जाने वाली अस्त-व्यस्तता एवं अनियमितता स्वास्थ्य को चौपट करके रख देती है। कई व्यक्ति बड़े आलसी और लापरवाह होते हैं, अपनी दिनचर्या का कोई क्रम नहीं रखते। चाहे जब, चाहे जो करने की आदत शरीर रक्षा की दृष्टि से एक गंभीर खतरा है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दिन काम करने और रात सोने के लिए है। नौ-दस बजे से अधिक नहीं जागना चाहिए और प्रातः सूर्योदय से पूर्व उठ जाना आवश्यक है। उठते ही मल-मूत्र विसर्जन की नित्य क्रिया करनी चाहिए। जब टट्टी लगेगी तब जाएँगे की नीति बहुत बुरी है। आदतों का शरीर क्रम पर बड़ा प्रभाव पड़ता है। मल विसर्जन, शारीरिक स्वच्छता और भोजन आदि का समय यदि कोई निर्धारित नहीं है, तो पाचन-तंत्रों की क्रिया में अवश्य ही व्याघात पड़ जाएगा। जब फुर्सत मिले तब खाने की आदत पेट को खराब कर देती है। सतर्क और समझदार लोग शारीरिक क्रियाएँ समय पर करने का पूरा ध्यान रखते हैं और इस प्रकार अपने आरोग्य को नष्ट होने से बचाते हैं।

दिनचर्या को व्यवस्थित बना लेना आरोग्य-रक्षा की गारंटी है। प्रातः उठने से लेकर रात को सोने तक की क्रमबद्ध विधि-व्यवस्था बनी रहनी चाहिए। समय का विभाजन जिस क्रम से किया जाए, कार्य-पद्धति जैसी भी निर्धारित की जाए, उसे कड़ाई से पालन किया जाये। शौच, स्नान, व्यायाम, भोजन, व्यवसाय, अध्ययन, खेल, शयन आदि की कार्य पद्धति निर्धारित क्रम से चलती रहे तो शरीर की आंतरिक प्रणाली एक ढर्रे पर चलने लगती है और हर कार्य बिना किसी अड़चन के सहज और सुचारु रूप से होता चलता है। इस प्रकार की व्यवस्था का स्वास्थ्य पर बहुत अनुकूल प्रभाव पड़ता है और वह देर तक कार्यक्षम बना रहता है।

पड़ौस की एक स्त्री नैपोलियन से बहुत छेड़छाड़ करती, पर नैपोलियन उसकी ओर ध्यान न देकर अपनी पढ़ाई में जुटा रहता। कुछ दिन पीछे नैपोलियन अपने देश का सेनापति बन गया। वह अपने संबंधियों से मिलने घर गया तो उस स्त्री से भी मिला और पूछा—यहाँ कोई नैपोलियन नामक लड़का पढ़ता था, आप उसे जानती हैं क्या ? इस पर स्त्री बोली—हाँ था एक नीरस किताबी कीड़ा। नैपोलियन हँसकर बोला—श्रीमती जी ! यदि वह उन दिनों नीरस न रहा होता, तो अपने देश का प्रधान सेनापति बनकर आपके सामने न खड़ा होता।

मनुष्य के शरीर और मन में शक्तियों का अकूत भंडार भरा पड़ा है। उनको नष्ट होने से बचाया जा सके और उस बचत का सदुपयोग किया जा सके तो अभीष्ट दिशा में आशाजनक सफलताएँ प्राप्त की जा सकती हैं। इस तथ्य को न समझकर हम अपनी बहुमूल्य शक्तियों का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

निरर्थक अपव्यय करते रहते हैं और ईश्वर-प्रदत्त शक्ति भंडार को खोकर खोखला, रुग्ण, अशक्त और असफल जीवन जीते हुए मौत के दिन पूरे करते हैं।

शरीर और मन अपने-अपने आहारों द्वारा शक्तियों का निरंतर उत्पादन करते रहते हैं और हमारा सामर्थ्य भंडार निरंतर बढ़ता रहता है। इस उत्पादन को यदि अपव्यय से बचाया जा सके और उसे रचनात्मक दिशा में प्रयुक्त किया जा सके तो निस्संदेह किसी भी दिशा में आशाजनक प्रगति का सुयोग मिल सकता है।

संयम का अर्थ है—शक्तियों के अपव्यय को रोकना। यह अपव्यय अधिकतर हमारी इंद्रियों द्वारा होता है। इंद्रियों में दो प्रमुख हैं—एक जीभ दूसरी जननेंद्रिय। जीभ के द्वारा हम निरर्थक बकवास करते रहते हैं, निंदा, चुगली, शेखी तथा गप्पें हाँकने में जिह्वा की बहुत भारी शक्ति का अपव्यय होता है। असत्य और कटु न बोलने का जिह्वा संयम यदि बरता जा सके तो हमारी वाणी इतनी प्रभावशाली हो सकती है कि उसका दूसरों पर आश्चर्यजनक प्रभाव पड़े और वरदान, आशीर्वाद देने की क्षमता उत्पन्न हो जाए। निरर्थक बकवास से हमारा बहुत मनोबल नष्ट होता है। वाचाल व्यक्ति की अंतरंग क्षमता खोखली होती जाती है और वह एक दिन विदूषक मात्र रह जाता है। मौन को तप माना गया है। तपस्वियों जैसा मौन तो हर किसी के लिए संभव नहीं, पर इतना तो कोई भी कर सकता है कि अनर्गल बकवास पर नियंत्रण करे और उतना ही नपा-तुला बोले जो अपने तथा दूसरों के लिए आवश्यक एवं हितकर हो।

जिह्वा का दूसरा असंयम है—चटोरापन। विकृत जायके के लिए हम अवाँछनीय अभक्ष्य पदार्थ खाते रहते हैं। स्वाद का आकर्षण आवश्यकता से अधिक मात्रा में खाने के लिए ललचाता है। यह बढ़ी हुई मात्रा पेट पर भार बनती और उसे दिन-दिन दुर्बल करती चली जाती है। मसाले एक प्रकार के मन्द विष हैं। वे जीभ, पेट, आँतें और उदर के हर हिस्से को जलाते हैं। उत्तेजना में आदमी खा तो अधिक जाता है, पर मात्रा से अधिक पचावे कौन ? धीरे-धीरे अपच बढ़ता जाता है और पाचन-यंत्र इतना कमजोर बन जाता है कि स्वल्प मात्रा में आहार पचाना भी कठिन पड़ता है। यहीं से दुर्बलता और रुग्णता की नींव पड़ती है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बिना पचा भोजन पेट का भार मात्र है। वह शक्ति पैदा न कर सकेगा तो दुर्बलता बढ़ेगी ही। अपच के कारण पेट में जो विषैली सड़न पैदा होती है, वही शरीर के विभिन्न अंगों में पहुँचकर वहाँ विभिन्न रोगों का सृजन करती चली जाती है और व्यक्ति व्यथा, पीड़ाएँ भोगता हुआ अकाल में ही काल कवलित होता है।

प्रसिद्ध अमरीकी उद्योगपति हेनरी फोर्ड जिनके कारखाने में ५ सैकंड में एक फोर्ड कार बनती है एक बार फैक्ट्री घूमने आए। वहाँ मजदूरों को मोटी-मोटी रोटियाँ खाते देखकर बोले—मेरी मृत्यु होगी, तब भगवान से एक ही वरदान माँगूँगा कि वह मुझे भी मजदूर बनाए। साथी ने आश्चर्य से पूछा—ऐसा क्यों ? तो उन्होंने बताया—स्वाद के असंयम के कारण मेरा पेट इतना खराब हो गया है कि चाय और सिगरेट के अतिरिक्त और कुछ पचा ही नहीं पाता। मुझे मजदूरों को इस तरह खाते देख ईर्ष्या होती है।

जननेंद्रिय का संयम और भी अधिक महत्त्वपूर्ण है। शरीर जो कुछ उपलब्ध करता है, उसका सार तत्व—दूध में से घी की तरह—बचाता है। इसी का नाम शुक्र, वीर्य और अंततः ओजस है। चेहरे पर चमक, वाणी में प्रभाव, आँखों में ज्योति, मस्तिष्क में मेघा, स्वभाव में साहस, इसी तत्व का प्रतिफल है। देह में यह थोड़ी-सी ही बूँदें रहती हैं, पर वे समग्र प्रतिभा के रूप में प्रकाशवान बनती हैं। इनमें इतनी सामर्थ्य है कि अपने जैसे कितने ही नए मनुष्य विनिर्मित कर सकें। इस आश्चर्यजनक शक्ति को सर्प की मणि की तरह कहा जा सकता है। कहते हैं कि सर्प अपनी मणि जब खो बैठता है, तब उसकी देह निर्जीव जैसी बन जाती है। मनुष्य की भी यही स्थिति है। इस सार तत्व का जितना भी अपव्यय करता है, वह शारीरिक और मानसिक दृष्टि से उतना ही दुर्बल बनता चला जाता है। कामुक व्यक्ति न निरोग रह सकते हैं और न दीर्घ जीवन का आनंद ले सकते हैं। उन्हें अनेक रोग घेरे रहते हैं और मनस्विता गँवाकर दीन, दुर्बल, कायर, भीरू, अस्थिर और अन्यमनस्क बनते चले जाते हैं। ब्रह्मचर्य की दिशा में असंयम बरतने वाले रुग्ण और दुर्बल संतानें ही उत्पन्न करेंगे। कामुकता पर अंकुश लगाना ब्रह्मचर्य का समुचित ध्यान रखना, जननेंद्रिय का संयम बरतना, हर विचारशील व्यक्ति के लिए आवश्यक है। जिसे शारीरिक परिपुष्टता,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दीर्घजीवन और समर्थ मनस्विता की आवश्यकता है, उसे यथा तथ्य गाँठ बाँध लेना चाहिए कि शरीर के सार-तत्व को खिलवाड़ का विषय न बना लें। संतान वृद्धि की जितनी आवश्यकता हो उसके अनुरूप वासना में ढील दें, अन्यथा इस दिशा में आवश्यक मर्यादाओं का निरंतर पालन करता रहे। विवाह का उद्देश्य दो आत्माओं का पवित्र गठबंधन है और एक-दूसरे के शारीरिक, मानसिक सार-तत्व को नष्ट-भ्रष्ट करने में जुट जाने का नाम विवाह-मैत्री नहीं है। यह तो प्रत्यक्ष शत्रुता है।

भस्मासुर ने शिव को प्रसन्न कर वह वरदान पाया कि जिसके ऊपर भी वह हाथ रख देगा, वही भस्म हो जाएगा। वरदान पाकर वह बड़ा शक्तिशाली हो गया, किंतु कामुकता के कारण अपने इष्टदेव के ही अहित की बात सोच बैठा। भगवान विष्णु स्त्री वेश बनाकर पहुँचे और बोले—एक हाथ कमर पर और दूसरा हाथ सिर पर रखकर नाचो तो विवाह कर लूँ। कामुक भस्मासुर ने अपनी विवेक बुद्धि खो दी। वैसे ही नाचने के उपक्रम में खुद ही जलकर भस्म हो गया।

अन्य इंद्रियाँ भी ऐसी ही हैं, जिन्हें संयम की शिक्षा मिलनी चाहिए। आँखों में शुद्ध सौंदर्य की आकांक्षा तो बनी रहे पर कामुकता की दुर्भावना से चारों ओर बिखरे सौंदर्य को न निहारें। इससे मिलने वाला कुछ नहीं, केवल आंतरिक शक्ति नष्ट होगी और अकारण उद्विग्नता बढ़ेगी। मन कलुषित होगा, कुमार्ग पर कदम बढ़ेंगे और अंततः पतन के पथ पर लुढ़क पड़ने का अवसर आ जाएगा। आँखों के लिए यही उपयुक्त है कि वे सौंदर्य को उत्कृष्ट आध्यात्मिकता की पवित्र दृष्टि से देखें और हर घड़ी प्रमुदित और सन्तुष्ट रहने की ही स्थिति प्राप्त करें। कान श्रृंगार और अश्लीलता सुनने के लिए लालायित न रहें। निंदा, चुगली में रस न लें, बहुत कुछ आवश्यक तथ्य सुनने के लिए शेष हैं उन्हीं के लिए प्रवृत्ति क्यों न मोड़ी जाए ? नासिका माँस-मदिरा जैसे अभक्ष्यों की दुर्गंध को सहन क्यों करें ? नासिका की स्वाभाविक प्रीति स्वच्छता और सात्विकता को पसंद करने में है अच्छा हो हमारी नासिका सही पथ प्रदर्शन करने में समर्थ बनी रहे।

कौत्स ने मार्ग में पड़ी एक घायल स्त्री को देखा, एक क्षण ठहरे फिर कुछ सोचकर आगे चल पड़े। पीछे उनके गुरु कण्व आए, उन्होंने उस स्त्री को देखा तो करुणा उभर आई। आश्रम में लाकर उसका उपचार किया। कौत्स को बुलाकर उन्होंने पूछा—तात ! क्या तुमने इसे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

घायल स्त्री को नहीं देखा था ? देखा था गुरुवर ! किंतु स्त्री का सौंदर्य मुझे विचलित न कर दे, इसी भय से इसे उठाया नहीं। महर्षि कण्व ने कहा—तात ! जिस प्रकार पानी से बाहर तैरना नहीं सीखा जा सकता, उसी प्रकार सामाजिक कर्त्तव्यों से बाहर रहकर संयम का भी अभ्यास नहीं हो सकता।

संयम अर्थात् शक्तियों का संचय। असंयम अर्थात् सामर्थ्य की बर्बादी। यह मोटा तथ्य है कि बर्बादी का अवलंबन करने वाला एक दिन दिवालिया बन जाता है और जो थोड़ा-थोड़ा बचाता रहता है, उसकी संपदा समय-समय पर अनेक सुविधाएँ प्रस्तुत करती हैं। इंद्रियों का संयम अपने आपको बर्बादी से बचाकर समृद्धि की ओर अग्रसर करने का बुद्धिमत्तापूर्ण प्रयास है। इसी में हम सब का कल्याण है।

प्रश्न

१. 'शारीरिक सामर्थ्य' बनाए रखना हमें क्यों आवश्यक है ?
२. अस्वस्थ रहने के कारण हमें क्या हानियाँ हैं ?
३. शारीरिक स्वास्थ्य रक्षा के लिए कौन-कौन से कार्य हमें करने चाहिए ?
४. आहार के क्या नियम हमें पालन करने चाहिए ?
५. आहार हमें किस दृष्टि से ग्रहण करना चाहिए ?
६. किस तरह की वस्तुएँ खानी चाहिए, किस तरह की नहीं तथा हमारी मनोवृत्ति उस समय किस तरह की होनी चाहिए ?
७. एक बार भोजन करने के बाद फिर भोजन कब और कैसे करना चाहिए ?
८. भोजन किस तरह से किया जाना चाहिए ?
९. आहार के सिवाय और किस पर नियंत्रण रखा जाना चाहिए ?
१०. नियमित दिनचर्या किस प्रकार श्रेष्ठ, शक्तिशाली बनाती है ?
११. संयम का अर्थ समझाते हुए उसके महत्त्व पर प्रकाश डालिए ?
१२. संयम कितने प्रकार का होता है ?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

१३. किसी संयम के प्रकार एवं लाभ बताओ ?
१४. अपच का मूल कारण क्या है ?
१५. ब्रह्मचर्य के महत्त्व पर प्रकाश डालिए।
१६. दृष्टि संयम से क्या लाभ है ?
१७. श्रवण संयम का तात्पर्य क्या है ?
१८. नासिका संयम का ध्यान कैसे रखा जाए ?
१९. समृद्धि का सदुपयोग क्या है ?
२०. सबके कल्याण का राज मंत्र क्या है ?

● ●

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अनुचित से सहमत न हों

पौधे की जड़ में पानी लगता जाएगा तो वह बढ़ता ही चलेगा। अनीति का पोषण होता रहा तो वह दिन-दूनी रात चौगुनी बढ़ती रहेगी। अन्याययुक्त आचरण करने वालों को प्रोत्साहन उनसे मिलता है जो इसे सहन करते हैं। उत्पीड़ित चुपचाप सब कुछ सह लेता है यह समझकर अत्याचारी की हिम्मत दूनी चौगुनी हो जाती है और वह अपना मार्ग निष्कंटक समझकर और भी अधिक उत्साह से अनाचरण करने पर उतारू हो जाता है। अन्याय सहना—अपने जैसे अन्य असंख्यों को उसी तरह का उत्पीड़न सहने के लिए परिस्थितियाँ पैदा करना है। अनीति सहना प्रत्यक्षतः आततायी को प्रोत्साहन देना है।

दूसरों को अनीति पीड़ित होते देखकर कितने ही लोग सोचते हैं जिस पर बीतेगी वह भुगतेगा। हम क्यों व्यर्थ का झंझट मोल लें। एक सताया जाता रहता है—पड़ौसी चुपचाप देखता रहता है। दुष्ट लोग हमें भी न सताने लगें यह सोचकर वे आँखें फेर लेते हैं और उद्दण्डों को उद्दंडता बरतते रहने का निर्बाध अवसर मिलता रहता है। चार गुंडे सौ आदमियों की भीड़ में घुसकर सरे बाजार एक-दो को चाकुओं से गोद सकते हैं। सारी भीड़ तमाशा देखेगी, आँखें फेरेगी या भाग खड़ी होगी। कहीं हम भी इस चपेट में न आ जाएँ—इस भय से कोई उन चार दुष्टों को रोकने या पकड़ने का साहस न करेगा। इस जातीय दुर्बलता को समझते हुए ही आये दिन दुस्साहसिक अपराधों की—चोरी, हत्या, लूट, कत्ल, बलात्कार आदि की घटनाएँ घटित होती रहती हैं। जानकार, संबंधित और जिन्हें सब कुछ मालूम है वे गवाही तक देने नहीं जाते और आतंकवादी अदालतों से भी छूट जाते हैं और दूने-चौगुने जोश से फिर जन-साधारण को आतंकित करते हैं। एक-एक करके विशाल जन-समूह—थोड़े से उद्दंडों द्वारा सताया जाता रहता है। लोग भयभीत, आतंकित, पीड़ित रहते हैं, पर कुछ कर नहीं पाते। मन ही मन कुड़कुड़ाते रहते हैं। विशाल जन-समूह "निरीह" कहलाए और थोड़े से दुष्ट दुराचारी निर्भय होकर संत्रस्त आतंकित करते रहें यह किसी देश की जनता के लिए, सामाजिकता के लिए भारी कलंक कालिमा है। इससे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उस वर्ग की कायरता, नपुंसकता, भीरूता, निर्जीवता ही सिद्ध होती है। ऐसा वर्ग पुरुष कहलाने का अधिकार नहीं। पुरुषार्थ करने वाले को साहस और शौर्य रखने वाले को पुरुष कहते हैं। जो अनीति का प्रतिरोध नहीं कर सकता उसे नपुंसक, निर्जीव और अर्धमृत ही कहना चाहिए। यह स्थिति हमारे लिए अति लज्जास्पद है।

अलाउद्दीन ने देवगिरि के राजा रामदेव पर चढ़ाई करने से पहले उनके सरदार कृष्णराव को अपनी ओर मिला लिया और आक्रमण कर दिया। जब सारी सेना लड़ रही थी, तब देशद्रोही कृष्णराव अलाउद्दीन के लिए जासूसी कर रहा था। इसका पता कृष्णराव की धर्मपत्नी वीरमती को चला तो उसने अपने पति की ही हत्या कर दी। मरते हुए पति ने कहा—यह क्या किया वीरमति तुमने ? भारतीय स्त्रियाँ ऐसा तो कभी नहीं करतीं।

हाँ तुम ठीक कहते हो, पर भारतीय पुरुष भी तो कभी देश द्रोह नहीं करते। इस समय राष्ट्र की रक्षा ही मेरा धर्म है। रही पतिव्रत की बात सो यह अब लो—यह कहकर उसने खुद को भी कटार भोंक ली और पति के साथ ही सती हो गई।

हम एक-एक करके सताए जाते रहते हैं, इसका एक ही कारण है कि सामूहिक प्रतिरोध की क्षमता खो गई। उसे जगाया जाना चाहिए। आज जो एक पर बीत रही है वह कल अपने पर भी बीत सकती है। दूसरे पर होने वाले अत्याचार का प्रतिरोध हम न करेंगे तो कोई हमारी सहायता के लिए क्यों आएगा ? यह सोचकर व्यक्तिगत सुरक्षा की संभावना को ध्यान में रखते हुए प्रतिरोध के लिए तत्पर होना चाहिए। हो सकता है कि इस चपेट में अपने को भी चोट लगे, आर्थिक तथा दूसरे प्रकार की क्षति उठानी पड़े पर इसे मनुष्यता के उत्तरदायित्व का मूल्य समझकर चुकाना चाहिए। इसे सहन करना ही चाहिए। शूरवीरों को आघात सहने का ही पुरुस्कार मिलता है और वे इसी आधार पर लोक श्रद्धा के अधिकारी बनते हैं।

लोक श्रद्धा के अधिकारी तीन ही हैं—(१) संत, (२) सुधारक, (३) शहीद। जिन्होंने अपने आचरणों, विचारों और भावनाओं में आदर्शवादिता एवं उत्कृष्टता का समावेश कर रखा है वे संत हैं। विपन्न परिस्थितियों को बदलकर जो सुव्यवस्था उत्पन्न करने में संलग्न हैं, अनौचित्य के स्थान पर औचित्य की प्रतिष्ठापना कर रहे हैं वे सुधारक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हैं। अन्याय से जूझने में जिन्होंने आघात सहे और बर्बादी को हँसते हुए शिरोधार्य किया वे शहीद हैं। ऐसे महामानवों के प्रति मनुष्यता सदा कृतज्ञ रही है और इतिहास उनका सदा अभिनंदन करता रहा है। भले ही आपत्ति सहनी पड़े, पर इस गौरव से जो गौरवान्वित हो सकता हो उसे अपने को धन्य ही मानना चाहिए और जिन्होंने इस संदर्भ में कुछ कष्ट सहा हो, शौर्य दिखाया हो, त्याग किया हो उनका भाव भरा सार्वजनिक अभिनंदन किया जाना चाहिए, ताकि वैसा प्रोत्साहन दूसरों को भी मिले और जन-जीवन में अनीति से लड़ने की उमंग उठ पड़े।

शंकराचार्य साधना द्वारा आत्मिक शक्तियों का जागरण और धर्म एवं संस्कृति की सेवा करना चाहते थे, जबकि उनकी माँ उन्हें गृहस्थ देखना चाहती थीं। उस समय सनातन धर्म मृत प्राय: हो चला था। दोनों परिस्थितियों की तुलना करने पर शंकराचार्य को धर्म-सेवा की ही सर्वोपरिता जान पड़ी, सो एक दिन नदी में स्नान करते समय वे झूठ-मूठ चिल्ला उठे, माँ मुझे शंकर को सौंप दो तभी बचूँगा नहीं तो मगर खाए जा रहा है। माँ ने बेटे की बात मान ली। शंकराचार्य बाहर आ गए और समाज की तत्कालीन आवश्यकता की पूर्ति के लिए चल पड़े।

हमें कई बार ऐसी बात मानने और ऐसे काम करने के लिए विवश किया जाता है जिन्हें स्वीकार करने को अपनी आत्मा नहीं कहती। फिर भी हम दबाव में आ जाते हैं और इंकार नहीं कर पाते। इच्छा न होते हुए भी उस दबाव में आकर वह करने लगते हैं जो न करना चाहिए। ऐसे दबावों में मित्रों या बुजुर्गों का निर्देश इतने आग्रहपूर्वक सामने आता है कि गुण-दोष ध्यान रखने वाला असमंजस में पड़ जाता है। क्या करें ? क्या न करें ? कुछ सूझ नहीं पड़ता। कमजोर प्रकृति के मनुष्य प्राय: ऐसे अवसरों पर "ना" नहीं कह पाते और इच्छा न रहते हुए भी वैसा करने लगते हैं। इस बुरी स्थिति में साहसपूर्वक इन्कार कर देना चाहिए। जिसे हम बुरा समझते हैं उसे स्वीकार न करना सत्याग्रह है और यह किसी भी प्रियजन संबंधी या बुजुर्ग के साथ किया जा सकता है। इसमें अनुचित या अधर्म रत्ती भर नहीं है। इतिहास में ऐसे उदाहरण पग-पग पर भरे पड़े हैं। प्रह्लाद, भरत, विभीषण, बलि आदि की अवज्ञा प्रख्यात है। अर्जुन को गुरुजनों से लड़ना पड़ा था। मीरा ने पति का कहना नहीं माना था। मोहग्रस्त अभिभावक लोभवश अनेक तरह के कुकृत्य करने के लिए विवश करते हैं। बेईमानी का धंधा करने वाले

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बुजुर्ग अपने बच्चों से भी वही कराते हैं। अपनी मूढ़ता और रूढ़िवादिता की रीति-नीति अपनाने के लिए भी दबाते हैं। न मानने पर नाराज होते हैं अवज्ञा का आरोप लगाते हैं, ऐसी दशा में किंकर्त्तव्यविमूढ़ होने की जरूरत नहीं है। आदर्श यही रहना चाहिए कि केवल औचित्य को ही स्वीकार किया जाएगा, चाहे वह किसी के पक्ष में जाता हो। अनौचित्य को हर हालत में अस्वीकार किया जाएगा चाहे किसी ने भी उसके लिए कितना ही दबाव क्यों न डाला हो।

दीनबंधु एंड्रूज स्टीफेंस कालेज में पढ़ाते थे। तब प्रत्येक विद्यार्थी के लिए बाइबिल पढ़ना अनिवार्य था। यह श्री एंड्रूज को अच्छा न लगा इसलिए वे स्वयं ही हिन्दू दर्शन का अध्ययन करने लगे। इन्हीं दिनों एक हिंदू लड़का भी आया, जो उस कालेज में पढ़ना तो चाहता था, पर वह अपने धर्म की पुस्तक पढ़ने के अतिरिक्त बाइबिल पढ़ने को राजी नहीं था। उसे प्रवेश नहीं मिल रहा था। इस पर एंड्रूज ने सरकार से लिखा-पढ़ी प्रारंभ की और तब तक नहीं माने जब तक बाइबिल पढ़ने की अनिवार्यता समाप्त नहीं करा दी।

आज की सामाजिक कुरीतियों के अंधानुकरण में पुरानी पीढ़ी ही अग्रणी है। बच्चों का जल्दी विवाह कर उन्हें स्वास्थ्य तथा शिक्षा से वंचित करना उनका मिथ्या मोह मात्र है। नम्रतापूर्वक ऐसे अवसरों पर अपनी हठ असहमति व्यक्त की जा सकती है। दृढ़ता पूर्वक स्पष्ट शब्दों में यह कह दिया जाए कि हमें किसी भी शर्त पर खर्चीला विवाहोन्माद स्वीकार नहीं। जब करना हो तो बिना खर्च और बिना दहेज जेवर तथा बिना धूमधाम का विवाह ही करेंगे। देखने भर में यह अवज्ञा है, पर वस्तुतः इसमें हर किसी का केवल हित साधन ही सन्निहित है। इसलिए बुरा लगने पर भी, कडुई दवा की तरह यह अवज्ञा सबके लिए श्रेयस्कर है। अतएव उसे किसी प्रकार अनुचित अथवा अधर्म नहीं कहा जा सकता।

पिता ने कुछ पैसे दिए और कहा सौदा ले आ दुकान करेंगे। बच्चा गया और धन परमार्थ में लगा आया। पिता ने डाँटा तो उसने कहा—पिता जी ! मनुष्य जिस उद्देश्य को लेकर संसार में आया है, उसे पूरा करना पहला कर्त्तव्य है, यही बालक आगे नानक के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दोस्ती के नाम पर लोग सिगरेट, शराब, जुआ, सिनेमा आदि के कुमार्ग पर घसीटना चाहते हैं। ऐसे अवसरों पर भी अपनी असहमति को स्पष्ट और कड़े शब्दों में व्यक्त कर सकते हैं। दोस्ती का मतलब मित्र को कुमार्ग से छुड़ाना है। पथ भ्रष्ट करने के लिए घसीट ले जाना नहीं। इस प्रकार कर्ज माँगने वाले, भीख के लिए अड़ने वाले, स्वार्थ के लिए अनुचित कृत्य कराने के लिए दबाव देने वाले, अनीति का विरोध न करके चुप रहने का आग्रह करने वाले लोग आए दिन सामने आते रहते हैं और चतुरता पूर्वक अपने तर्क तथा प्रतिभा का ऐसा प्रयोग करते हैं कि अनिच्छा होने पर भी उनके प्रभाव में आकर वैसा ही करने को विवश होते हैं। ऐसे अवसरों पर हमारा साहस इतना प्रखर होना चाहिए कि नम्र किंतु स्पष्ट शब्दों में इन्कार कर सकें। इन्कार, असहयोग, विरोध और संघर्ष इन चार शस्त्रों से हम अनीति और अविवेक का सामना कर सकते हैं। सत्य और न्याय के लिए इन शस्त्रों का प्रयोग हमें साहसी, शूरवीर, योद्धा की तरह करते भी रहना चाहिए।

प्रश्न

१. आपके अनीति के पोषण करते रहने से क्या हानियाँ होती हैं ?
२. आज के समाज में हम क्यों देख रहे हैं कि अत्याचार और अनीति करने वाले काफी साहस से यह कार्य करते जा रहे हैं ?
३. जो मनुष्य अनीति का प्रतिरोध नहीं कर सकता, क्या वह मनुष्य कहलाने के काबिल है ?
४. हमें मनुष्यता के उत्तरदायित्व का मूल्य किस प्रकार चुकाना चाहिए ?
५. लोक श्रद्धा के अधिकारी कौन-कौन हैं ?
६. संत, सुधारक, शहीद हम किस प्रकार के व्यक्तियों को कह सकते हैं ?
७. अनीति का प्रतिकार करो। यह भावना जागृत करने के लिए हमें क्या प्रयत्न करना चाहिए ?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

८. यदि कभी आपके माता-पिता या परिवार वालों की तरफ से अनीति को मानने का आग्रह किया जाए तो क्या आप आग्रह मान लेंगे ? यदि नहीं तो आपको उस समय क्या आवश्यक है ?

९. क्या आप पुराने समय के कुछ ऐसे उदाहरण दे सकते हैं कि परिवार वालों की अनीतिपूर्ण बातें मानने की अपेक्षा उन व्यक्तियों ने उनसे विद्रोह ही ठीक समझा हो ?

१०. अनीति और अविवेक का सामना करने के लिए हमें किन अस्त्रों का उपयोग करना चाहिए ?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

औचित्य की सराहना करें

मनुष्य में एक स्वाभाविक भूख प्रशंसा पाने की भी है। पेट पालने और मनोरंजन के साधन जुटाने के अतिरिक्त उसे अभिलाषा यह भी रहती है कि दूसरे लोग उसे बड़ा मानें। इस बड़ाई को पाने के लिए औसत मनुष्य उन कार्यों को करता है जिससे प्रशंसा और इज्जत मिल सके। इन दिनों जन साधारण का मानसिक स्तर बहुत ही गए गुजरे स्तर का हो चला है इसलिए पैसे वाले अमीर और आतंकवादी लोगों को इज्जत देते हैं। चूँकि धनियों को आदर मिलता है इसलिए लोग धनी बनना चाहते हैं। चूँकि दुष्ट और आततताइयों के आतंक से लोग डरते हैं, उनका रौब मानते हैं और खुशामद चापलूसी करते हैं। इसलिए वैसा बनने की इच्छा उठती रहती है। चूँकि लोगों को कुत्सित मनोरंजन पसंद है और कला का कुरुचिपूर्ण स्वरूप ही सराहते हैं। इसलिए निर्लज्ज कामुकता भड़काने वाले नृत्य-गायन वाद्य और अभिनयों को ही कलाकारों ने अपना रखा है। प्रशंसा का भूखा मनुष्य यदि सराहना मिले तो निरीह पशुओं की नृशंस हत्या से गर्व अनुभव करने वाला शिकारी, डाकू, जल्लाद आततायी आदि कुछ भी बन सकता है।

आज की पतनोन्मुख लोक रुचि की ही करामात है कि गए गुजरे कामों की प्रशंसा होती है और तमसाछन्न व्यक्तियों को वैसी ही गर्हित कार्य पद्धति अपनाने में प्रसन्नता अनुभव होती है। चूँकि दान को मूर्खता और संग्रह को बुद्धिमत्ता कहा जाता है इसलिए अब परमार्थ की मात्रा बुरी तरह घटती जा रही है और अमीरी की हविश पूरी करने को संलग्न संग्रह शीलता आकाश पाताल छूने वाले तृष्णा की तरह बढ़ रही है। ठाठ-बाट, शान-शौकत वाली फिजूलखर्ची अपनाने वाले चूँकि बड़े आदमी माने जाते हैं इसलिए बड़प्पन के भूखे लोग किसी भी उचित-अनुचित रीति से वैभव जुटाने में कटिबद्ध हैं। अमीरी का प्रदर्शन करने के लिए विवाह-शादियों तथा दूसरे आडंबरों में ढेरों पैसा इसलिए फूँकते हैं कि लोग उन्हें धनी-मानी मानें और इज्जत आबरू की दृष्टि से देखें। इन दिनों चालाकी, धूर्तता, बेईमानी, बदमाशी, दुष्टता से भी यदि कुछ मतलब गाँठ लिया जाए तो मिलने जुलने वाले सराहना करने और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बधाई देने आएँगे ही। ऐसे वातावरण में अनैतिकता का आर्थिक और प्रशंसात्मक दुहरा लाभ उठाने के लिए हर किसी का मन चले तो यह स्वाभाविक है।

सबेरे-सबेरे 14 वर्षीय बच्चे ने "माचिस चाहिए माचिस" की आवाज लगाई। एक संपादक ने उसे बुलाकर माचिस लेकर सिगरेट जला ली, पर जेब में देखा तो पैसे फूटे नहीं थे, बच्चे पर हिम्मत से विश्वास करके सौ का नोट देते हुए कहा—बाकी के 99 रूपए और शेष पैसे शीघ्र वापस लाना। बच्चा वहाँ से गया तो संपादक जी शाम तक प्रतीक्षा करते रहे, लड़का आया ही नहीं। संपादक जी कहते जा रहे थे, बच्चे भी धोखेबाज होने लगे, तभी पीछे से एक लड़के ने पुकारा क्या अमुक बाबू का मकान यही है। हाँ-हाँ आओ, क्या बात है ? सम्पादक जी बोले। लड़का ऊपर आया 99 रूपये और पैसे वापस करता हुआ बोला—बाबूजी ! मेरा बड़ा भाई आपको प्रातःकाल माचिस बेच गया था, पर जैसे ही नोट तुड़वाने वह बाजार गया, एक मोटर से उसका एक्सीडेंट हो गया। उसे अभी-अभी होश आया है, होश आते ही आपका पता बताकर यह पैसे भेजे हैं। संपादक बहुत प्रभावित हुआ और ऐसे बच्चे के दर्शनों के लिए अस्पताल चल पड़ा, पर वहाँ पहुँचने तक देवमूर्ति बालक के प्राण पखेरू उड़ चुके थे। उनका छोटा भाई रोने लगा। संपादक को पता चला इनके माँ-बाप तो क्या परिवार में भी कोई नहीं है। उन्होंने छोटे बच्चे को घर चलने को कहा—तो उसने घर जाने से इन्कार कर कहा—मेरे भैया ने जो आदर्श रखा, मैं उसे कायम रखूँगा। संपादक बच्चों की सत्यता से बड़े प्रभावित हुए। उस दिन के समाचार पत्रों में ऐसे समाचार उभार पाने लगे। उसी का फल है कि आज जापान दुनिया का सबसे बड़ा ईमानदार देश माना जाता है।

पतनोन्मुख समाज और बढ़ती हुई दुष्प्रवृत्तियों को रोकने के लिए नितांत आवश्यक है कि स्वार्थी, संकीर्ण और अवांछनीय व्यक्तियों तथा कार्यों की प्रशंसा ही बंद न की जाए वरन् उनकी भर्त्सना का साहस भी समेटा जाए। इसी प्रकार सत्प्रवृत्तियों के अभिवर्द्धन तथा सज्जनता के परिपोषण के लिए यह आवश्यक है कि जिसने अपने आचरण में अनुकरणीय आदर्शवादिता समाविष्ट की हो उनकी मुक्त कंठ से, व्यापक रूप से सराहना की जाए। प्रशंसा सफलता की नहीं वरन् सज्जनता की ही की जानी चाहिए। कुमार्ग पर चलकर पाई हुई सफलता की अपेक्षा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सन्मार्ग पर चलते हुए मिली हुई असफलता ही सराहनीय समझी जानी चाहिए। फाँसी पर चढ़ने वाले ईसामसीह, जहर पीने वाले सुकरात, गोली से उड़ाए जाने वाले गाँधी एक प्रकार से असफल ही कहे जा सकते हैं, पर उन्होंने जिस मार्ग को अपनाया वह वंदनीय ही कहा जाएगा। यही रीति-नीति हर कार्य के लिए और हर व्यक्ति के लिए अपनाई जानी चाहिए। जिसने अपने स्वार्थ साधन और ऐश आराम के लिए सम्पदा कमाई उसकी प्रशंसा क्यों की जाए ? जिसने अनीति के मार्ग में सफलता पाई—जिसने लोक मानस को प्रेरणा दी ऐसे पदवीधारी, विद्वान कलाकार, नेता, अभिनेता की सराहना में एक शब्द नहीं निकाला जाना चाहिए। एक पंक्ति भी नहीं लिखी जानी चाहिए। अन्यथा अनीति का आचरण रोका नहीं जा सकेगा। वरन् दिन-दिन बढ़ेगा। सिनेमा में नाचने वाली नटनियों के रंग-बिरंगे फोटो अखबारों में छपते देखकर अब लड़के-लड़कियों के मन में वैसी ही उमंगें उठती हैं। त्याग और बलिदान को जिन दिनों अखबार सराहते थे उन दिनों स्वतंत्रता संग्राम के लिए त्याग, बलिदान करने की लहर भी अपने देश में हिलोरें लेती हुई दीखती थीं। आज मिनिस्टरों के गुण गान छपते हैं तो किसी भी तरकीब से उस पद तक पहुँचने के लिए हर प्रभावशाली व्यक्ति लालायित दीखने लगा है। यदि डाकुओं की प्रशंसा करने वाले लेख फोटो, कविता, फिल्म, नाटक प्रस्तुत किये जाएँ तो निश्चित रूप से कुछ ही समय में सारा जोशीला वर्ग डाकू बनने की साधना-कामना करने लगेगा।

सज्जनता और सत्प्रवृत्तियों का अभिवर्द्धन और अभीष्ट हो तो उसके लिए प्रशंसा और प्रोत्साहन प्रस्तुत करने की तैयारी करनी पड़ेगी। दुष्टता और संपदा की सराहना करने वाले लोगों की एक बहुत बड़ी संख्या मौजूद है। फलस्वरूप वे अवांछनीय तत्व द्रुतगति से बढ़ रहे हैं। हमें एक ऐसा वर्ग खड़ा करना है जो सज्जनता और सत्प्रवृत्तियों को सराहे और उनकी प्रशंसा व्यापक बनाने के लिए आवश्यक साधन जुटाए। पर्चे, पोस्टर, विज्ञापन या छोटे-बड़े अखबार निकालकर हमें सज्जनता के समाचार छापने चाहिए और जिन्होंने अनुकरणीय उदारता के कोई आदर्श प्रस्तुत किए हैं उनकी सराहनीय जानकारी को व्यापक क्षेत्र में फैलाना चाहिए। इन दिनों राजा रईसों के हिस्से में ही प्रशंसा पक्ष चला गया है। हमें जैसे गरीबों और छोटे आदमियों के गुणानुवाद प्रस्तुत करने चाहिए जिन्होंने लोक मंगल के लिए अपनी छोटी शक्ति और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

छोटे साधनों के रहते हुए भी महानता एवं उदारता का साहसिक परिचय दे डाला। इस प्रयोजन के लिए प्रकाशन लेखन और गायन की पूरी-पूरी साधन सामग्री जुटानी चाहिए। लोक-मंगल की दृष्टि से किए गए त्याग और बलिदानों को—फिर चाहे वे गरीब या पिछड़े लोगों द्वारा ही प्रस्तुत क्यों न हों, सर्वसाधारण की जानकारी में प्रशंसात्मक घटनाएँ जीवनियाँ खोजने और उन्हें गद्य या पद्य रूप में छपवाने के लिए हमें हर भाषा में समर्थ तंत्र खड़े करने चाहिए।

तुर्की के प्रसिद्ध फकीर जकीर नदी के किनारे रहते थे। एक दिन एक सेव बहा चला जा रहा था। जकीर ने उसे पकड़ लिया, पर खाने को ही थे कि आत्मा से आवाज आई—जो वस्तु तेरी नहीं, तूने कमाई नहीं, उसका उपयोग करना क्या पाप नहीं ? जकीर सेब लेकर उसके मालिक का पता लगाने चल पड़े। सेब बुखारा की राजकुमारी के बाग का था। राजकुमारी को पता चला, तो उन्हें बुलाकर कहा—अरे बाबा ! इसे वहीं रख लेते, एक सेव यहाँ क्यों लाए ? फकीर ने उत्तर दिया—आपके लिए इस सेब का कोई मूल्य नहीं, पर इसने मेरा तो धर्म और ईमान ही नष्ट कर दिया होता।

अभिनंदन आयोजनों, जयंतियों, शताब्दियों की एक ऐसी संगठित श्रृंखला चलनी चाहिए जिसके अंतर्गत शानदार उत्सव मनाए जाएँ और उन जीवित या स्वर्गस्थ सज्जनों का अभिनंदन किया जाए जिन्होंने मानवता को जीवित रखने के लिए अपने अनुकरणीय आदर्श उपस्थित किए। ऐसे लोगों के स्मरण बनाए जा सकते हैं। इमारतें न बन सकें तो स्मृति चबूतरों पर शिला लेख जड़े जा सकते हैं या वृक्ष लगाए जा सकते हैं। जहाँ जाकर जन साधारण को उपयुक्त अवसरों पर श्रद्धांजलि अर्पित करने का अवसर मिलता रहे। स्वर्गीय उदारमना लोगों के शिलाचित्र या प्रतिमायें सार्वजनिक स्थानों में स्थापित करने का तरीका अच्छा है। जीवित लोगों को मानपत्र या उपहार, अभिनंदन अथवा पदवी प्रदान जैसी कुछ व्यवस्था की जा सकती है। पर यह ध्यान रखा जाए कि इस प्रकार का लाभ केवल उन्हें ही मिले जो वस्तुतः उसके अधिकारी हों। यदि अनाधिकारी लोग तिकड़म भिड़ाकर इस प्रकार की प्रशंसा प्रतिष्ठा प्राप्त करने में सफल हो गए तो फिर यह महान प्रक्रिया भी अपना महत्त्व खो बैठेगी। फिर ऐसे स्तर की प्रशंसा पाने, करने में सच्चे मनुष्य अपनी बेइज्जती अनुभव करने लगेंगे इसलिए इस प्रकार

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

की अभिनंदन प्रशंसा जुटाने वालों को पूरी सतर्कता से यह ध्यान रखना चाहिए कि अवांछनीय और अनाधिकारी लोग दंद-फंद, पक्षपात या पार्टी बंदी के आधार पर इस पुण्य प्रक्रिया का अपने पक्ष में अनुचित लाभ न उठाने पाएँ।

छोटी बहन इलाइज के साथ एक लड़का घूमने निकला। मार्ग में नटखट बहन ने एक अमरूद वाले को धक्का दे दिया। उसके सारे अमरूद कीचड़ में फैलकर बेकार हो गए। लड़का अमरूद वाले को लेकर घर आया और माँ से बोला—इस अमरूद वाले को उसके पैसे दे दो। माँ बहुत झल्लाई, पैसे दिए नहीं, तो उस लड़के ने अपने नाश्ते के पैसे देकर दंड की भरपाई की और खुद ने डेढ़ महीने तक नाश्ता नहीं किया। यही बालक आगे चलकर नैपोलियन बोनापार्ट बना।

संपदा को प्रतिष्ठा मिलने से लालच बढ़ता है और अनैतिकता की कीमत पर अमीरी बढ़ाने की प्रवृत्ति पनपती है। अवाँछनीयता के आतंक के सामने लोगों ने सिर झुकाया और विरोध से कतरा कर दुष्टता को समर्थन दिया है। दुष्प्रवृत्तियाँ इसी प्रकार पनपी हैं। इसके दुष्परिणाम सामने हैं। नव निर्माण के लिए इस विग्रह को उलटना होगा। पहले कदम के रूप में सज्जनता को अभिनंदित प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। दूसरे कदम के रूप में दुष्टता और अवाँछनीयता की भर्त्सना के लिए व्यापक मोर्चा खड़ा करना पड़ेगा और तीसरे कदम में दुष्टता के प्रतिरोध के लिए संघर्ष की ऐसी योजना बनानी पड़ेगी जिसके भय से अनाचार करने का उत्साह ही ठंडा हो जाए और अवाँछनीय असामाजिक कार्य करने वालों को उनके फलस्वरूप उन कठिनाइयों के बारे में हजार बार विचार करना पड़े जो उन्हें अपने कुकृत्य के फलस्वरूप अनिवार्य रूप से भुगतनी पड़ा करेगी।

प्रश्न

१. मनुष्य की स्वाभाविक इच्छा क्या होती है ?
२. प्रशंसा द्वारा किस प्रकार लोगों को अच्छे या गलत मार्ग पर चलाया जा सकता है ?
३. बुरे लोगों की प्रशंसा से क्या होता है ?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

४. समाज सुधार के लिए क्या किया ज़ाए ?
५. बुरे लोगों की प्रशंसा से आज क्या बुराइयाँ फैली हैं ?
६. अच्छाई को किस तरह प्रोत्साहित किया जाए ?
८. संपत्ति को प्रतिष्ठा मिलने से क्या हुआ ?
८. दुष्टता के प्रतिरोध में क्या किया जाए ?

● ●

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

धन का अपव्यय नही सदुपयोग करें

अनेक व्यक्ति कमाते तो बहुत हैं पर खर्च करने के संबंध में बड़े अदूरदर्शी होते हैं। जो आता है वही अस्त-व्यस्त तरीके से फूँक देते हैं और आए दिन अभावग्रस्त एवं कर्जदार बने रहते हैं। वे पैसे का मूल्य नहीं समझते उसे खिलवाड़ जैसी कोई चीज समझते हैं, कि लोग हमें जितना अधिक खर्च करते देखेंगे उतना ही अमीर या बड़ा आदमी मानेंगे और उतना सम्मान करेंगे। इस दृष्टि से कई व्यक्ति बहुत फिजूल खर्ची करते हैं। कई ने तो इतने दुर्व्यसन पाल रखे होते हैं कि कमाई का बहुत भाग उसी में खर्च हो जाता है।

श्री लाल बहादुर शास्त्री उन दिनों उत्तर प्रदेश में गृह मंत्री थे। एक दिन वे ऑफिस में थे तब सार्वजनिक निर्माण विभाग वाले उनके घर कूलर लगा गए। शास्त्री जी लौटकर घर आए तो बोले—मंत्री होने का यह अर्थ नहीं कि मैं देश की संपत्ति को विलासिता में उपयोग करूँ, यह कहकर उन्होंने कूलर हटवा दिया।

पैसा किस प्रकार किस काम में कितना खर्च किया जाता है उसको पूरा जान लेने पर ही किसी की बुद्धिमत्ता का स्तर परखा जा सकता है। अपव्यय सबसे बड़ी मूर्खता है। अपनी हैसियत, औकात, आमदनी और आवश्यकता का ध्यान रखे बिना जो अनावश्यक खर्च किया जाता है वह व्यक्ति और परिवार के विकास में सबसे बड़ा अवरोध सिद्ध होता है। इन दिनों उचित और आवश्यक कार्य ही इतने बढ़े-चढ़े हैं कि उनकी पूर्ति कठिन हो जाती है। स्वास्थ्य, शिक्षा, चिकित्सा, व्यवसाय आदि आवश्यक कार्यों के लिए ढेरों पैसा लगता है। अन्न, वस्त्र, मकान की जरूरतें बहुत सारा पैसा माँगती हैं। जब तक कुरीतियों का क्रांतिकारी उन्मूलन न हो जाए तब तक विवाह-शादी, चाल-चलन, पर्व, त्यौहार आदि पर भी पैसा खर्च करना ही पड़ेगा। यदि फिजूलखर्ची की आदत पड़ गई है और पैसों को कागज का टुकड़ा समझकर ज्यों-त्यों उड़ा दिया जाता है तो समय पर अनिवार्य आवश्यकताओं के लिए हाथ खाली रहेगा और उसमें खेद पूर्वक कटौती करनी पड़ेगी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गाँधी जी का भाषण समाप्त हुआ। लोग तो उठ-उठकर चल दिए। पूछने पर पता लगा, दो पैसे का सिक्का नीचे गिर गया है। उन्हें पैसा ढूँढ़ने में परेशान देखकर एक सज्जन बोले—छोड़िये बापू ! दो पैसे के लिए इतने परेशान हैं, इस पर उन्होंने कहा—यह पैसा समाज का है। मुझे वह जिस काम के लिए दिया गया है, उसके लिए यदि सँभाल न पाऊँ, तो यह मेरे लिए पाप होगा। यह कहकर वे फिर पैसा ढूँढ़ने लगे, सिक्का मिल गया तभी वहाँ से हटे।

व्यक्ति अकेला नहीं है। वह अपने पारिवारिक कर्त्तव्यों और उत्तरदायित्वों से जुड़ा हुआ है। बूढ़े माता-पिता और छोटे भाई-बहिनों के अतिरिक्त घर से दूसरे लोग भी होते हैं जो उपार्जन करने वाले से अपनी आवश्यकता पूर्ति चाहते हैं। संयुक्त परिवार प्रणाली के साथ जुड़ा हुआ यह एक पवित्र कर्त्तव्य है कि असमर्थ परिजनों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए यथा संभव कुछ उठा न रखा जाए। विवाह होते ही पत्नी और उसके द्वारा संतान के लालन-पालन की जिम्मेदारी आती है। बड़े होने पर उनकी शिक्षा, शादी तथा आजीविका के साधन जुटाने पड़ते हैं। आजकल आए दिन अस्वस्थता का भी दौर रहता है। चिकित्सा में कंजूसी करके साथियों के जीवन से खिलवाड़ भी नहीं किया जा सकता। पारिवारिक प्रगति के अनेक द्वार खोले जा सकते हैं और प्रियजनों को सुयोग्य एवं समर्थ बनाने के लिए कितनी भी पूँजी जुटाई जा सकती है।

सरदार वल्लभभाई पटेल विलायत पढ़ने जाना चाहते थे, पर तभी उनके भाई की भी इच्छा हो आई कि हम भी विलायत जाएँ जब कि पैसा बहुत ही थोड़ा था। आखिर वल्लभभाई पटेल ने अपने बड़े भाई को विलायत भेज दिया और खुद किफायत शारी का जीवन जीने लगे। कुछ दिन में भाई पढ़कर आ गए तब भाई साहब किफायत शारी का जीवन जीने लगे और वल्लभभाई पटेल विलायत पढ़ आए। धन का सदुपयोग ऐसे ही सत्परिणाम देता है।

पारिवारिक उत्तरदायित्वों के अतिरिक्त सामाजिक उत्कर्ष एवं पीड़ितों की सहायता भी मनुष्य का एक पवित्र कर्त्तव्य है। अपनी आमदनी का एक अंश अपनी श्रद्धा और सुविधानुसार नियमित रूप से लगाते रहना चाहिए, शरीर निर्वाह के अतिरिक्त अपने और अपने परिजनों के बौद्धिक एवं भावनात्मक उत्कर्ष के लिए स्वाध्याय एवं सत्संग के साधन भी जुटाए जाने चाहिए। अनुभवों के एकत्रीकरण के लिए

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

योजनाबद्ध यात्राएँ उपयोगी होती हैं मनोरंजन के लिए भी कुछ खर्च करना चाहिए। निर्वाह के अतिरिक्त उपरोक्त खर्च भी आवश्यक मद में ही जोड़े जा सकते हैं। इसके लिए कुछ पैसा तभी बचाया जा सकता है जब फिजूल खर्ची की सारी मदें कड़ाई के साथ काट दी जाएँ। आमदनी हर एक की सीमित होती है। अपव्यय की कोई सीमा नहीं। यदि अविवेकपूर्ण खर्च किया जाता रहा तो उसमें महत्त्वपूर्ण आवश्यकताएँ ही रोकनी पड़ेंगी, परिणाम दोनों ही तरह अहितकर होगा। अपव्यय से आदतें खराब होंगी, दुर्व्यसन पल्ले बँधेंगे, गैर जिम्मेदारी की प्रवृत्ति बढ़ेगी और तंगी भुगतनी पड़ेगी। दूसरी ओर अपने तथा परिवार के विकास की उचित आवश्यकताएँ पूरी न हो सकने की आत्म-ग्लानि ही रहेगी।

हमें अपनी आमदनी का एक भाग भावी उत्तरदायित्वों की पूर्ति के लिए बचत के रूप में सुरक्षित रखना चाहिए इसके बाद जो बचे उसे बजट बनाकर खर्च करना चाहिए। व्यक्तिगत शौक मौज का बजट छोटा रहना चाहिए और कड़ाई बरती जानी चाहिए कि उसमें निर्धारित रकम से अधिक तनिक भी खर्च न किया जाए।

राजेन्द्र बाबू काँग्रेस के अध्यक्ष चुने जा चुके थे। इलाहाबाद में उनका भाषण था वे वहाँ गए, तो "लीडर" के संपादक श्री सी. वाई. चिंतामणि से मिलने चले गए। चपरासी को परिचय कार्ड देकर वे बाहर बैठ गए। चपरासी ने बिना कुछ कहे कार्ड टेबिल पर जाकर रख दिया। श्री चिंतामणि की दृष्टि कार्ड पर देर से गई। जैसे ही देखा, दरवाजे की ओर भागे और राजेंद्र बाबू से क्षमा याचना करने लगे। राजेंद्र बाबू बोले—अरे ! इसमें क्षमा याचना की क्या बात है ? इतने देर में अपने कपड़े सुखा लिए। क्योंकि बदलने के लिए दूसरे कपड़े नहीं थे।

अपनी आमदनी में से कुछ बचत समय कुसमय के लिए निकालते रहना जरूरी है। जितना खर्च करना है उसमें से पत्नी तथा समझदार परिजन के परामर्श से बजट बना लेना चाहिए। बजट की मदों में निर्धारित पैसा उसी क्रम से खर्च हो। बिना विशेष कारण के उसमें हेर-फेर न हो, इसकी कड़ाई की जानी चाहिए। अच्छा हो पुरुष सारी कमाई पत्नी या माता के हाथ में रखे और बजट के अनुरूप उन्हीं को सौंप दें। महिलाएँ स्वभावतः इस संबंध में बहुत किफायतसार और समझदार होती हैं। उनके हाथ में पैसे रहे और वे ही खर्च करें तो हर परिवार की अर्थ तंगी की उलझन सुलझ सकती है। बहीखाता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हर घर में लिखा जाना चाहिए। ताकि समय-समय पर यह पता लगता रहे कि किस मद में कितना पैसा खर्च होता है। इसी आधार पर यह सोच सकना संभव हो सकता है कि कहीं अनावश्यक कार्यों में पैसे की बर्बादी तो नहीं हो रही और कहीं आवश्यक कामों की उपेक्षा तो नहीं की जा रही ? तथ्य सामने होने पर ही उनका सुधार संभव है अन्यथा अँधेरे में कुछ पता ही न चलता कि कहाँ अनावश्यक खर्च हो रहा है और आर्थिक तंगी से बचने के लिए कहाँ कटौती और किफायत की गुँजाइश है।

सेठ के पास अपार संपत्ति थी तो भी वह दुःखी था। पर एक मजदूर थोड़ा पाता था, उसी में सारा परिवार मस्त रहता था। सेठ ने एक दिन एक प्रसिद्ध महात्मा से यही बातें जाकर कहीं और पूछा—मैं दुःखी और मजदूर सुखी क्यों ? महात्मा ने उससे ९९ रुपये लेकर रात में चुपचाप मजदूर के आँगन में टपका दिए। दूसरे दिन मजदूर ने ९९ की पोटली देखी तो सोचा १०० रु. करना चाहिए। फलस्वरूप उन्होंने इस दिन उपवास रखा, घर के बच्चे कुड़कुड़ाते रहे। एक दिन में ही खींचतान मच गई। साधु ने समझाया—देख ! पैसा पैदा करना समझदारी नहीं, समझदारी उसका उपयोग है। मजदूर कल तक इसी पैसे से कितना सुखी था, पर आज पैसे पाकर भी दुःखी है।

जेब में रुपया भरके फिरते रहना बहुत बुरी आदत है। इससे उन अनावश्यक चीजों को खरीदने का भी मन ललचा जाता है जो वस्तुतः अपने लिए बहुत उपयोगी नहीं होतीं। कीमती कपड़ा, कीमती फर्नीचर, कीमती सुसज्जा के स्थान पर सब कुछ सस्ता और मजबूत खरीदना चाहिए भले ही वह देखने में कम सुंदर लगे। उधार लेने की आदत बहुत ही बुरी है। इससे चीज भी मँहगी मिलती है और जरूरत से ज्यादा भी खरीद ली जाती है। सामान्य नियम यही रखा जाना चाहिए कि जितनी अपनी हैसियत है उसी के भीतर खर्च किया जाए, भले ही घी, दूध जैसी चीजों से वंचित रहना पड़े।

पुरानी चीजों की मरम्मत करने में दिलचस्पी हो तो वे बहुत दिन चल सकती हैं। हाथ से काम करना पसन्द हो तो कपड़े धोने से लेकर हजामत बनाने तक और घर की सफाई पुताई से लेकर पुस्तकों की जिल्द बाँधने तक बचे हुए समय में घरेलू मनोरंजन की तरह किए जा सकते हैं और पैसे बचाए जा सकते हैं। टूटी चीजों की मरम्मत, कपड़े

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सीना, पेटियों अथवा क्यारियों में शाक-भाजी उगा लेना, आटा पीसना, चर्खा कातना, साबुन बनाना जैसे छोटे गृह शिल्प बेकार समय को भी रचनात्मक काम में लगाने का अच्छी आदत डालने वाला प्रयोजन पूरा करते हैं और पैसे भी बचते हैं। निर्माणात्मक योग्यता बढ़ती है सो अलग। कहना न होगा कि सुधार और सृजन का दृष्टिकोण परिष्कृत होकर यदि आदत के रूप में बदल जाए तो उन्नति के अनेक अवरुद्ध मार्ग सहज ही खुल सकते हैं और छोटा मनुष्य बड़ा बनने का रास्ता पा सकता है।

हमें किसी की नकल नहीं करनी चाहिए वरन् अपनी व्यवस्था तथा अपनी योजना अपनी स्वतंत्र बुद्धि से बनानी चाहिए। अमीरों के यहाँ जिस ढंग से खर्च होता है और जो साधन जुटाए जाते हैं उनकी नकल करना आरंभ कर दिया जाए तो अपनी सीमित आय में काम कैसे चलेगा, मँहगी चीजों का अंत नहीं। मँहगे कपड़े, जेवर, उपकरण खरीदने में हाथ खुला रखा जाए तो कुबेर का भी खजाना खाली हो सकता है और उसे भी आर्थिक तंगी तथा कर्जदारी का कष्ट सहना पड़ सकता है।

एक सेठ धन जमा करते गए, खर्च के नाम पर कानी कौड़ी भी मुश्किल से निकालते थे। एक दिन तिजोरी में बैठे रूपए गिन रहे थे कि उधर से मुनीम निकले। सेठ ने सोचा—मुनीम ! देख न ले सो झट से तिजोरी का दरवाजा बंद कर दिया। उधर झटके के कारण खटका गिर जाने से तिजोरी अपने आप बंद हो गई। सेठ चिल्लाते रहे, पर बंद होने के कारण किसी ने उनकी आवाज नहीं सुनी। सातवें दिन लड़के ने तिजोरी खोली, तो सेठ की सड़ी लाश निकली, जिसने भी सुना कहा—अति संचय का यही फल होता है।

उपार्जन के उपयुक्त अधिक योग्यता एवं अनुभव बढ़ाना, साधन जुटाना, कठोर श्रम करना तथा मिलनसारी का स्वभाव इन बातों को बढ़ाना आवश्यक है। क्षमता बढ़ने से आमदनी के स्रोत खुलते हैं। हर हालत में खर्च पर नियंत्रण तो आवश्यक ही है। अपनी हैसियत से बाहर जो कुछ है वह सब अनावश्यक समझा जाना चाहिए। सारी कमाई शरीर निर्वाह के लिए ही खर्च नहीं कर दी जानी चाहिए और न बेटे पोतों के लिए इसे जोड़ते ही जाना चाहिए वरन् यह भी देखना चाहिए कि ज्ञान, अनुभव एवं लोकमंगल के लिए भी कमाई का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

एक अंश लगा है या नहीं। सब कुछ शरीरों की सुविधा बढ़ाने में ही खर्च करते रहना आत्मिक प्रगति का द्वार अवरुद्ध करना है। ऐसी भूल पैसे सम्बन्धी व्यवस्था सोचते समय निश्चित रूप से ध्यान में रखनी चाहिए।

प्रश्न

१. आजीविका प्राप्त करने से भी महत्त्वपूर्ण क्या है ?
२. पैसा खर्च करने में किन-किन गुणों का होना अनिवार्य है ?
३. उन गुणों के न होने से क्या हानियाँ होती हैं ?
४. किसी व्यक्ति की बुद्धिमत्ता किस बात पर परखी जा सकती है ?
५. व्यक्ति धनवान किस प्रकार बन सकता है ?
६. सामान्य आजीविका से भी अपना खर्च किस प्रकार चलाया जा सकता है ?
७. अपना बजट हमें किस प्रकार का बनाना चाहिए ?
८. हम किन-किन आवश्यक खर्चों को कम करके बचत कर सकते हैं ?
९. जेब में रुपया रखके घूमना और उधार लेना किस प्रकार हानिकारक है ?
१०. अमीरों के रहन-सहन की नकल करना किस प्रकार हानिकारक है ?
११. पिछले दिनों इज्जत का माध्यम क्या माना जाता रहा है ?
१२. अमीरी प्राप्त करने के लिए किस तरह के रास्ते अपनाने पड़ते हैं ?
१३. अपनी हैसियत से अधिक अमीरी दिखाने वाले के संबंध में लोग क्या सोचते हैं ?
१४. ईमानदार अमीर का क्या कर्त्तव्य है ?
१५. नासमझ वर्ग के लोगों के दिमाग में क्या बात घर कर गई है ?
१६. अमीर न होते हुए भी वे अमीरी किस तरह व्यक्त करते हैं ?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

१७. विवाहों के अवसर पर अमीरी दिखलाने की उत्कंठा चरम सीमा पर पहुँच जाती है ? कैसे ?

१८. अमीरी प्रदर्शित करने वाले स्त्री और पुरुष का समझदार वर्ग पर क्या प्रभाव पड़ता है ?

१९. ठाठ-बाट और अपव्यय के बजाय बचत का पैसा हमें कहाँ खर्च करना चाहिए ?

२०. सादगी सज्जनता का प्रतिनिधित्व करती है। सिद्ध कीजिए।

● ●

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

फैशन परस्ती एक ओछापन

पिछले दिनों अमीरी को इज्जत का माध्यम माना जाता रहा है। इज्जत पाना हर मनुष्य की स्वाभाविक इच्छा है। इसलिए प्रचलित मान्यताओं के अनुसार हर मनुष्य अमीरी का इच्छुक रहता है ताकि उसे दूसरे लोग बड़ा आदमी समझें और इज्जत करें। अमीरी सीधे रास्ते नहीं आ सकती। उसके लिए टेढ़े रास्ते अपनाने पड़ते हैं। हर समाज और देश की अर्थव्यवस्था का एक स्तर होता है। उत्पादन श्रम और क्षमता के आधार पर दौलत बढ़ती है। देश में वैसे साधन न हों तो सर्व साधारण को गुजारे भर के लिए ही मिल सकता है। अपने देश की स्थिति आज ऐसी ही है, जिसमें किसी प्रकार निर्वाह चलता रहे तो पर्याप्त है। औसत देशवासी की परिस्थिति से अपने को मिलाकर काम चलाऊ आजीविका से संतोष करना चाहिए। हम सब एक तरह का जीवन जीते हैं और ईर्ष्या असंतोष का अवसर नहीं आने देते, इतना ही सोचना पर्याप्त है। अमीरी की ललक पैदा करना, सीधा मार्ग छोड़कर टेढ़ा अपनाने को कदम बढ़ाना है। पिछले दिनों अनैतिक मार्ग अपनाने वाले, अमीरी इकट्ठी कर लेने वाले, इज्जत आबरू वाले बड़े आदमी माने जाते रहे होंगे, पर अब वे दिन लद चुके। अब समझदारी बढ़ रही है। दौलत अब बेइज्जती की निशानी बनती चली जा रही है। लोग सोचते हैं, यह औंधे मार्ग अपनाने वाला आदमी है। यदि सीधे मार्ग से कमाता है तो भी ईमानदारी का तकाजा है कि देशवासियों के औसत वर्ग की तरह जिए और बचत को लोक-मंगल के लिए लौटा दे। यदि ऐसा नहीं किया जाता, बढ़ी हुई कमाई को ऐय्याशी में, बड़प्पन के अहंकारी प्रदर्शन में खर्च किया जाता है अथवा बेटे-पोतों के लिए जोड़ा जमा किया जाता है तो ऐसा कर्त्तव्य विचारशीलता की कसौटी पर अवांछनीय ही माना जाएगा। अमीरी अब निस्संदेह बेइज्जती की निशानी बनती चली जा रही है और वह दिन दूर नहीं, जब अमीरों को समाज का घृणित, अनैतिक एवं निष्ठुर वर्ग माना जाएगा। हमें संदेह है कि अमीरी अब पचास वर्ष भी जीवित रह सकेगी। विवेकशीलता उसे छोड़ने के लिए बाध्य करेगी अन्यथा कानून अथवा विद्रोह उसका अंत कर देगा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हजरत मोहम्मद अपनी पुत्री फातिमा से मिलने गए। पुत्री वेश कीमती वस्त्र और आभूषण पहने उनसे मिलने द्वार पर आई तो हजरत मोहम्मद दुःखी हुए और वहाँ से लौटकर चल दिए। फातिमा पिता के हृदय की बात समझ गई। उसने अपने सारे बहुमूल्य वस्त्राभूषण बाँधकर पिता के पास पहुँचा दिए। पिता ने उस धन को गरीबों में बाँट दिया और अपनी पुत्री से मिलने उसके घर की ओर चल दिए।

मामूली आमदनी के लोग जब अपनी स्त्रियों के बक्से कीमती साड़ियों से भरते हैं और जेवरों में धन गँवाते हैं तब उसके पीछे यही ओछापन काम करता है कि ऐसी सजी-धजी हमारी औरतों को देखकर लोग हमें अमीर मानेंगे। पुरुष साड़ी, जेबर तो नहीं पहनते, पर सूट-बूट, घड़ी, छड़ी उनकी भी कीमती होती है ताकि मित्रों के आगे बढ़-चढ़कर शेखी मार सकें। विवाह शादियों के वक्त यह ओछापन हद दर्जे को पहुँच जाता है। स्त्रियाँ ऐसे कपड़े लटकाए फिरती हैं जैसे सिनेमा, नाटक के नट लोग पहनते हैं। बरातियों का औघड़पन देखते ही बनता है। ऐसा ठाट-बाट बनाते हैं मानों कोई बड़े मिल मालिक, जागीरदार, अफसर अथवा सेठ-साहूकार हों। जानने वाले सब जानते हैं कि जरा-सी आमदनी वाला यह ढोंग बनाए फिरता है तो हर कोई असलियत समझ जाता है और दो ही अनुमान लगाता है या तो यह कर्जदार रहता होगा या बेईमानी से कमाता होगा। ये दोनों ही बातें बेइज्जती की हैं। सोचा यह गया था कि ठाट-बाट से इज्जत बढ़ेगी, पर होता ठीक उल्टा है। ऐसी सज-धज वाले व्यक्ति आमतौर से ओछे और अविश्वस्त समझे जाते हैं। ठाट-बाट वाले बाबू को गैर सरकारी नौकरी नहीं मिलती। मालिक जानता है, इतना वेतन तो ठाट-बाट में ही उठ जाएगा। फिर बच्चों को खिलाने के लिए इसे हमारे यहाँ चोरी का जाल फैलाना पड़ेगा। यही बात स्त्रियों के संबंध में है। फैशन बनाने वाली महिलाएँ दो छाप छोड़ कर जाती हैं या तो इनके घर में अनुचित पैसा आता है अथवा इनका चरित्र एवं स्वभाव ओछा है। यह दोनों ही लाँछन किसी कुलीन महिला की इज्जत बढ़ाते नहीं, घटाते हैं।

गाँधी जी ने रेल में सफर कर रही एक स्त्री से कहा—बहन ! अच्छे कपड़े नहीं पहन सकतीं, तो कम से कम इन्हें साफ तो कर लिया करें। स्त्री बोली—क्या करूँ बापू ! धोती एक ही है, इसी को आधी धोकर निचोड़ लेती हूँ, फिर स्नान करके आधी सुखा लेती हूँ, आप ही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बताइए इसे धोऊँ कैसे ? गाँधी जी की आँखों में आँसू आ गए। वे बोले—जिस देश में इतनी निर्धनता हो वहाँ फैशन-परस्ती नहीं चल सकती। यह कहकर उन्होंने आधी धोती पहनकर कंबल ओढ़ने की प्रतिज्ञा की और मरते दम तक उसी सफलता से जीवन बिताया।

सादगी, शालीनता और सज्जनता सृजन करती है। इसके पीछे गंभीरता और प्रामाणिकता, विवेकशीलता और बौद्धिक परिपक्वता झाँकती है। वस्तुतः इसी में इज्जत के सूत्र सन्निहित हैं। सादगी घोषणा करती है कि यह व्यक्ति दूसरों को आकर्षित या प्रभावित करने की चालबाजी नहीं, अपनी वास्तविकता विदित करने में संतुष्ट है। यही ईमानदारी और सच्चाई की राह है। यह आमदनी बढ़ाने का भी एक तरीका है। फिजूल खर्ची रोकना अर्थात् आदमनी बढ़ाना। समय आ गया है कि इस बाल-बुद्धि को छोड़कर प्रौढ़ता का दृष्टिकोण अपनाया जाए। हम गरीब देश के निवासी हैं। सर्व साधारण को सामान्य सुसज्जा और परिमित खर्च में काम चलाना पड़ता है। अपनी वस्तु स्थिति यही है कि अपने करोड़ो भाई-बहिनों की पंक्ति में ही हमें खड़ा होना चाहिए और उन्हीं की तरह रहन-सहन का तरीका अपनाना चाहिए। इस समझदारी में ही इज्जत पाने के सूत्र सन्निहित हैं। फैशन-परस्ती और अपव्यय की राह अपनाकर हम आर्थिक संकट को ही निमंत्रित करते हैं।

करनाल में नादिरशाह से हारने के बाद मुहम्मद शाह ने संधि कर ली। नादिरशाह दिल्ली आया। किसी परामर्श के बीच नादिरशाह ने पीने का पानी माँगा इस पर मुहम्मदशाह ने शाही अदा के साथ नगाड़ा बजवाया, दस-बारह नौकर एक कटोरे में जल लेकर कोई उसे पकड़े, कोई मखमली कपड़े से ढके, कोई हवा करते हुए वहाँ पहुँचे। नादिरशाह ने घबराकर पूछा—यह क्या नाटक है ? मुहम्मद शाह ने कहा—हुजूरे आला ! आपके स्वागत में जल लाया जा रहा है। नादिरशाह ने कहा—इस तरह पानी पीते तो ईरान से भारत नहीं आ पाते। कहकर उसने अपने भिस्ती को बुलाया और लोहे के टोप में भरकर भर पेट पानी पिया।

कोई समय था जब धन को सुरक्षित रखने के कोई उपयुक्त माध्यम नहीं थे। बैंक उस जमाने में थे नहीं और न सहकारिता, शेयर, ब्याज, उद्योग जैसी प्रणालियाँ विकसित हुई थीं जो धन की न केवल रखवाली करें वरन् उसे बढ़ाती भी रहें। उस जमाने में लोग अपनी बचत

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

के पैसे को सोने-चाँदी जैसी कीमती धातुओं के रूप में बदल लेते थे और कभी-कभी तो उन्हें जमीन में गाड़ कर गुप्त कर देते तथा कभी-कभी जेवर बनवाकर उसे शरीर पर लादे रहते थे। चोर-उठाईगीरों से बचने के लिए किन्हीं परिस्थितियों में गाड़ना ठीक पड़ता था किन्हीं में लादना। जब दस्युओं का आतंक अधिक था और राज विप्लव होते रहते थे तब लूटमार से बचाव हेतु जमीन में दबाई हुई संपत्ति सुरक्षित समझी जाती थी, पर धीरे-धीरे जब आतंक का जमाना कम हुआ तो जेवर वाली बात उपयुक्त जँचने लगी क्योंकि इससे संपन्नता प्रदर्शित कर गौरव पाने का अवसर मिलता था। उस पिछड़े जमाने में अपनी जमा पूँजी का विज्ञापन करने के लिए यह अच्छा ढंग था कि सोने-चाँदी के आभूषण पहने जाएँ। उनसे कुछ तो खूबसूरती समझी जाती थी और कुछ अमीरी का रौब-दाब जँचाने की बात भी हो। इस दृष्टि से औरतें ही नहीं मर्द भी उन दिनों हाथ-पैर में ही जेवर नहीं पहनते थे, वरन् नाक-कान आदि कोमल अंगों को छेदकर उनमें सोने की बालियाँ तथा दूसरी चीजें पहिनते थे। एक वह भी जमाना था और उस जमाने की यह अपने ढंग की सूझ-बूझ या आवश्यकता भी थी।

अब समय में जमीन-आसमान जैसा अंतर आ गया है। पुरानी परिस्थितियों में फर्क पड़ गया है। अब पैसे को जेवर के रूप में बदलने की कोई उपयोगिता नहीं रह गई है। शेयर तथा बचत धन को जमा कर ब्याज कमाने के अनेक रास्ते निकल आए हैं जिनसे कुछ ही समय के अंदर पैसा ड्यौढ़ा-दूना हो जाता है। चोर उठाईगीरों का कोई भय नहीं। पुराने जमाने में जेवर सीधे-सादे ढंग से गढ़ दिए जाते थे जिससे सोना-चाँदी असली रूप में ज्यों का त्यों बना रहता था और जरूरत के समय उसे लगभग उतने ही मूल्य में बेचा जा सकता था। अब फैशन की कुछ ऐसी बात आ गयी है कि जेवरों के प्रकार, डिजायन और नमूनों ने कमाल ही कर दिखाया। टाँका, बट्टा मिलावट, मीना, नगीना आदि के जँजाल इतने अधिक हैं और उनकी गढ़ाई-बनाई इतनी मँहगी है कि बनाने के दूसरे दिन उन्हें गलाना, बदलना या बेचना पड़े तो मुश्किल से आधी कीमत खड़ी होगी। नाजुक किस्म के बने हुए यह हलके-फुलके जेवर घिसते, टूटते भी बुरी तरह हैं। इनकी मरम्मत और उलट-पुलट में लगती रहने वाली लागत का ब्यौरा तैयार किया जाए तो मालूम पड़ेगा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कि थोड़े ही समय में बनवाने वाले की सारी पूँजी स्वर्णकारों की हथफेरी में समाप्त हो जाती है।

श्रीरामानुज शास्त्री मैसूर महाराज के दीवान होकर भी अत्यंत सादगी से रहते। अपनी आय वे पिछड़े लोगों की शिक्षा आदि में लगा देते। एक दिन महाराज के घर की स्त्रियाँ उनके घर आईं। श्री शास्त्री जी की धर्मपत्नी को सादी वेशभूषा में देखकर उन्हें बड़ा दु:ख हुआ। वे उन्हें अपने साथ ले गईं और अपने घर से कीमती आभूषण पहनाकर पालकी में बैठाकर भेजा। श्री शास्त्री जी ने देखा तो घर के दरवाजे बंद कर लिए। बहुत आग्रह करने पर भी उन्होंने दरवाजा नहीं खोला और बोले—विचारशील होकर भी हम जेवर-कपड़े को महत्त्व देंगे, तो सामान्य प्रजा का क्या होगा ? धर्मपत्नी वापस जाकर गहने लौटा आई, तभी शास्त्री जी ने दरवाजा खोला।

जो पैसा पाँच-छ: वर्ष में जमा करने पर दूना हो सकता था, वह जेवर बनवाने पर जड़ मूल से गुम गया। आर्थिक दृष्टि से, वैयक्तिक रूप से बड़ी हानि है। राष्ट्रीय दृष्टि से तो जेवर बनवाने और पहनने की आदत को एक प्रकार से अभिशाप ही कह सकते हैं। बचत बैंक में जमा पूँजी अनेक उद्योग-धंधों के सृजन और संचालन का आधार बनाकर राष्ट्रीय संपत्ति के उत्पादन और अनेक लोगों को आजीविका देने में योगदान कर सकती थी इसके स्थान पर उँगली पर गिनने लायक चंद आभूषण निर्माताओं को एक अनुपयोगी धंधा देने भर में सीमित रह गई। सोना और चाँदी अब राष्ट्रीय साख के रूप में अंतर्राष्ट्रीय आधार का व्यवसाय बनी हुई है। दूसरे देशों से जो सामान खरीदना पड़ता है उसकी कीमत सोने-चाँदी के रूप में चुकाने का प्रचलन है। किसी देश के पास यह धातुएँ कम हों तो वह अपने यहाँ छपे नोटों के आधार पर अन्य देशों से कुछ भी न मँगा सकेगा। इसलिए अब सरकारों को अपने देश का सोना-चाँदी अंतर्राष्ट्रीय साख के रूप में जमा रखना होता है। यदि यह दुर्लभ धातुएँ लोगों के शरीर पर जेवरों के रूप में लदी रहें तो निश्चित रूप से सरकार के पास जमा रखने व साख बनाने और आवश्यक आयात करने के साधन स्वल्प रह जाएँगे। इससे राष्ट्रीय व्यवसाय एवं उत्पादन में कठिनाई ही उत्पन्न होगी। जेवर पहनने की प्रथा राष्ट्र की अर्थव्यवस्था पर प्रतिकूल प्रभाव ही डालेगी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रामलाल और श्यामलाल का बँटवारा हुआ। रामलाल स्त्री के कहने में आ गया और सारी पूँजी जेवरों में फँसा दी। श्यामलाल भी वैसा ही करना चाहता था, पर स्त्री ने समझाया मुझे जेवर बनवाकर बच्चों का भविष्य नष्ट न करो, इन पैसों से कोई उद्योग करो। श्यामलाल ने दुकान खोल ली, उसके लड़के भी पढ़ गए, मकान भी बन गया, उद्योग भी चलता रहा, जबकि रामलाल अपनी स्त्री के जेवर ही लिए बैठा था।

स्वास्थ्य की दृष्टि से जेवर केवल हानिकारक ही सिद्ध होते हैं। वे शरीर के जिस भी अंग पर धारण किए जाएँगे उसकी स्वच्छता में गड़बड़ी उत्पन्न करेंगे। वहाँ के रोमकूप रुकेंगे, पसीना ठीक तरह न निकलेगा, चमड़ी कड़ी पड़ेगी और बीमारियों की जड़ जमने का आधार बनेगा। नाक-कान जैसे कोमल मर्म स्थलों को छेदकर उनमें जेवर ठूँसना तो प्रकृति प्रदत्त इन अंगों की शोभा-सुषमा को नष्ट कर डालना ही है। नाक में पहने जाने वाले जेवर मैल जमा करते हैं। नाक से निकलने वाला पानी उनके भीतर जमने और सूखने लगता है जिसकी दुर्गंध निरंतर साँस के साथ मस्तिष्क में जाती रहती है और दिमाग को दुर्बल एवं बीमार बनाने की भूमिका प्रस्तुत करती है। नाक में बालियाँ, लौंग आदि पहनने वाली स्त्रियाँ अक्सर सिर दर्द, जुकाम आदि की शिकायतों से ग्रस्त पाई जाती हैं। कान छेद-छेदकर उनमें ऊट-पटाँग लटकन टाँगना आदिम काल की जंगली आदतों का स्मरण दिलाता है। जानवरों के नाक-कान आदि छेदकर उसमें रस्सी डालकर काबू में रखने जैसा करतब यदि मनुष्यों के साथ दिखाया जाए तो इसे असभ्यता ही कहा जाएगा। देह पर गुदने गुदाना, नाक-कान में छेदकर जेवर लटकाना किसी जमाने में सौंदर्य साधन माना जाता रहा होगा, पर इस बीसवीं शताब्दी में कोई सभ्य व्यक्ति इस कुरीतिपूर्ण भौंड़ेपन का समर्थन नहीं कर सकता है। यदि किसी के पास सौंदर्य देखने को आँखें हों तो वह इस भौंड़ेपन को असभ्य कुरूपता की ही पंक्ति में रखेगा।

स्व. राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद राँची प्रवास पर थे। पैर में जूते की कील गढ़ रही थी, अतएव उन्होंने अपने सेक्रेटरी से गौ-रक्षक जूता मँगाया। सचिव उन्नीस रूपये का जूता लेकर आया, तो राजेन्द्र बाबू चिंता में पड़ गए और बोले—दस रूपए के जूते से काम चल सकता है, तो फिर इतना मँहगा जूता क्यों लाए। सचिव उसे लौटाने चल पड़े, तो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उन्होंने कहा—अब वहाँ जाने में मोटर का पेट्रोल और खर्च करोगे, अब ऐसा करो कि जब गाड़ी वहाँ से होकर निकले तभी बदल लेना। राष्ट्रपति की इस किफायत शारी पर उपस्थित सभी लोग बहुत प्रभावित हुए।

अमीरी का प्रदर्शन वो भी जेवरों के रूप में अब शालीनता का चिन्ह नहीं रह गया है। आर्थिक विषमता के विरुद्ध रोष बढ़ता जा रहा है और अमीरों को अप्रतिष्ठित और अप्रमाणिक अवांछनीय वर्ग का घोषित किया जा रहा है। ऐसी लहर में अमीरी लोग भी अपनी अमीरी छिपाने की बात सोचते हैं जिससे लोक निंदा और रोष से बच सकें। ऐसे जमाने में जेवरों के रूप में अमीरी का भौंड़ा विज्ञापन करना अपने को चोर बजारियों, जमाखोरों, पूँजीपतियों, शोषकों को मिलने वाली घृणा और गाली आमंत्रित करना है। गृह कलह के आधार जेवर हैं। कम-बढ़ जेवर मिलने के कारण सद्गृहस्थों में भी ईर्ष्या द्वेष की भावना भड़कती है। शौकीन स्त्रियाँ अपने पतियों का आवश्यक काम रोककर भी जेवर बनवाने का आग्रह करती हैं फलस्वरूप मनोमालिन्य बढ़ते और अर्थ संतुलन बिगड़ते हैं। चोर, डाकुओं की घात लगती है सो अलग। उचक्के, उठाईगीरे जेवर के लोभ में बालकों महिलाओं को बहकाकर उन्हें अकेला-दुकेला पाकर जान के ग्राहक बनते रोज ही देखे-सुने जाते हैं। इन परिस्थितियों में नासमझ लोग ही जेवर की उपयोगिता और आवश्यकता का समर्थन कर सकते हैं।

विवाह शादियों में दहेज की माँग को प्रोत्साहन देने का एक बहुत बड़ा कारण लड़की वालों का प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में कीमती जेवर चढ़ाने की माँग करना भी है, अच्छा हो हम जेवरों के जंजाल से छूटें। इस भौंड़े फैशन को छोड़ें और उन दुष्परिणामों से बचें जो जेवरों के कारण नैतिक, सामाजिक, शारीरिक एवं आर्थिक क्षेत्र में आए दिन विविध-विधि बुराइयाँ उत्पन्न करते रहते हैं।

प्रश्न

१. धन का उपार्जन किन-किन बातों पर निर्भर करता है ?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

२. क्या आर्थिक क्षेत्र के अनुसार वह व्यक्ति बुद्धिमान कहला सकता है, जो अधिक धन उपार्जन करें ? नहीं तो कौन व्यक्ति बुद्धिमान कहला सकता है ?
३. किस प्रकार हम उस व्यक्ति को जो काफी अधिक धन उपार्जन करता है तथा काफी अधिक खर्च करता है, मूर्ख कह सकते हैं ?
४. कैसे हम किसी व्यक्ति की बुद्धिमत्ता का स्तर परख सकते हैं ?
५. वे कौन से आवश्यक कार्य हैं जिन पर हमें खर्च करना अनिवार्य ही होता है ?
६. परिवार के प्रति हमारे क्या आर्थिक कर्त्तव्य हैं ?
८. धन का व्यय करने से पहले हमें क्या सोचना चाहिए ?
८. आज के युग में अपव्यय के साधन क्या हैं ?
६. पारिवारिक उत्तरदायित्व के अतिरिक्त और हमारे ऐसे कौन से कार्य हैं, जिन पर हमें पैसे व्यय करने चाहिए ?
१०. पिछले समय में जेवरों के बनवाने के कारणों पर प्रकाश डालिए ?
११. अब पैसे को जेवरों के रूप में बदलना हानिकारक क्यों है ?
१२. वर्तमान समय में भी यदि जेवरों का प्रचलन रहा तो हमारे देश को किस तरह हानि उठानी पड़ेगी ?
१३. स्वास्थ्य की दृष्टि से भी जेवरों का पहनना हानिकारक है, सिद्ध कीजिए ?
१४. जेवरों के बनवाने के कारण हमारे परिवारों को क्या हानियाँ होती हैं ?
१५. क्या ऐसे कोई कारण हैं कि जिनके आधार पर हमें यह जेवरों का भौंडा फैशन छोड़ना चाहिए ?
१६. जेवरों से खुद को क्या हानि होती है ?
१७. जेवर प्रथा बंद होने से विवाहों की अवस्था में क्या सुधार हो सकता है ?

● ●

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

माँस का त्याग करें

विश्व विख्यात सुप्रसिद्ध दार्शनिक जार्ज वर्नाडशा को एक बार डाक्टरों ने सलाह दी कि—"आप माँसाहार न करेंगे तो जल्दी ही मर जाएँगे।" शा ने उत्तर दिया—"यदि मैं दूसरों का प्राण-घात किये बिना जिंदा नहीं रह सकता तो मेरा मर जाना ही उत्तम है।" वे कहा करते थे—"अपने कुटुंबियों को मारकर खा जाना और पशु-पक्षियों का माँस खाना समान स्तर के अपराध हैं।"

वस्तुतः मनुष्य के छोटे भाई-बहिनों की तरह ही अन्य पशु-पक्षी हैं। सब में एक ही आत्मा है। सभी ईश्वर के पुत्र हैं। शांतिपूर्वक जीने और दूसरों को जीने देने का अधिकार भले ही निम्न स्तर के जीव-जंतु न मानें यह बात अलग है, पर मनुष्य को इतना जानना और मानना ही चाहिए। मानव प्राणी की सबसे बड़ी विशेषता उसकी दया, करुणा, सहृदयता और स्नेह भरी सद्भावना है। इसी कारण वह ईश्वर का ज्येष्ठ पुत्र और सृष्टि का सबसे उत्तम प्राणी बना है। मनुष्य की महत्ता उसकी बुद्धिमत्ता पर नहीं सहृदयता पर निर्भर है। यदि वह उसे भी खो दे तो समझना चाहिए कि उसने मनुष्यता के सर्वप्रथम और सर्व प्रधान आदर्श को ही तिलांजलि दे दी।

संत राघवदास एक घर में गए तो देखा एक महिला एक स्तन से अपने बच्चे को दूध पिला रही है, दूसरे से एक बकरी के बच्चे को। पूछने पर पता चला कि बकरी बाढ़ के कारण बहकर मर गई है और बच्चा ऊपर से दिया हुआ दूध पीता ही नहीं। महिला की करुणा से राघवदास बहुत प्रभावित हुए। उस दिन से उन्होंने घूम-घूम कर जीव दया का प्रचार करना शुरू कर दिया।

करुणा की प्रवृत्ति अविच्छिन्न है। उसे मनुष्य और पशुओं के बीच विभाजित नहीं किया जा सकता। पशु-पक्षियों के प्रति बरती जाने वाली निर्दयता मनुष्यों के साथ किए जाने वाले व्यवहार को भी प्रभावित करेगी। जो मनुष्यों से प्रेम और सद्व्यवहार का मर्म समझता है वह पशु-पक्षियों के प्रति निर्दय नहीं हो सकता। अपना प्राण सभी को समान

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रूप से प्रिय है। पीड़ा सबको समान होती है। अपनी चमड़ी में सुई चुभोकर अथवा कोई अंग काटकर हम अनुभव कर सकते हैं कि शरीर घात कितना कष्टकारक है। अपने बच्चों और प्रियजनों को अपनी आँखों के आगे काटे जाने और उनके करुण चीत्कार करने की कल्पना करके हम सोच सकते हैं कि माँस आखिर किस तरह प्राप्त होता है। स्वास्थ्य और स्वाद के लिए हम अपने बच्चें को मारकर खा सकें तो ही हमें दूसरे जीवों की हत्या के लिए तैयार होना चाहिए। बूचरखाने में छुरी के नीचे तड़पते हुए पशु और कत्ल किए जाते मनुष्य को देखकर कोई यह अंतर नहीं कर सकता कि पीड़ा के स्तर में दोनों के बीच कोई अंतर है। पशु-पक्षी भी सिर कटते और पेट फटते समय उतना ही चीत्कार करते हैं जितना मनुष्य करता है। दोनों के हा-हाकार, तड़फन और व्यथा में कोई अंतर नहीं। मनुष्यों को मारकर खाने वाला और अन्य जीवों को मारकर खाने वाला हमारे कानूनों की दृष्टि से न्यूनाधिक अपराधी हो सकता है, पर ईश्वर की दृष्टि में दोनों की पैशाचिकता एक स्तर की है।

किसी बड़े स्वार्थ के लिए कोई बड़ी दुष्टता कर बैठे तो बात समझ में आती है, पर अकारण, निष्प्रयोजन, निरर्थक ही नहीं, उल्टी हानि, बीमारी, विकृति एवं जोखिम की मूर्खतापूर्ण उपलब्धियों के लिए माँस खाया जाता हो तो दोनों ही बातें पूर्णतया अज्ञान मूलक हैं। माँस की गंध बनावट, स्वाद सभी कुछ ऐसे हैं जो अपने असली रूप में घृणा उत्पन्न करते हैं और उसके समीप आने पर एक वीभत्सता अनुभव होती है और मतली आती है। उबालकर चिकनाई में भूनकर, मसालों की भरमार में तब कहीं वह उस लायक होता है कि उसकी असलियत छिपा सकें और मुख उसे पेट में जाने के लिए इजाजत दे सके। माँस में हिंसक जानवरों के लिए कोई स्वादिष्टता हो सकती है, पर मनुष्य की इंद्रियों के लिए तो उसमें रत्तीभर भी आकर्षण नहीं है। जो आकर्षण है वह मसाले आदि का है।

किस प्राणी के लिए कौन पदार्थ स्वाथ्यवर्धक है कौन-सा हानिकारक। इसकी मोटी परीक्षा उसके खाद्य-यंत्रों की बनावट है ? माँसाहारी जीवों के दाँतों के कीले बड़े नुकीले होते हैं ताकि वे जीवित प्राणी की चीर-फाड़ कर सकें। उसके नाखून इतने पैने और मजबूत होते हैं कि किसी के शरीर में गड़ाकर उसे जकड़ सकें। वे जीभ से चाटकर पानी पीते हैं और रतिक्रिया के समय जुड़ जाते हैं। यह एक भी स्थिति

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मनुष्य शरीर में नहीं है। बंदर विशुद्ध शाकाहारी है। मनुष्य की भी बनावट शाकाहारी प्राणी है। अपनी मूल प्रकृति के विपरीत आहार सदा हानिकारक होता है क्योंकि पाचन यंत्र में उत्पन्न होने वाले रस प्रकृति के विरुद्ध वस्तुओं को हजम करने को उपयुक्त ही नहीं होते। शाकाहारी गाय, भैंस, बकरी, बंदर आदि को माँस खिलाया जाए तो वह पहले तो उसके लिए तैयार ही न होंगे यदि किसी तरह खिला भी दिया जाए तो ठीक तरह हजम न होने के कारण बीमार पड़ जाएँगे। यही बात सिंह, व्याघ्र आदि के बारे में है उन्हें अन्न, शाक, घास पर रखा भी जाए तो पहले वह हजम ही न होगा। बलात् खिलाया जाए तो पाचन तंत्र उसे स्वीकार न करेगा और बीमारी आ खड़ी होगी। मनुष्य की प्रकृति से माँस सर्वथा विपरीत है। वह कच्चा माँस पचा नहीं सकता, कच्चा रक्त पीले तो आँतें सड़ जाएँ। कितनी ही उलट-पुलट करके उसे खाने योग्य बनाया जाए। प्रकृति के मूल आधार को नहीं बदला जा सकता। माँस हमारे लिए सदा हानिकारक परिणाम उत्पन्न करेगा। जो उसे मानवीय स्वास्थ्य के लिए उपयुक्त बताते हैं वे केवल गहरे अज्ञान में गोते लगा रहे हैं।

एक पौंड माँस में यूरिक एसिड विष-कॉड मछली में ४ ग्रेन, सुअर में ६ ग्रेन, भेड़ व बकरी में ६.५ ग्रेन, बछड़े में ८ ग्रेन, चूजे में ६ ग्रेन, गाय के विभिन्न अंगों के माँस में ६ से १६ ग्रेन तक तथा माँस के शोरबे में ५० ग्रेन तक। यह विष की मात्रा दिल की जलन, टी. बी., जिगर की खराबी, साँस रोग, गठिया, हिस्टीरिया, अधिक नींद, अजीर्ण, जुकाम आदि रोग पैदा करता है।

—डॉ. अलेक्जर हेग (लंदन) की रिपोर्ट

जिन्होंने मानव शरीर शास्त्र का गहरा अन्वेषण किया है उनका निष्कर्ष स्वास्थ्य की दृष्टि से माँसाहार को सर्वथा अनुपयुक्त सिद्ध करता है। हेंग का कथन है—"शाकाहारी ही शक्ति उत्पन्न करता है। माँस से केवल उत्तेजना बढ़ती है।" डॉक्टर क्लेमड ने लिखा है—"बच्चों को माँस की आदत डालना उन्हें आलसी, दुर्बल और झगड़ालू बनाने की शुरूआत है। शोधकर्त्ता मेनरी पडरी ने लिखा है—"शाकाहारियों की तुलना में माँसाहारी अधिक बीमार पड़ते और जल्दी मरते हैं।" डाक्टर पारकर ने कहा है—"सिरदर्द, अपच, गठिया, थकान, रक्तपात, मधुमेह आदि का कारण यूरोप, अमरीका में बढ़ा हुआ माँसाहार ही है।" डॉक्टर रसेल ने कहा है—"यदि माँसाहार बंद हो जाए तो दुनियाँ में आधी बीमारियाँ स्वतः

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समाप्त हो जाएँगी।" डाक्टर एन. चर्चिन ने सिद्ध किया है कि—माँस से प्रोटीन का प्रमुख लाभ सोचा जाता है, पर वह प्रोटीन इतना घटिया होता है जिससे हानि की ही संभावना है।

जापान के प्रसिद्ध वैज्ञानिक प्रो. वेज्ज अनेक निष्कर्ष के बाद इस नतीजे पर जा पहुँचे हैं कि "मनुष्य की प्रकृति में क्रोध, उद्दंडता, आवेश, अविवेक, कामुकता और अपराधी प्रवृत्ति उत्पन्न करने तथा भड़काने में माँसाहार का बहुत बड़ा हाथ है।" वस्तुतः मनुष्य जैसा खाता है उसका मन भी वैसा ही बन जाता है। पशुओं का माँस खाकर अपने शरीर का भाग बनाने वालों का मन भी पशु-प्रवृत्तियों से भर जाता है और वे कोई उच्च आदर्श उपस्थित कर सकने में असमर्थ हो जाते हैं। उनकी चेतना में पशुता का बाहुल्य होते रहने से उनकी विचार पद्धति एवं कार्य शैली में लगभग वैसे ही लक्षण दिखाई देने लगते हैं।

भारत यात्रा करने वाले सुप्रसिद्ध फाह्यान, मार्कोपोलो, जे. टी. ह्वीलर, हारफ्लायर सरींखे विदेशी यात्रियों ने अपनी भारत यात्राओं के विशद वर्णनों में यही लिखा है—"भारत में चांडालों के अतिरिक्त और कोई सभ्य व्यक्ति माँस नहीं खाता था।" धार्मिक दृष्टि से तो इसे सदा निंदनीय पाप कर्म बताया जाता रहा है। बौद्ध और जैन धर्म तो प्रधानतया अहिंसा पर ही आधारित हैं। वैष्णव धर्म भी इस संबंध में इतना ही सतर्क है। वेद, पुराण, स्मृति, सूत्र आदि हिंदू धर्म-ग्रंथों में पग-पग पर माँसाहार की निंदा और निषेध भरा पड़ा है। बाईबिल में कहा गया है—"ऐ, देखने वाले ! देखता क्यों है, इन काटे जाने वाले जानवरों के विरोध में अपनी जुबान खोल।" ईसा कहते थे—"किसी को मत मार। प्राणियों की हत्या न कर और माँस न खा।" कुरान में लिखा है—"हरा पेड़ काटने वाले, मनुष्य बेचने वाले, जानवरों को मारने वाले और पर स्त्री गामी को खुदा माफ नहीं करता। जो दूसरों पर रहम करेगा वही खुदा की रहमत पाएगा।"

वसई कलाँ आगरे के भिश्ती सुन्नूखाँ ने एक दिन एक बकरे को कटते देखा तो उनकी आत्मा काँप उठी और लगा कि माँस खाना दुनियाँ का सबसे बड़ा पाप है। उस दिन से सुन्नूखाँ ने चाहे हिंदू हो या मुसलमान सभी को माँस खाना छुड़ाना आरंभ कर दिया। जिन घरों में वह पानी भरते थे कोई भी माँस नहीं खा सकता था। दमे की बीमारी से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

५८ वर्ष की आयु में मरे, तब तक सुन्नूखाँ ने सारे गाँव को निरामिश भोजी बना दिया।

हमें बढ़ते हुए माँसाहार की प्रवृत्ति में होने वाली हानियों पर विचार करना चाहिए और अपनी मूल प्रकृति एवं प्रवृत्ति के अनुकूल आचरण करना चाहिए ताकि शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य नष्ट होने से बच सके। निष्ठुरता और क्रूरता का दूसरा नाम ही माँसाहार है। अच्छा हो हम अपनी प्रकृति में इन तत्वों को निकालें अन्यथा हमारा व्यवहार मनुष्यों के प्रति भी इन्हीं दुर्गुणों से भरा होगा और संसार में नरक के दृश्य दीखेंगे।

प्रश्न

१. आमिष आहार की हानियों पर प्रकाश डालिए ?
२. जार्ज बर्नार्डशा के शब्दों में माँस खाना अपराध क्यों है ?
३. मानव प्राणी की सबसे बड़ी विशेषता क्या है ?
४. सिद्ध कीजिए की माँसाहार मानव की प्रकृति के विरुद्ध है ?
५. माँसाहार के विरुद्ध विदेशी डाक्टरों के कथन देते हुए सिद्ध कीजिए कि असाध्य रोगों का कारण माँसाहार है ?
६. क्या यह सत्य है कि "जैसा खाए अन्न, वैसा बने मन।" सप्रमाण सिद्ध कीजिए।
७. विभिन्न धर्मोपदेशकों के मतों को उद्धृत करते हुए सिद्ध कीजिए कि माँसाहार पाप है ?
८. "न केवल शरीर अपितु मन की पवित्रता के लिए भी माँसाहार नहीं करना चाहिए।" इस कथन पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।
९. "माँसाहार निष्ठुरता एवं क्रूरता का प्रतीक है।" विवेचन कीजिए।
१०. शाकाहारी दीर्घजीवी होते हैं—सिद्ध कीजिए ?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तंबाकू का दुर्व्यसन छोड़े

बुद्धिमान समझा जाने वाला मनुष्य जब न करने योग्य करता है और न खाने योग्य खाने लगता है तब सहज ही उसकी बुद्धिमत्ता पर संदेह होता है। तंबाकू एक विषैला पदार्थ है जो मनुष्य की प्रकृति और शारीरिक स्थिति में समाविष्ट कराए जाने पर सुखद परिणाम कभी भी उत्पन्न नहीं कर सकता। उससे केवल हानि ही हानि है—लाभ तनिक भी नहीं। फिर न जाने क्यों उसके सेवन की प्रथा बढ़ती ही जा रही है। लोग उसे खाने, पीने से लेकर सूँघने, दाँतों से रगड़ने आदि कामों में लाकर अपने धन, समय और स्वास्थ्य की बर्बादी ही करते चले जा रहे हैं।

स्पष्टतः तंबाकू एक विषैला पौधा है। उसमें निकोटीन, कोलतार, कार्बन मोनोक्साइड जैसे घातक विष तत्त्वों की काफी मात्रा रहती है। इन विषों की थोड़ी मात्रा भी शरीर में इकट्ठी हो जाने पर मन्दाग्नि, रक्तचाप, खाँसी, दमा, अनिद्रा, अंधता, मधुमेह सरीखे रोग पैदा करने का कारण बन जाती है। कच्ची उम्र में बच्चे धूम्रपान करने लगें तो शारीरिक बढ़ोत्तरी रुक जाती है, नाटे और दुबले रह जाते हैं। स्वप्नदोष होने लगते हैं और मुँह से बदबू आने लगती है। रक्त में तंबाकू का विषैलापन घुल जाने से फुंसी, दाद, खाज, खुजली, छाजन, चमड़ी फटना, विबाई, गठिया और ब्लडप्रेशर, भयंकर फोड़े जैसे अन्य रोगों की संभावना बनी रहती है। कैंसर जैसे अति भयंकर और असाध्य रोग का कारण तो प्रधानतया तंबाकू ही बताया गया है।

संसार के समस्त देशों की शारीरिक शोध ने तंबाकू को मनुष्य के लिए हर दृष्टि से अनुपयुक्त बताया है। अमेरिका की सरकार ने कानून बनाकर हर सिगरेट और पैकट पर "स्वास्थ्य के लिए खतरनाक" लिखने तक का प्रतिबंध लगा दिया है। वहाँ यह घोषणा प्रत्येक सिगरेट पर छपी रहती है। मनोवैज्ञानिकों ने भी इसके प्रभाव ऐसे ही पाए हैं। तंबाकू से क्रोध की मात्रा बढ़ती है। चिड़चिड़ापन, झुँझलाहट, आवेश में उत्तेजित हो जाना तंबाकू के प्रसिद्ध परिणाम हैं। काम-वासना भड़काने में वह अग्रणी है। स्मरण शक्ति का घटना और आलस्य-प्रमाद का बढ़ना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तंबाकू की अपनी अलामतें हैं। जो इसे पिएगा अपने में इन दोषों की बढ़ोत्तरी देखेगा।

नशा एक क्षणिक उत्तेजना पैदा करता है। जैसे कि हंटर मारने पर घोड़ा तिलमिला कर दौड़ने लगता है वैसे ही नशेबाजी भी संचित शक्ति-कोष को भड़काती है और पीते समय लगता है कुछ फुर्ती सी आई, पर अंततः इसका परिणाम घातक ही होता है। बार-बार हंटर मारकर सामर्थ्य से अधिक दौड़ाने पर घोड़ा जल्दी थक और मर जाता है यही बात शरीर पर लागू होती है तंबाकू जैसे नशों से बार-बार भड़काए जाने पर शरीर का संचित शक्ति कोष बुरी तरह बहुत जल्दी समाप्त हो जाता है और जवानी में बुढ़ापा आ घेरता है और खाँसी-दमा तरह-तरह की बीमारियों से ग्रसित होकर समय से पहले ही मरने की स्थिति बन जाती है। दुःख इसी बात का है कि इतनी हानि उठाकर भी लोग पैसा खर्च कर दुर्व्यसन को खरीदते हैं और खुशी-खुशी एक मंद विष पीकर धीरे-धीरे आत्महत्या करने के खेदजनक मार्ग पर चलते रहते हैं।

दो शराबी ताश खेल रहे थे। एक मक्खी आकर एक की नाक पर बैठ गई। दूसरे शराबी ने चाकू से उसकी नाक काट ली। पहला शराबी बोला—अरे ! यह क्या कर दिया ? दूसरा बोला—मक्खी का अड्डा साफ कर दिया। तब तक मक्खी दूसरे के कान पर बैठ गई। अब पहले ने अपनी छुरी निकाल कर दूसरे का कान काट लिया। इस पर उसने पूछा—क्या किया ? पहले शराबी ने कहा—वह दूसरा अड्डा जमा रही थी।

धीरे-धीरे कितना पैसा इस दुर्व्यसन में खर्च हो जाता है इसका हिसाब लगाते हैं तो आश्चर्य होता है कि अपने गरीब देश के निवासी क्यों इतनी बर्बादी करते हैं। इतनी बड़ी धनराशि की ब्याज से कोई व्यक्ति बुढ़ापा काट सकता है अथवा किसी परमार्थ कार्य में लगा सकता है, पर होता उल्टा है। इतना धन भी खर्च होता है और शरीर की बर्बादी और मन की दुर्गति की भयावह हानियाँ भी उठानी पड़ती हैं।

मुँह से हर घड़ी दुर्गंध आते रहने से पास बैठने वाले को घृणा उत्पन्न होती है और इस विषाक्त धुएँ से वायु-मंडल दूषित होकर समीपवर्ती लोगों को ही नहीं दूरवर्ती लोगों को भी क्षति पहुँचती है। इस प्रकार तंबाकू का दुर्व्यसन अपने लिए ही नहीं दूसरों को भी क्षति पहुँचाने का पाप अनजाने ही बटोरता रहता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

राष्ट्रीय क्षति इससे बहुत है। २ करोड़ रुपये प्रतिदिन अर्थात् ७२० करोड़ वार्षिक की तंबाकू हम भारत वासी पीते हैं। इतना धन देश की शिक्षा समस्या सुलझाने के लिए पर्याप्त है। जितने एकड़ जमीन में तंबाकू बोई जाती है उतने में अन्न उगाया जाए तो विदेश से एक छटाँक भी अन्न न मँगाना पड़े। एक छोटे गाँव में ५०० व्यक्ति रहते हो और वे ३० पैसे भी तंबाकू में खर्च करते हों तो प्रतिदिन १५०) अर्थात् महीने में ४५००) अर्थात् साल में ४५०००) की तंबाकू पीते हैं। यदि वह गाँव प्रतिज्ञा करके इस दुर्व्यसन से छुटकारा पाले और यह पैसा अपने गाँव के विकास में देने लगे तो हर साल ४५०००) खर्च करके एक साल में हाईस्कूल दूसरे वर्ष सामूहिक गृह-उद्योग, तीसरे वर्ष कन्या-विद्यालय, चौथे वर्ष अस्पताल, पाँचवें वर्ष पक्की सड़कें तथा पाखाने-पेशाबघर बनाकर अपने गाँव को सुविकसित कर सकते हैं। बिना सरकारी या किसी दूसरी मदद के हर ५०० व्यक्तियों वाला छोटा गाँव भी इतना सुविकसित हो सकता है जिस पर शहर निछाबर किए जा सकें, पर किया क्या जाए, हमारी दिशाएँ तो उल्टी हो रही हैं ? निर्माण की अपेक्षा हम विनाश की बात सोचते हैं। ऐसे ही विनाश कार्यों में तंबाकू पीने का दुर्व्यसन भी है।

तंबाकू का दुष्प्रभाव शरीर और धन तक ही सीमित नहीं है। उसके परिणाम सामाजिक भी हैं। जितने मजदूर इस उत्पादन में लगे हैं, वे यदि घर निर्माण, वस्त्र निर्माण, गौपालन, मधु उत्पादन जैसे उपयोगी कार्यों में लगा दिए जाएँ तो बढ़े हुए किरायों पर गंदे मकान मिलने की कठिनाई हल हो जाए। कपड़े की तंगी और मँहगाई हल हो जाए। दूध-घी और शहद की नालियाँ बहने लगें, पर लाखों श्रमिकों की इतनी बड़ी जन-शक्ति का पसीना जब विनाश के उत्पादन में लगा हो और कितने ही व्यापारी इस विष विक्रय में अपनी पूँजी, चतुरता और मेहनत जोड़े हों, तो उपयोगी व्यवसायों का क्षेत्र संकुचित होता ही चलेगा। इस संदर्भ में होने वाला प्रचार और विज्ञापन यदि स्वास्थ्य और चरित्र बढ़ाने की दिशा में लगता तो जन प्रवृत्ति को कुमार्गगामी बनाने की अपेक्षा विकास की दिशा में कितनी प्रगति होती ?

अन्य नशों की भाँति तंबाकू में भी तामसिक दुर्बुद्धि और अपराधी दुष्प्रवृत्ति भड़काने का दोष है। नशेबाज व्यक्ति की आध्यात्मिक संवेदनशीलता घटती है और उसे दुष्कर्म करते लज्जा, संकोच नहीं होता। उद्धतकर्म करने और उच्छृंखलता बरतने में उसे झिझक नहीं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लगती। मानवीय प्रवृत्ति में अपराधी तत्वों का समावेश करने में नशेबाजी का भारी हाथ है।

एक सेठ अफीम खाते थे। उन्होंने अपने नौकर को भी यह लत लगा दी। एक बार दोनों शहर चले। रास्ते में एक स्थान पर दोनों ने खाना खाया, अफीम के नशे में याद नहीं रहा कि घोड़ा वहीं छोड़कर चलते बने। शहर पहुँचे नशा कम हुआ एक स्थान पर बैठे तो पता चला कि घोड़ा रास्ते में ही छूट गया। फिर दोनों घोड़े की तलाश में लौटे पर इस बार अपनी पोटली कहीं भूल गये, उसी में उनके रुपए थे, वापस जाकर देखा तो वहाँ घोड़ा न पाया, तब पोटली की याद आयी। दोनों रोने लगे एक ग्रामीण स्त्री बोली—तुम्हारी ही नहीं हर नशेबाज की यह हालत होती है।

इसीलिये सभी धर्मों ने, शास्त्रों ने एक स्वर से नशेबाजी की, तंबाकू पीने की निंदा की है, इसे पाप बताया है। वेदों में इसकी निंदा है। मनुस्मृति में इसे घातक पातक माना है। बौद्ध धर्म में गिनाए चार पापों में एक नशेबाजी भी है। कुरान के पारा सात सूरत मायकारूक एक में कहा गया है—"हे ईमानवालो, नशीली चीजें हराम हैं। इनसे बचते रहो।" बाईबिल का कथन है—"अंत में नशेबाज की भी शैतान की तरह दुर्गति होगी, जो नशा पिएगा खुशहाल न रहेगा।"

हमारी प्रकृति इस तथ्य को जानती है इसलिये तंबाकू को भीतर प्रवेश होने देने में हर संभव प्रतिरोध करती है। धुआँ पीते हैं तो नाक मुँह से बाहर निकालना पड़ता है। खाते हैं तो थूकना पड़ता है। सूँघते हैं तो छींक उसे भगाती है। दाँतों से रगड़ते हैं तो पानी का प्रवाह उसे बहा देता है। फिर भी न जाने क्यों हम प्रकृति विरोधी कार्य करके अपना चतुर्दिक विनाश करने में जुटे हुए हैं।

अच्छा हो हम स्वयं तंबाकू से बचें। पीते हों तो साहस पूर्वक छोड़ें, जो पी रहे हैं उन्हें अनुरोधपूर्वक इसे छोड़ने का आग्रह करें।

स्वामी दयानंद ने एक ठाकुर साहब को शराब न पीने का उपदेश दिया। ठाकुरसाहब बोले—स्वामी जी ! क्या करूँ ? शराब छोड़ती ही नहीं, आप ही कोई उपाय बताएँ। स्वामी जी बोले—कल डेरे पर आना वहीं उपाय बताऊँगा। दूसरे दिन ठाकुर साहब स्वामी जी के पास गए तो देखा कि स्वामी जी एक खंभे से चिपके खड़े हैं। बहुत देर तक वैसे ही खड़े देखकर ठाकुर साहब बोले—स्वामी जी ! यह क्या कर रहे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हैं ? स्वामी जी बोले—क्या करूँ भाई यह खंभा छोड़ता ही नहीं। ठाकुर साहब हँसकर बोले—यह आप क्या कर रहे हैं ? निर्जीव खंभा कहीं पकड़ सकता है ? स्वामी जी बोले—शराब पकड़ सकती है तो खंभा क्यों नहीं पकड़ सकता ? ठाकुर साहब सारी बात समझ गए और शराब पीना छोड़ दिया।

प्रश्न

१. बुद्धिमानों एवं शिक्षकों के व्यसनों में प्रमुख कौन-सा व्यसन है ? इसे मिटाना क्यों आवश्यक है ?
२. तंबाकू में कौन-कौन से विष होते हैं ?
३. तंबाकू के सेवन से कौन-कौन से रोग होते हैं ?
४. तंबाकू स्वास्थ्य के लिए क्या हानि करता है ?
५. तंबाकू खाने वाला अल्प जीवी क्यों होता है ?
६. तंबाकू पीने वाले के आर्थिक व्यय पर प्रकाश डालिए ?
७. तंबाकू के व्यसन से राष्ट्रीय क्षति कितनी होती है ?
८. विनाश के उत्पादन से आप क्या समझते हैं ? इस व्यय को अन्य उद्योगों में कैसे लगाया जा सकता है ?
९. तंबाकू से अपराध वृत्ति किस प्रकार पनपती है ?
१०. "सभी धर्मों ने नशेबाजी की निंदा की है।" सिद्ध कीजिये तंबाकू का सेवन अप्राकृतिक है ?

● ●

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org